TEXT FLY WITHIN THE BOOK ONLY

TIGHT BINGING BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_180611
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 M21A. Accession No. H2059

Author महेन्द्रनाथ.

Title आदर्श और सिक्के.

This book should be returned on or before the date last marked below.

आदमी और सिक्के

राजकमल कथा साहित्य—३

आदमी और सिक्के

महेन्द्रनाथ

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली : बम्बई : नई दिल्ली

कृष्णचन्द्र
और
अली सरदार जाफ़री
को

कापीराइट, १९५२

मूल्य एक रुपया चौदह आने

प्रकाशक—राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई।
मुद्रक—गोपीनाथ सेठ, नवीन प्रेस, दिल्ली।

: १ :

वह बिस्तर पर एक लाश की भाँति पड़ा हुआ था—चुपचाप, ख़ामोश और उदास-सा। सुबह हो चुकी थी और दूर समुद्र धीरे-धीरे साँस ले रहा था। उसने आँखें मूँदे-मूँदे अपने दाहिने हाथ से खिड़की खोली। हवा का एक हल्का-सा झोंका आया और वह फिर अपने बिस्तर पर लेट गया। उसका मस्तिष्क निर्जीव विचारों के बोझ से दब गया और उसे अब ऐसा अनुभव होता था जैसे निर्जीव और भाव-हीन विचारों ने एक क़ब्र का रूप धारण कर लिया हो, जिसके अन्दर उसका मस्तिष्क और उसका शरीर पड़ा हुआ सड़ रहा है, गल रहा है। वह जीवन के तीस साल गुज़ार चुका था—इस आशा और प्रतीक्षा में कि जीवन में बहार आयगी और बसन्त के फूल खिलेंगे। लेकिन जीवन एक खण्डहर बनकर रह गया और उसकी टूटी दीवारों और अधूरी महराबों को पूरा करने कोई न आया। अब वह सोच रहा था और याद कर रहा था कि उसके जीवन में आनन्द और प्रसन्नता का अभाव क्यों है, सुख और ऐश्वर्य उसे क्यों न नसीब हुए, उसका मन अशान्त क्यों रहता है और उसके जीवन में स्थिरता क्यों नहीं आ गई।

जीवन के तीस सालों ने जैसे उसे असमय बूढ़ा बना दिया था, यद्यपि उसके सिर के बाल काले थे, परन्तु उसके चौड़े माथे पर चिन्ताओं ने अपनी रेखाओं का जाल बिछा रखा था, आँखों के नीचे कालिमा जम गई थी और जहाँ नाक और गाल मिलते हैं वहाँ गहरी-गहरी रेखाएं पड़ गई थीं। निरन्तर बेकारी और अतृप्त भावनाओं ने उसे निःशक्त बना दिया था। उसके मस्तिष्क में सदा एक अस्पष्ट उलझन-सी रहती, परन्तु उसमें सहन-शक्ति इतनी थी कि अपने इस मानसिक क्लेश और संघर्ष को वह दूसरों पर प्रकट न होने देता था। जब कोई मित्र उससे पूछता—"क्यों कैसे हो?" तो वह ख़ामोशी से मुस्करा देता।

उसके होठों पर मुस्कराहट देखकर उसके मित्र खुश हो जाते और मन में सोचते कि मित्र की आर्थिक स्थिति आवश्यकता से अधिक अच्छी है। परन्तु यह तो स्वयं उसे ही मालूम था कि उसने अपने होठों पर यह मुस्कराहट कितने परिश्रम और कितनी कठिनाई से पैदा की थी। उसके मित्रों को क्या मालूम कि इस मुस्कराहट में कितनी कड़वाहट थी, और कितना विष छिपा था। वह अपने मन का भेद अपने तक सीमित रखता, मन-ही-मन धारणाएं बनाता, स्वप्नों के महल खड़े करता और भावी जीवन की सुन्दर रूप-रेखाएं बनाता रहता। परन्तु समय बीतता जा रहा था; सुख, शान्ति और आनन्द उसके जीवन से कोसों दूर थे, विषाद और उदासीनता ने उसे घेर लिया था और उसके चारों ओर घोर निराशा का समुद्र लहरें मार रहा था। उसे अपने जीवन और वातावरण से घृणा हो गई थी।

आज वह चुपचाप बिस्तर पर लेटा हुआ था और अतीत की स्मृतियों का तूफ़ान उसके चारों ओर चक्कर लगा रहा था। उसने आँखें खोलीं और कमरे में दृष्टि डाली। कमरा काफ़ी चौड़ा और बड़ा था, उसकी छत भी खूब ऊँची थी। परन्तु दीवारों का रंग मैला हो गया था, जगह-जगह पर जाले लगे हुए थे और पानी टपकने से दीवारों पर मैली धारियाँ पड़ गई थीं। उसके बिस्तर की चादर भी मैली थी और मेज़ पर किताबें अस्त-व्यस्त पड़ी थीं। एक ओर एक पुराना सोफ़ा-सेट पड़ा हुआ था और दूसरी ओर एक सूटकेस। खूँटी पर उसकी गर्म पतलून लटक रही थी, जो निरन्तर पहने जाने के कारण घिस चुकी थी।

उसने दाहिने हाथ से खिड़की का दूसरा पट भी खोल दिया। बाहर नारियल के वृक्ष आकाश की ओर आँखें उठाए खड़े थे। चीकू के वृक्ष फूलों से लदे थे और अपनी ओर से उसको प्रसन्न और हर्षोन्मत्त करने का प्रयास कर रहे थे। धूप बरामदे में उतर आई थी और सामने वाले मैदान में धीरे-धीरे रेंग रही थी। उसने उठने का प्रयत्न किया। अन्यमनस्कता ने उसके मन और मस्तिष्क पर इतना अधिकार जमा लिया था कि उसको प्राकृतिक दृश्यों से भी घृणा हो गई थी। लाख

कोशिश करने पर भी वह उठ न सका। उसकी दशा उस पक्षी के समान थी जिसके पंख काट दिये गए हों, परन्तु वह उड़ने का प्रयत्न करता रहे। कदाचित् वह किसी का सहारा चाहता था. कदाचित् उसके मस्तिष्क में यह बात बैठ गई थी कि बिना किसी का सहारा प्राप्त किये अब वह उठ न सकेगा। जीवन में निरन्तर पराजित होते रहने के कारण वह हताश और हतोत्साह हो गया था, उसके अरमान और इरादे शिथिल पड़ गए थे और उसे जीवन में निराशा और अन्धकार के अतिरिक्त कुछ दिखाई न देता था। उसे ज्ञात हो गया था कि जीवन में आगे बढ़ना सहज नहीं है। इस दूषित वातावरण में शान्ति प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है, एक भरपूर और शान्तिमय जीवन बिताना हर प्राणी के बस की बात नहीं है। वह भारत के एक कोने से चलकर दूसरे कोने तक आ गया था; मार्ग में विभिन्न नगरों में टिका था, वहाँ भाँति-भाँति के लोगों से मिला था; परन्तु पाँव के चक्कर ने उसे कहीं भी जमकर न बैठने दिया। और अब वह एक ऐसे नगर में आ गया था जहाँ से लौटना उसके लिए कठिन ही नहीं, बल्कि सर्वथा असम्भव था।

उसकी यह धारणा बन गई थी, उसे विश्वास हो गया था कि इस शहर में उसके जीवन के अन्तिम दिन पूरे होंगे। यद्यपि वह परिस्थितियों और वातावरण से निराश हो गया था, परन्तु उसके मन के एक कोने में आशा की नन्ही-सी ज्योति झिलमिला रही थी कि किसी-न-किसी दिन जीवन में बहार अवश्य आयगी और फूल खिलेंगे। इस शहर में लोग भिखारी के रूप में आए और राजा बन गए—यही तो इस शहर की विशेषता है। उसे विश्वास था कि यह शहर उसके जीवन में भी सुखद परिवर्तन अवश्य लायगा; केवल कुछ समय तक प्रतीक्षा करने की बात है। वह प्रतीक्षा कर ही रहा था कि सहसा किसी ने दरवाज़ा खटखटाया।

वह झुँझलाकर उठा और चिल्लाया—"कौन है ?"

उत्तर में केवल दरवाज़ा एक बार और खटखटाया गया। उसने उठकर दरवाज़ा खोला और एक नवयुवक ने कमरे में प्रवेश किया। उसके

हाथ में सूटकेस था और उसके पीछे कुली सामान लिये खड़ा था। राज ने उसकी ओर देखा, सूरत कुछ जानी-पहचानी प्रतीत होती थी। "राज !", नवयुवक सूटकेस को धरती पर पटककर उसके गले से चिपट गया।

"तीरथ, अरे दोस्त, मैं तो तुम्हें बिलकुल न पहचान सका, कितने बदल गए हो ! कितने लम्बे समय बाद मिले हो—पन्द्रह साल बाद," तीरथ ने उससे अलग होते हुए कहा और कुली की ओर देखा। कुली ने सामान रखा और तीरथ ने उसे आठ आने दिये। कुली ने उसकी ओर ऐसी कृतज्ञतापूर्ण निगाहों से देखा जैसे उसे कारूँ का खजाना सौंप दिया गया हो। तीरथ की आँखों में गर्व था।

"तुमने यह स्थान कैसे ढूँढ़ निकाला ? तुम्हें कैसे पता चला कि मैं यहाँ रहता हूँ ?"

"बस मालूम कर लिया," तीरथ ने कुरसी पर बैठते हुए उत्तर दिया, "अब सी० आई० डी० वालों की भाँति और अधिक पूछ-ताछ करने की चेष्टा न करो। बात यह है कि मैं यहाँ पर एक धन्धा चलाना चाहता हूँ और इस सम्बन्ध में मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है। इसी कारण मैं सीधा तुम्हारे पास चला आया हूँ। अब तुम एक प्याला चाय मँगाओ, मैं नहाने से पहले चाय पीना चाहता हूँ।" तीरथ राज के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही कुरसी से उठ खड़ा हुआ और कपड़े उतारने लगा। राज ने बाहर जाकर होटल के नौकर को चाय लाने के लिए आवाज़ दी। जब वह कमरे में आया तो तीरथ ने अपना कोट उतारकर खूँटी पर टाँग दिया था और टाई की गाँठ ढीली कर ली थी। राज को आते देखकर वह उसकी ओर बढ़ा और उसके सामने खड़ा होकर बोला—

"राज साहब ! रुपया मेरा; व्यापार करने का ढंग मैं बताऊँगा; आपको केवल अपना व्यक्तित्व बरतना है और मैं उसी से लाभ उठाना चाहता हूँ। आप मेरे काम-काज में हस्तक्षेप न कीजिएगा और जैसा मैं करना चाहूँ मुझे करने दीजिएगा। रुपये का अभाव नहीं है। यह बेवकूफों का शहर है, बस उनको उल्लू बनाने की देर है। आप देख

कि ज़रा-सी देर में झोंपड़ी की जगह एक महल बनाकर खड़ा कर लेंगे।" यह कहकर तीरथ पलटा, सूटकेस खोला, तौलिया निकाला, ब्रुश निकाला, तेल की शीशी निकाली और ब्रुश पर टूथपेस्ट फैलाते हुए फिर बोला—"आज मैं एक कार ख़रीद रहा हूँ, कल एक ऑफ़िस किराये पर लूँगा और परसों से तुम काम शुरू कर दोगे। तुम क्या काम करोगे, यह जानने की जरूरत नहीं—हाँ तुमको वेतन उचित मिलेगा; अच्छा, अब मैं स्नान कर आऊँ।" और तीरथ गुसलखाने में चला गया। अन्दर से उसके गुनगुनाने की आवाज़ आने लगी।

: २ :

तीरथ के अन्दर इतना आश्चर्यजनक परिवर्तन देखकर राज अवाक् रह गया। बचपन में वे एक साथ पढ़ा करते थे और आठवीं तक साथ पढ़ते रहे थे। फिर आठवीं पास करने के पश्चात् राज शहर में चला आया था। उन दिनों तीरथ एक ख़ामोश-सा लड़का था। न वह बहुत बुद्धिमान था और न बिलकुल बुद्धि-हीन ही। वह औसत दर्जे का विद्यार्थी था और मास्टरों की निगाह में न तो खटकता ही था और न ही क्लास में प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा जाता था। राज का क्लास में काफ़ी मान था। वह बहुधा इतिहास और निबन्ध लिखने में सबसे अधिक नम्बर प्राप्त करता था, परन्तु हिसाब में वह बहुत कच्चा था। स्कूल के मास्टर उसकी बुद्धिमत्ता को सराहते थे और सदा यही आशा करते थे कि वह प्रथम श्रेणी में पास होगा, परन्तु राज ने उनकी आशाओं को कभी भी पूरा न होने दिया। तीरथ भी उसका बड़ा मान करता था और यदि कोई कठिन सवाल आ जाता था तो उसके पास आता था। दोनों मिलकर पढ़ाई करते थे और दोनों में इतिहास के प्रश्नों पर बहस होती थी और राज उसको बड़ी लगन से उन जटिल प्रश्नों के उत्तर बताता। दोनों एक साथ बैठते, मिलते, और खेलते थे। एक बार तीरथ सातवीं कक्षा में फ़ेल हो गया और राज आठवीं में चला गया। तीरथ दिन-भर खिड़की में बैठा रोता रहा था और शाम को जब राज उधर से गुज़रा तो उसने तीरथ को खिड़की पर ही बैठा पाया।

तीरथ उसे देखते ही रो पड़ा। कहने लगा—

"अब तुम मेरे पास नहीं आओगे ?"

"क्यों ?"

"मैं फेल जो हो गया हूँ," तीरथ ने रुँधे हुए कण्ठ से कहा।

"तो कोई बात नहीं," राज ने जमीन की ओर देखते हुए कहा।

"तुम मुझसे नहीं मिलोगे ?"

"अवश्य मिलूँगा, तीरथ, ऐसी कोई बात नहीं। अलग-अलग क्लास में पढ़ते हुए भी हम एक-दूसरे से दूर नहीं होंगे।"

यह सुनकर तीरथ की आँखों में आँसू आ गए थे और राज की आँखें भी भीग आई थीं। राज तीरथ के घर गया, वहाँ कुछ समय तक बैठा रहा, उसको सान्त्वना दी और फिर वहाँ से लौटा। आठवीं की परीक्षा पास करने के पश्चात् राज तीरथ से बिलकुल अलग हो गया।

इतने समय बाद आज उनकी प्रथम भेंट हुई थी। परन्तु उस तीरथ में और इस तीरथ में बहुत अन्तर था। कहाँ वह ख़ामोश तीरथ और कहाँ यह बातूनी तीरथ। आज उसमें आत्म-विश्वास का भाव पैदा हो चुका था और उसकी बातों में स्वाभिमान की गूँज थी। उसकी वाणी में आज्ञा देने और अधिकार जमाने का एक विशेष रौब था। बचपन में तीरथ इतना बदसूरत न था, पर कपड़े गन्दे पहना करता था। इन पन्द्रह सालों में उसकी काया पलट गई थी। उसके कपड़े बहुत साफ़-सुथरे थे। इतना लम्बा सफ़र करने के बाद भी उसकी पैण्ट की क्रीज़ बनी हुई थी और बाल बड़े ढंग से संवारे हुए थे। परन्तु उसके चेहरे की हड्डियाँ इस प्रकार उभर आई थीं कि वह काफ़ी बदसूरत लग रहा था। चेहरे का रंग खिलता हुआ था, जबड़े काफ़ी सख्त और नीचे की ओर मुड़े हुए थे, ठोड़ी काफ़ी सुदृढ़ थी। शरीर दुबला-पतला, आँखें तेज़ और चालाक, दृष्टि पैनी और बातों में चतुरता तथा कपट की झलक थी। अपने असुन्दर शरीर को वह सुन्दर कपड़ों में छिपाना चाहता था। राज इन्हीं विचारों में उलझा हुआ था कि तीरथ स्नान करके लौट आया। वह शीशे के सामने खड़ा हो गया और बालों को सँवारता हुआ बोला—"मैं साथ वाले कमरे ही में रहूँगा। तुम जानते

हो कि मैं कुँवारा हूँ, इसलिए तुमको अधिक कष्ट न होगा।"

बात ऐसी मुद्रा में कही गई थी कि राज इनकार न कर सका। तीरथ ने अपना सूटकेस उठाया और साथ वाले कमरे में चला गया। तीरथ की बेतकल्लुफ़ी पर राज को धक्का-सा लगा, किन्तु वह मौन रहा।

: ३ :

राज बिस्तर से उठा, अँगड़ाई ली, डिब्बे में से दातुन उठाई और चुपचाप दातुन करने लगा। धूप तेज़ हो गई थी और सामने खुला मैदान धूप में विश्राम कर रहा था। इतने में तीरथ कमरे से निकला। इस बार तीरथ ने एक नया सूट पहना हुआ था और गले में नई नेकटाई थी और पाँव में एक अति सुन्दर जूता। बाहर जाते हुए वह बोला, "मैं ज़रा शहर जा रहा हूँ। आज मुझे बहुत-सी चीज़ें खरीदनी हैं और दफ़्तर के लिए कमरे का प्रबन्ध करना है; कुछ भी हो, एक-दो दिन में दफ़्तर के लिए कमरे का प्रबन्ध कर लूँगा, और एक शानदार दफ्तर बना लूँगा। फिर तुम बड़े ठाट से दफ्तर में काम कर सकोगे। रुपयों की मुझे चिन्ता नहीं, वे आवश्यकता से अधिक हैं—और हाँ मेरा विचार है कि आज ही कार ले डालूँ। इस शहर में बिना कार के काम नहीं चल सकता; व्यापार बिना कार के चल ही नहीं सकता; क्यों क्या ख्याल है तुम्हारा ?"

उसने उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की, पैण्ट की जेबों में हाथ डाले और दरवाज़े की ओर बढ़ा। दरवाज़े में पहुँचते ही वह मुड़ा और बोला, "अच्छा शाम को मिलेंगे," और चला गया—बड़ी शान और बड़े गर्व के साथ। राज तीरथ की बातें बड़े विस्मय से सुन रहा था, वह न 'हाँ' कर सका था और न ही 'ना'। यहाँ तो 'हाँ' और 'ना' कहने का प्रश्न ही नहीं उठता था, मानो राज को वेतन देकर तीरथ ने खरीद लिया था और चूँकि राज बहुत समय से बेकार था, इसलिए उसने तनिक भी असन्तोष प्रगट नहीं किया और चुपचाप खोया-सा तीरथ की सब बातें सुनता रहा। तीरथ चला गया, परन्तु उसकी बातें राज के मस्तिष्क

में अब भी गूँज रही थीं—वह सोचने लगा कि तीरथ के पास इतना धन कहाँ से आया और धन प्राप्त कर लेने से उसमें कितना आत्म-विश्वास उत्पन्न हो गया है। तीरथ ने यह न पूछा कि उसे यह काम पसन्द है या नहीं; वह उसके नीचे काम करेगा या नहीं। उसने यह भी न बताया कि उसे कितना वेतन दिया जायगा, उसका काम क्या होगा, वह किस प्रकार का व्यापार करने वाला है, नौकरों के साथ उसका व्यवहार कैसा होगा—उसने किसी भी बात को स्पष्ट करने की आवश्यकता न समझी। ऐसा प्रतीत होता था मानो उनमें मनुष्य और मनुष्य-जैसा सम्बन्ध न था, बल्कि रुपये-मात्र का सम्बन्ध था। रुपयों का नाम याद आते ही राज के मन में उल्लास की एक तरङ्ग उठी। उसने बहुत समय से कोई अच्छा सूट तक न सिलवाया था, किसी अच्छे रेस्तराँ में स्वादिष्ट खाना तक न खाया था, अच्छी शराब तक न पी थी, और औरत तो उससे कोसों दूर थी। जीवन घुटा-घुटा था और असफलताओं ने उसके अन्दर हीन-भाव पैदा कर दिया था। रुपये—उनकी कल्पना करते ही उसका चेहरा खिल उठा, आँखों में प्रसन्नता नाच उठी और आत्माभिमान की भावना करवट लेने लगी। उसने दातुन को जोर से दाँतों-तले दबाया और खिड़की के बाहर थूका। बाहर नारियल के वृत्त खड़े थे। चीकू और अमरूद के पेड़ आँखों को शीतलता पहुँचा रहे थे। हवा भीगी-भीगी थी और समुद्र की लहरें किनारे को थपक-थपक कर सुला रही थीं—सो जा, मेरे नन्हे, सो जा।

: ४ :

जेब में रुपये हों तो आदमी सब-कुछ कर सकता है; तात्पर्य केवल रुपयों से है—चाहे एक सौ हों या दो सौ, दो सौ हों या दो हज़ार, दो हज़ार या दो लाख, दो लाख हों या दो करोड़ या दो अरब—बस बात रुपयों की है। रुपये हों तो आप अनाथाश्रम खोल सकते हैं और अपने नाम को चार चाँद लगा सकते हैं; आप एक ऑफिस खोल सकते हैं और एक लाख के दस लाख बना सकते हैं। फिर आप टाटा

और बिड़ला बन सकते हैं और राज कर सकते हैं। आप वेश्यालय भी खोल सकते हैं और एक साम्राज्य खड़ा कर सकते हैं। आप सच को झूठ कहलवा सकते हैं और झूठ को सच। रुपया भी कितनी सुन्दर और अद्भुत चीज़ है। इससे सुन्दर वस्त्र आदि लिये जा सकते हैं, सुन्दर महल बनवाये जा सकते हैं, सुन्दर स्त्रियाँ और स्वस्थ पुरुष खरीदे जा सकते हैं और इसी रुपये से लाखों आदमियों को रोटी मिल सकती है, कपड़ा मिल सकता है, घर मिल सकते हैं।

यद्यपि इस ढंग से रुपये का प्रयोग नहीं किया जाता—कम-से-कम हमारे यहाँ। तीरथ के जीवन का लक्ष्य रुपया कमाने के अतिरिक्त कुछ न था। दस के बीस बनाओ और जीवन ऐश और आराम से बिताओ। तीन-चार दिन के भीतर-भीतर उसने एक शानदार बिल्डिंग में दफ्तर के लिए कमरा ले लिया। इसके लिए उसे पगड़ी देनी पड़ी थी। उसने पगड़ी देकर और कमरा लेकर उसको दफ्तर के रूप में नये ढंग से सजवाया। उसने कमरे को दो भागों में बाँट दिया, मेज़ें और कुरसियाँ लाकर रखवाईं और बाहर और अन्दर बोर्ड लगवाये। तीन नौकर रखे, एक टाइपिस्ट लड़की, दो क्लर्क और एक एकाउण्टेण्ट रखा। फाइलें, रोशनाई, क़लम, कागज—सब-कुछ खरीदकर उनको सजाया गया। ऑफिस के बाहर एक पठान चौकीदार भी बिठा दिया गया। राज को अलग कमरा दिया गया और आदेश दिया गया कि उसे आर्डरों पर तीरथ की ओर से हस्ताक्षर करने होंगे। उसका काम अधिक न था, केवल गिनती के कागज़ों पर हस्ताक्षर करना और कुछ नहीं। परन्तु दफ्तर आने के लिए उसे बहुत अच्छे कपड़े पहनने और दफ्तर में सफ़ाई का विशेष ध्यान रखने का आदेश था। नौकरों को हुक्म था कि जो-कुछ मालिक कहेगा उनको उसका पूर्ण रूप से पालन करना होगा। तीरथ द्वारा दिये गए हुक्म पर सोच-विचार करने की अनुमति नहीं थी और चूँकि राज को वेतन पूरा दिया गया था, इसलिए उसने यही उपयुक्त समझा कि वह व्यापार के सम्बन्ध में कुछ न कहे-सुने, रुपयों के लेन-देन में अपनी राय न दे और चुपचाप काम करता जाय और वेतन लेता जाय।

इस प्रकार तीरथ का व्यापार आरम्भ हुआ। यह व्यापार कैसा

था, इससे कितना लाभ या हानि होगी, राज को न इसका ज्ञान था और न उसने तीरथ से इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न ही किया था। उसे केवल यह बताया गया था कि 'एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट' का व्यापार शुरू किया गया है और उसने इस बात पर विश्वास कर लिया था।

समय बीतने लगा और समय के साथ-साथ तीरथ और राज एक-दूसरे के अधिक निकट आने लगे। राज ने अनुभव किया कि तीरथ वस्तुतः बुद्धिमान आदमी है, परन्तु उसकी चतुरता और बुद्धिमत्ता केवल उसकी स्वार्थ-पूर्ति का साधन बनकर ही रह गई है। वह इसका प्रयोग केवल अपने आराम, अपने ऐश्वर्य, अपनी कार, अपने बैंक-अकाउण्ट और अपनी औरत के लिए ही करता है। उसने एक नौकर रख लिया था—जुम्मन, जो उसका खाना पकाता था, नहाने के लिए पानी गर्म करता था और बड़ी फुरती से सब काम-काज करता था। राज अक्सर तीरथ के कमरे में जाता था। वहाँ उसे सदा एक सुन्दरता और सुघड़पन का अनुभव होता। कमरे में हर चीज़ सुन्दर ढंग से रखी हुई मिलती। मेज़ अपने स्थान पर थी; कुरसियाँ अपनी जगह पर थीं और बिस्तर, ट्रंक, सूट, नेकटाइयाँ—सब इस प्रकार रखी हुई थीं कि सजाई हुई मालूम होती थीं। सामने की मेज़ पर एक लड़की का चित्र फ्रेम में जड़ा हुआ रखा था। राज देर तक उस चित्र को देखता रहा। लडकी का चेहरा सुन्दर था, परन्तु आँखों में विषाद की झलक थी, मानो इसने जीवन के विभिन्न रूपों की अच्छी तरह छान-बीन की हो। बाल कन्धों पर बिखरे हुए थे। तीरथ अपने बिस्तर पर लेटा हुआ किताब पढ़ रहा था। उसने राज की ओर देखा और फिर चित्र की ओर—

"ईरानी लड़की है," उसने मुस्कराकर कहा।

"इसका फ़ोटो यहाँ कैसे आया? तुम्हारी जान-पहचान कैसे हुई?"

"मैं ईरान और फ़िलस्तीन घूम आया हूँ।"

"फ़ौज में भरती होकर?"

"नहीं तो।"

"फिर कैसे ?"

"व्यापार करने गया था।"

"कुछ कमाकर लाए ?"

"कुछ नहीं। रुपये कमाए और वहीं उड़ा डाले। केवल कुछ यादें अपने साथ लाया हूँ और उनमें से एक तुम्हारे सामने रखी तुम्हें देख रही है। हिन्दुस्तान से निकलकर मनुष्य बहुत-कुछ सीख सकता है। यों तो सारे संसार की सैर करनी चाहिए और विभिन्न देशों में जाकर विभिन्न प्रकार के लोगों से मिलना चाहिए। परन्तु ईरान और फिलस्तीन तो बहुत अच्छी जगहें हैं—सुन्दर स्त्रियाँ और उत्तम शराब और लोग शरीफ़ और मिलनसार। वे दिन बहुत अच्छे थे; जेब में रुपये, जीवन में खुशी थी, उल्लास था, जो मन आता, करते थे। एक शाम इस लड़की से एक रेस्तराँ में मुलाक़ात हो गई। यह मुझे अपने घर ले गई और अपने माता-पिता से परिचय कराया। उस दिन के बाद हम दोनों मिलते रहे, प्रेम करते रहे। लड़की के माता-पिता ने आपत्ति न की कि लड़की का प्रेमी घर पर क्यों आता है, लड़की से घण्टों बैठकर बातें क्यों करता है। उन्हें विश्वास था कि लड़की जवान हो चुकी है, वह कुछ सोच-समझकर ही कोई काम करेगी और जो कुछ करेगी अपनी भलाई के लिए करेगी। और इस प्रकार दिन बीतते रहे, रातें लम्बी और कजरारी होती गईं, जीवन सुखों और स्वप्नों की चित्रावली बन गया। लेकिन युद्ध समाप्त हो गया और मेरा व्यापार ठप हो गया। बना-बनाया ठाठ बिगड़ गया और मैं निर्धन होकर ईरान से निकला।

"वह लड़की तुम्हारे साथ नहीं आई ?"

"क्या करती आकर ? मेरे पास फूटी कौड़ी भी न थी। बड़ी कठिनाई से एक परिचित से हिन्दुस्तान आने का किराया लिया और चल दिया।"

"लड़की मिलने आई थी ?"

"आई थी।"

"उसने कुछ कहा ?"

"नहीं तो।"

"क्या वह उदास थी?"

"तनिक भी नहीं।"

"और तुम?"

"नहीं तो।"

"क्यों?"

"जब तक मेरे पास रुपये थे, वह मेरे पास रही। जब सिक्के न रहे तो क्या करती मेरे साथ आकर?"

"तुम्हें दुःख न हुआ?"

"उसे लाकर क्या करता? यहाँ वह किस तरह भूखी रहती?"

"लेकिन अब? अब बुला सकते हो।"

"इस बात को छः साल हो गए हैं।"

"कोई ख़त?"

"कोई नहीं—" और तीरथ चित्र की ओर देखने लगा। शीशे पर धूल जम गई थी। उसने आगे बढ़कर फ्रेम उठाया और चादर से शीशा साफ़ किया। अब चित्र अधिक आकर्षक हो गया। आँखों में वही विषाद और शोक था; परन्तु आँखें बड़ी-बड़ी थीं, बाल काले और चमकीले थे और चेहरा चौड़ा और सुन्दर था।

"आज शाम को मिलेंगे," तीरथ बोला।

"कहाँ?"

"तुम्हें एक लड़की से मिलाऊँगा।"

"कौन है वह लड़की?"

"मेरी नई प्रेमिका," और वह सहसा चुप हो गया। "वह इस लड़की से बहुत-कुछ मिलती है, तभी तो वह मुझे इतनी पसन्द है। बड़ी कठिनाई से ऐसी लड़की मिली है। उसे देखकर मुझे ईरान की शाम याद आ जाती है; फ़िलस्तीन के जीवन की रंगीन स्मृतियां सजग हो उठती हैं।" तीरथ उस चित्र को देखने लगा। राज चुपचाप उठकर कमरे से बाहर आ गया।

वह शाम बड़ी सुहावनी और रोचक थी, जब तीरथ और राज कार में बैठकर चले और कार धीरे-धीरे रास्ता तय करने लगी। राज आज वास्तव में बहुत खुश था। वह जीवन के नये मनोरंजनों से परिचय करने जा रहा था। जब जेब में रुपये हों और मनुष्य कार में बैठकर धीरे-धीरे सोचने लगे तो मन में कैसे भाव उठते हैं। सन्ध्या के समय अँधेरा चारों ओर उतर रहा था और कार के चारों ओर बढ़ रहा था। कार एक उजड़ी हुई बस्ती की ओर बढ़ी। यहाँ अँधेरा अधिक था और रोशनी कम; केवल दोनों ओर पेड़ खड़े थे और वे काफ़ी सुन्दर और मनमोहक लग रहे थे। ड्राइवर इस रास्ते पर पहले भी कार चला चुका था, तभी वह सहज भाव से स्टीयरिंग को पकड़े हुए धीरे-धीरे घुमा रहा था। राज ने आज-जैसी शान्ति का अनुभव बहुत कम किया था—ऐसी शान्ति जैसे संसार में अन्धकार के अतिरिक्त कुछ था ही नहीं; इस शान्ति के अतिरिक्त कुछ नहीं था, अपनी शान्ति के अतिरिक्त कुछ नहीं था और अपने सुख और ऐश्वर्य के अतिरिक्त कुछ नहीं था; और कार अन्धकार में बढ़ी जा रही थी। एक मोड़ पर आकर कार रुकी और तीरथ ने उतरने के लिए कहा।

राज कार से उतर पड़ा और दोनों आगे बढ़े। सामने एक सुन्दर होटल था।

"यह एक फ्रांसीसी होटल है, यानी इसे एक फ्रांसीसी मादाम ने हिन्दुस्तानियों के ऐश के लिए खोल रखा है," तीरथ ने होटल के विषय में बताते हुए कहा; परन्तु राज की समझ में न आया।

"यहाँ क्या है?"

"कमरे हैं।"

"और कमरों में?"

"पलंग।"

"और पलंगों पर?"

"सफेद चादरें, शृङ्गार मेज़, पानी, लोटा, साबुन, तौलिया, शराब, बैरा।"

"और ?"

"औरतें; यहाँ बम्बई के उच्च श्रेणी के सभ्य आते हैं, अंग्रेज़ आते हैं (गो आजकल कम), देशी आदमी आते हैं, सेठ आते हैं। आओ, आगे बढ़ो, डरो मत।"

और दोनों एक मेज़ पर बैठ गए। यह एक हॉल कमरा था। थोड़े-थोड़े फासले पर मेजें लगी हुई थीं और इन मेजों के गिर्द नौजवान जोड़े बैठे हुए थे। कोई खाना खा रहे थे और कोई शराब पी रहे थे। हॉल कमरे से बाहर भी मेजें लगी हुई थीं। राज ने बाहर की ओर दृष्टि डाली—

"बाहर चलें ?"

"चलो।"

वे दोनों हॉल से बाहर निकले। बाहर बत्तियाँ कुछ मद्धम थीं—रोशनी कम और अन्धेरा अधिक था। समुद्र की लहरें किनारे से टकरा रही थीं, होटल के चारों ओर नारियल के वृक्ष थे, ऊपर नीला आकाश था और चांद तथा तारे पूरी रोशनी से जगमगा रहे थे। वे दोनों एक मेज़ के पास बैठ गए।

चुपके से एक बैरा आया।

"एक बोतल शैम्पेन," तीरथ ने धीरे से कहा।

"और तुम्हारी लड़की ?" राज ने तीरथ से पूछा।

"अभी आयगी।"

"वह भी शराब पियेगी ?"

"क्यों नहीं ? यह जगह अच्छी है, बहुत अच्छी। यहाँ अमीर आते हैं, लड़कियाँ लाते हैं, शराब पीते हैं, मज़ेदार खाने खाते हैं और फिर अपने-अपने कमरों में चले जाते हैं। यह जीवन कितना अच्छा है ! क्यों, तुम्हारा क्या विचार है ?"

• राज ने इधर-उधर देखा। उसे अन्धेरे के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं दिया।

बैरा शराब की बोतल और दो छोटे-छोटे गिलास ले आया। उसने बोतल खोली और गिलासों में शराब उंडेल दी। बैरे को

एक और गिलास लाने का आदेश दिया गया।

"लो पियो।"

राज ने शराब का घूँट पिया। शराब मीठी और स्वादिष्ट थी।

"तुम्हारी लड़की नहीं आई?"

"आ जायगी।"

"इस पैग को पी डालो।"

तीरथ ने एक पैग पी डाला।

राज ने भी अपना पैग पी डाला।

दूसरा पैग शुरू हुआ और वह भी समाप्त हो गया। दो पैग पी-कर राज के शरीर में एक झंझनाहट-सी होने लगी, रक्त का प्रवाह तेज़ हो गया, आँखों में चमक आ गई और बातों में प्रवाह।

तीसरा पैग शुरू हुआ।

एक लड़की तीरथ की कुरसी के पीछे आखड़ी हुई। राज ने लड़की की ओर देखा और आँखों-आँखों में आदाब किया।

"आप हैं राज और आप हैं रोज़ी।"

लड़की कुरसी पर बैठ गई।

तीरथ ने शराब उँडेली और रोज़ी ने एक ही झटके में पैग पी डाला।

दूसरा पैग! तीसरा पैग!

और शराब का दौर शुरू हुआ। 'शराब वास्तव में अच्छी चीज है, राज ने सोचा। वह आज सचमुच प्रसन्न था। आज उसने एक नया जीवन बिताना प्रारम्भ किया था। यद्यपि वह कई बार पहले भी शराब पी चुका था, परन्तु शैम्पेन उसने पहली बार ही पी थी और फिर एक लड़की के साथ। वह लड़की के शरीर को भली प्रकार न देख सका था। लड़की पतली छरहरी न थी, भरे-भरे शरीर की थी। उसकी आँखें छोटी-छोटी और आवाज़ महीन थी। सच यह कि वह लड़की न थी, एक पूरी औरत थी। आयु होगी पच्चीस-छब्बीस के लगभग। होंठ पतले-पतले और लुभावने।

तीरथ शराब पीता रहा और कुछ न बोला।

औरत शराब पीती रही और कुछ न बोली।

राज शराब पीता रहा और औरत की ओर देखता रहा।

जब तीरथ शराब के छः पैग पी चुका तो कहने लगा, "मैं ज़रा पेशाब कर आऊँ," और वह उठकर चला गया।

लड़की ने अपनी कुहनियाँ मेज़ पर टेक दीं। राज तनिक पीछे को सरक गया।

"डरिये नहीं, मैं आपको पसन्द करती हूँ।"

"मतलब ?"

"मैं इस व्यक्ति से घृणा करती हूँ।"

"किससे ?"

"आपके साथी से।"

"क्यों ?"

"मुझे नापसन्द है।"

"तो मैं क्या करूँ ?"

"तुम्हारे पास कोई लड़की है ?"

"नहीं तो।"

"मुझे रख लो। मैं इसके साथ रहना नहीं चाहती।"

"मेरे पास इतने रुपये नहीं।"

"ख़ैर कोई बात नहीं। तुम मुझे यूँ ही रख लो।"

"खाओगी कहाँ से ?"

"मैं कर लूँगी प्रबन्ध। तनिक पास आओ।"

"थोड़ा दूर रहो। तीरथ आता होगा। उसके सामने ऐसी बातें न करना।"

"क्यों ?"

"मैं उसके दफ्तर में काम करता हूँ। वह मेरा बॉस (मालिक) है और मैं उसका नौकर। अगर उसे इस बात का पता चल गया तो मुझे ऑफ़िस से निकाल देगा, समझीं ?"

"तुम मुझे अपने पास रख लो।"

 "कह दिया मेरे पास इतने रुपये नहीं हैं।"

"कितने रुपये दोगे ?"

"मैं एक रुपया भी नहीं दे सकता।"

"रुपयों का प्रबन्ध मैं कर लूँगी। तुम मुझसे विवाह कर लो—अच्छा मेरे निकट आओ, मुझे एक चुम्बन दे दो।"

"ऐसी बातें न करो।"

इतने में तीरथ आ गया और रोज़ी पीछे हट गई। तीरथ ने कहा, "रोज़ी ये बहुत अच्छे हैं।"

"हाँ, बहुत सुन्दर हैं," रोज़ी ने बेखटके कहा।

"सुन्दर नहीं, अच्छे हैं।"

"अच्छे नहीं, सुन्दर हैं," रोज़ी ने मुस्कराते हुए कहा।

"शराब पियो, एक पैग और," तीरथ ने क्रोध-भरे स्वर में कहा।

एक पैग और पिया गया।

राज ने इधर-उधर दृष्टि डाली।

शराब के दौर चल रहे थे; राज के मन में एक अनोखी-सी मस्ती जन्म ले रही थी—यह होटल सचमुच सुन्दर था, इसका वातावरण सचमुच रँगीला था। यह शहर से दूर था। यहाँ जीवन के झमेलों से दूर मनुष्य अपने दुःखों को भूल सकता है।

राज ने रोज़ी की ओर देखा और वह मुस्कराई—एक धीमी-सी मुस्कराहट; रोज़ी को आँखें अब खूबसूरत हो गई थीं। उसकी स्वप्निल आँखों में एक निमंत्रण था और गालों पर एक हल्की-सी लाली फैल गई थी। वह टकटकी बाँधकर राज की ओर देखने लगी और मुस्कराने लगी। राज आज सचमुच प्रसन्न था। शराब का मूल्य तीरथ को चुकाना था और तीरथ को केवल इस बात पर गर्व था कि इस समय उसने इन दोनों को ख़रीद लिया था—केवल शराब पिलाकर। वह अपने बड़ा होने का परिचय उस समय देगा जब बैरा शराब का बिल लेकर आयगा। उस समय रुपयों को देखकर रोज़ी की आँखों में चमक लौट आयगी। उस समय रोज़ी का सिर नीचा हो जायगा। उस समय रोज़ी को अनुभव होगा कि इस भूमण्डल में तीरथ का अस्तित्व कितना बड़ा है। उन दोनों की बोल-चाल, बातचीत और मिलने-जुलने से यह

वास्तविकता स्पष्ट हो गई थी कि उन दोनों में प्रेम का सम्बन्ध न था। रोज़ी इसलिए आई थी कि उसे रुपयों की आवश्यकता थी और आँखें बंद करके, शराब में मदहोश होकर वह एक बदसूरत और कुरूप मनुष्य के साथ लेट सकती थी। तीरथ अपनी बदसूरती से तंग आकर अपने रुपयों के बल पर एक सुन्दर औरत के शरीर से प्यार करने का प्रयास कर रहा था, उसे अपना बनाने का प्रयत्न कर रहा था, अपनी प्रसन्नता के लिए दूसरे की प्रसन्नताओं का गला घोट रहा था और रोज़ी केवल अपने वातावरण से परास्त होकर उसके साथ सम्भोग करती थी।

रोज़ी ने फिर राज की ओर देखा और मुस्कराई, मानो वह कुछ कहना चाहती थी। और राज ने इधर-उधर देखा। बत्तियों का प्रकाश मद्धम और मोहक था। रात काफी गहरी हो चुकी थी और धीमी-धीमी ठण्डी हवा चल रही थी। समुद्र अपना विशाल वक्ष फैलाये किनारे से आलिंगन कर रहा था। राज अब अपने जीवन की कड़वाहटों को भूल चुका था। शराब की तेज़ी से उसके शरीर में शक्ति-सी आ गई थी, मानो अंधकार दूर हो रहा था और प्रकाश निकट आ रहा था। जैसे दुःखों के घनघोर बादल छँट गए थे और सुखों का प्रकाश उसकी ओर झाँक रहा था। रोज़ी उसे बड़ी सुन्दर प्रतीत हो रही थी। रात सलोनी, आकर्षक और जवान थी। शराब मधुर थी। आँखों में मस्ती थी और रुपयों के लिए तीरथ मौजूद था। राज ने कनखियों से रोज़ी को देखा। वह उसे सीधा खुलकर नहीं देख सकता था, क्योंकि वह उसके मालिक की प्रेयसी थी; वह उसे रुपये देता था और रोज़ी उसके रुपयों पर जीवित थी।

तीरथ चुपचाप बैठा था, मानो वह उन दोनों की दशा से पूर्णतया अनभिज्ञ था, मानो उसे अपनी अपार शक्ति पर पूरा विश्वास था, मानो वह जानता था कि इन दोनों की इस क्षणिक खुशी को एक ही क्षण में समाप्त किया जा सकता है। उसे राज और रोज़ी के मन की बातों का कुछ-कुछ अहसास हो रहा था, परन्तु वह चुपचाप बैठा हुआ शराब पिये जा रहा था। उसे नशा नहीं हुआ था, केवल आँखें लाल अंगारा हो गई थीं और इनके अतिरिक्त और किसी बात से यह प्रगट

नहीं होता था कि उसे नशा चढ़ गया है। रोज़ी की बातों में हल्की-सी लड़खड़ाहट आ गई थी और उसके बार-बार मुस्कराने और राज की ओर देखने से विदित होता था कि शराब का अधिक असर रोज़ी पर हुआ है। रोज़ी ने राज की ओर देखते हुए कहा—

"एक चुम्बन दो।"

राज चुप रहा।

तीरथ रोज़ी की बात सुनकर मुस्कराया।

"मैं कहती हूँ मुझे एक चुम्बन दो।"

राज फिर चुप रहा।

राज के मन में इस समय केवल यही विचार आ रहा था कि रोज़ी ने चुम्बन का प्रश्न कैसे कर दिया, और विशेषकर तीरथ के सामने। क्या वह तीरथ की शक्ति से अनभिज्ञ थी? यदि तीरथ ने उसको छोड़ दिया तो?—नहीं।

रोज़ी ने तीरथ की ओर देखा और बिना झिझक बोली—

"तीरथ, इनसे कहो कि मुझे एक चुम्बन दें।"

तीरथ राज की ओर देखकर मुस्करा दिया। उसकी मुस्कराहट झूठी थी। यदि उसका बस चलता तो इस समय इस औरत को कोड़े मार-मारकर जान से मार देता। अपने प्रेमी के आगे किसी दूसरे आदमी से प्रेम करना मज़ाक नहीं।

इस समय कदाचित् तीरथ को अपने रुपयों का ध्यान आया होगा। परन्तु उसे रोज़ी की हरकत पसन्द नहीं आई और वह बिलकुल चुप रहा। रोज़ी फिर चिल्लाई—"मुझे चुम्बन दो, कहो इनसे, मुझे चुम्बन दें;" और तीरथ मुस्कराता रहा। समुद्र की लहरें किनारे से टकराती रहीं और राज ने उठने की कोशिश की। यद्यपि वातावरण काफ़ी मनोहर था, परन्तु रोज़ी ने अपनी गलती से इसे विषाक्त कर दिया था। राज जानता था कि अगर वह इस समय यहाँ से चल दे तभी भला होगा। अपनी नौकरी बनाये रखने के लिए उसे चाहिए कि यहाँ से चला जाय। रोज़ी का क्या है, आज अगर तीरथ है तो कल कोई और होगा। परन्तु कितनी मूर्ख लड़की है यह!

रोज़ी उसकी ओर झुकी।

वह उठ खड़ा हुआ।

"पागल न बनो, शायद शराब का अधिक असर हो गया है," उसने अपना पहलू बचाते हुए कहा और तीरथ की ओर देखा।

तीरथ कुछ न बोला। शायद वह भी यही चाहता था कि राज वहाँ से चला जाय और वह रोज़ी को खरी-खरी सुनाय—"पगली तू मेरी है, मेरी है। मैं तुझे पाँच सौ रुपये मासिक देता हूँ और किस लिए देता हूँ? केवल इसलिए कि मैं तेरे साथ रहूँ—तू मेरे साथ रहे, और कोई न हो। इन पाँच सौ रुपयों से मैंने तेरा शरीर खरीद लिया है, तेरे होंठ खरीद लिये हैं, तेरी छातियाँ खरीद ली हैं और तेरी गोल-गोल सुडौल टाँगें खरीद ली हैं। मैंने तुझे देखकर खरीदा है—ठीक एक व्यापारी की भाँति; तूने जितना मूल्य माँगा, मैंने चुका दिया। अब झुँझलाहट से क्या लाभ?"

और राज अपनी नौकरी को सुरक्षित रखने के लिए उठ खड़ा हुआ।

वहाँ से उठकर, बरामदे से निकलकर वह अँधेरे में आ गया। इस अँधेरे के दोनों ओर कमरे थे—छोटे-छोटे कमरे। कमरों में अन्धकार था। अब जगह सुनसान और उजाड़ दिखाई दे रही थी और राज को ऐसा लग रहा था जैसे वह एक क़ब्रिस्तान से बाहर निकल रहा हो। मानो हर कमरा एक कब्र था जिसमें स्त्री और पुरुष लिपटे हुए पड़े थे—स्त्रियाँ और पुरुष, पुरुष और स्त्रियाँ, सुन्दर पुरुष और कुरूप स्त्रियाँ, कुरूप मर्द और सुन्दर स्त्रियाँ, बूढ़े मर्द और जवान लड़कियाँ, जवान लड़के और बूढ़ी स्त्रियाँ, बूढ़ी स्त्रियाँ और बूढ़े मर्द। सब शराब पीकर सो रहे थे, कुछ क्षणों के लिए सोते थे, ताकि वे जीवन का सारा रस चूस लें और जीवन की समस्त खुशियाँ और सारे सुख किसी और को न मिलने पायं। वे केवल उन्हीं को प्राप्त हों। और राज ने सोचा कि किस प्रकार एक विशेष वर्ग ने जीवन की खुशियों पर अधिकार किया हुआ है ताकि बाकी लोग वंचित रहें, अतृप्त रहें, भूखे रहें। जो लोग यहाँ आते हैं, उनके पास पैसा न जाने कहाँ से आता है! और स्त्रियाँ

बेचारी अपने शरीर को जीवित रखने के लिए यहाँ आ जाती हैं—एक पल के लिए, एक घण्टे के लिए, एक रात के लिए। और सुबह होते ही अपने-अपने घरों को चली जाती हैं, क्योंकि इन स्त्रियों के भी अपने घर होते हैं, माताएं होती हैं, पति होते हैं, बच्चे होते हैं। यह भी कैसा वातावरण है, कैसी गन्दगी है—राज यही सोचता हुआ कार में जा बैठा।

"ड्राइवर, वापस चलो।"

"कहाँ?" ड्राइवर ने पूछा।

"घर; मुझे छोड़कर कार वापस ले आना।" कार घर की ओर चल पड़ी।

: ६ :

कार घर की ओर जा रही थी। हवा तेज़ थी और अँधेरा काफी गहरा था। उसकी आँखों में नींद आ रही थी और जो घटना अभी हुई थी उसकी याद नींद में खो-सी गई थी। लड़की की सूरत हर क्षण मध्यम पड़ती जा रही थी। उसे केवल तीरथ की दशा पर दया आ रही थी जो कि रुपये होते हुए भी प्रसन्नता से अपरिचित था। उसे लड़की पर तरस आ रहा था, जो सुन्दर और चालाक होते हुए भी एक आवारा और आचारहीन जीवन बिता रही थी। दोनों के जीवन से स्पष्ट था था कि वे जीवन की मूल समस्याओं से अनभिज्ञ हैं। वे जीवन को सुधारना नहीं चाहते। जैसे दोनों बिना सोचे-समझे स्वयं एक अनजानी मंज़िल की ओर बढ़े जा रहे थे। ज्यों-ज्यों राज सोचता जा रहा था उसकी नींद और गहरी होती जा रही थी। आखिर वह सो गया और कार जब घर पहुँच गई तो ड्राइवर ने उसे झकझोरा—"बाबूजी, उतरिये।"

राज ने आँखें खोलीं। शराब का नशा अभी बाकी था। वह थोड़ा-सा लड़खड़ाता हुआ घर में दाखिल हुआ। ड्राइवर ने उसकी बाँह पकड़ी और उसे कमरे तक पहुँचाया। उसने दरवाजा खोला और चुपके-से बिस्तर में लेट गया।

जब सुबह हुई तो उसने खिड़की खोली—बहुत दूर समुद्र किनारे

से टकरा रहा था और हवा, चुपके से लहरों को चूमती हुई, पत्तों से अठखेलियाँ करती हुई, वृक्षों का आलिङ्गन करती हुई उसके बालों से खेल रही थीं। किसी ने उसका दरवाज़ा खटखटाया। उसने दरवाज़ा खोला और तीरथ अन्दर आया। तीरथ की शक्ल से स्पष्ट था कि वह रात-भर नहीं सोया है। वह चुपके से आकर उसके बिस्तर पर बैठ गया और कहने लगा—

"अजीब बात है राज, जिससे हम प्रेम करते हैं वह हमसे प्रेम नहीं करतो। जिस लड़की से मैंने रात तुम्हारा परिचय कराया था, जानते हो उसे क्या मासिक देता था ?"

"मुझे क्या मालूम ?" राज ने भोलेपन से उत्तर दिया।

"पाँच सौ रुपये," तीरथ ने होंठ काटते हुए कहा, "और इसके बावजूद वह मेरी परवाह नहीं करती। रात उसकी हरकत बहुत ही आचार से गिरी हुई थो। शराब पीकर वह तुमसे प्रेम करने लगी। यह कहाँ की शराफत है ! मुझे बड़ा क्रोध आया। तन में आग-सी लग गई। जी चाहता था कि साली का गला घोंट दूँ। रुपये मुझसे ले और प्रेम दूसरों से करती फिरे ! तुमने अच्छा किया जो चले आए, नहीं तो लड़ाई हो जाती।"

"मुझे स्वयं भी उसकी हरकत बुरी लगी थी," राज ने पहलू बचाते हुए कहा।

"लेकिन मैंने बदला ले लिया। तुम्हारे जाने के बाद मैंने साफ कह दिया कि वह अब मेरी नहीं है। मैं ऐसी बेवफा औरत को अपने पास नहीं रख सकता।"

"फिर उसने क्या कहा ?" राज ने चौंककर पूछा।

"हँसती रही।"

"बड़ी बेहया लड़की थी।"

"अरे इन लड़कियों को किसी की क्या परवाह। यह बहुत बड़ा शहर है। राज, यहाँ लाखों का व्यापार होता है। यहाँ बड़े-बड़े सेठ रहते हैं, जो करोड़ों का व्यापार करते हैं। वे लोग शादियाँ भी करते हैं और दूसरी औरतें भी रखते हैं। शादी इसलिए करते हैं कि

समाज में इज्जत और मान बना रहे । अक्सर इनकी पत्नियाँ बदसूरत और फूहड़ होती हैं, इसलिए सेठ लोग रखैल रखते हैं, शराब पीते हैं, होटलों की सैर करते हैं, रात-भर घूमते हैं और सुबह होते ही अपने घरों को चले जाते हैं ।"

"इन कामों के लिए इनके पास रुपये कहाँ से आते हैं ?" राज ने पूछा

"व्यापार करते हैं ।"

"किस चीज का ?"

"हर चीज का ।"

"जैसे ?"

"गेहूँ से लेकर औरत तक का ।"

"शर्म नहीं आती उन्हें ?"

"उनकी जिन्दगी का उद्देश्य केवल रुपये कमाना है ।"

"और तुम्हारा ?"

"मेरा उद्देश्य भी रुपये कमाना है । और तुम जानते हो कि इस शहर में दस-बीस रुपयों से गुजर नहीं हो सकती । व्यापार दस-बीस हजार से नहीं होता, दस-बीस लाख से होता है । और जानते हो आज-कल इज्जत किसकी होती है ? केवल उस मनुष्य की जिसके पास एक कोठी हो, एक कार हो, सबसे शानदार होटल में एक कमरा हो, जहाँ वह अपनी रखैल को अपने साथ ले जाय और शराब पिये । यह जीवन बुरा नहीं दोस्त । और जीवन में सब-कुछ करना पड़ता है । अपने मन को मारना पड़ता है, अपनी खुशी के लिए हर चीज का दमन करना पड़ता है, अपने अन्तःकरण को मारना पड़ता है, दूसरों की आवश्यकताओं की उपेक्षा करनी पड़ती है ।"

"तुम ऐसा क्यों करते हो ?"

"दूसरे लोग भी तो ऐसा ही करते हैं । एक बार मैं कलकत्ते में था । मुझे एक लड़की से प्रेम हो गया । मैंने लड़की से शादी करनी चाही । इसलिए मैंने अपने माता-पिता को लिखा कि मैं एक बंगालिन से विवाह करना चाहता हूँ । माता-पिता ने विवाह में सम्मिलित होने

से इनकार कर दिया। जहाँ मैं नौकर था, वहाँ से मुझे हटा दिया गया। अब मैं केवल लड़की के आसरे पर ही था। लड़की के माता-पिता इस विवाह के लिए तैयार न थे। कुछ दिनों तक तो लड़की मुझे रुपये देती रही और जब उसने देखा कि मैं बिलकुल कंगाल हो गया हूँ तो उसने भी मुँह फेर लिया। फिर मैंने माता-पिता को रुपये भेजने के लिए लिखा। उन्होंने रुपये नहीं भेजे। मैं पाँच दिन तक कलकत्ते में भूखा रहा और किसी मनुष्य ने मुझे रोटी तक नहीं दी। विवश होकर मैं फौज में भरती हो गया और ईराक चला गया। उस समय मुझे मालूम हुआ कि संसार का प्रत्येक मनुष्य निर्दयी है, दुनिया में ईमानदारी तो है ही नहीं। मुसीबत में माँ-बाप तक भी काम नहीं आते, दोस्त साथ छोड़ देते हैं, प्रेमिकाएं रूठ जाती हैं और आदमी जीवन में अकेला ही रह जाता है।"

"यह तुम्हारा अपना मत है," राज ने सोचकर कहा।

"हो सकता है कि मेरा मत ठीक न हो, लेकिन अनुभव तो यही कहता है कि दुनिया वालों को उल्लू बनाओ, झूठ बोलो, फ्रॉड करो, रुपया कमाओ और ठाठ से ऐश करो।"

"अगर ऐश में खुशी न मिले तो ?"

"मिलती है और अवश्य मिलती है, चाहे वह पल-भर के लिए ही मिले।"

"और अगर मनुष्य का अन्तःकरण भर जाय ?"

"धीरे-धीरे मनुष्य का अन्तःकरण भर जाता है।"

"जिसका न भरे वह क्या करे ?"

"वह भूखा रहे, कुढ़ता रहे, सिसकता रहे, जलता रहे। और हाँ, एक बात बताना भूल गया। मैंने उस लड़की से अपना नाता तोड़ लिया है और एक दूसरी लड़की ढूँढ़ निकाली है जो आज से मेरी प्रेमिका होगी।"

"लड़की कैसी है ?"

"बड़ी सुन्दर है, राज ! आज तक मैंने ऐसी रूपवती औरत नहीं देखी। सुन्दरी होने के साथ-साथ वह बड़ी सभ्य भी है। उर्दू में बात-

चीत करती है; ऐसा लगता है जैसी अभी लखनऊ से आई है। और मुझे विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि वह पेशा नहीं कमाती।"

"वह क्या करती है?"

"वह प्राइवेट है।"

"यह प्राइवेट क्या बला होती है?"

"यानी केवल एक-दो आदमियों ही के पास वह रहती है। वही उसे रुपये देते हैं और उसके घर आते-जाते रहते हैं।"

"आपका मतलब है कि वह खुले-आम पेशा नहीं कराती।"

"हाँ। मतलब कुछ यही निकलता है। लेकिन मैंने उससे यह वादा कराया है कि वह मेरे सिवाय किसी दूसरे के पास न जायगी और उसका पूरा खर्च मैं ही उठाऊँगा। खुदा की कसम, बड़ी खूबसूरत औरत है और उसने बताया कि किस तरह लोगों ने उसे धोखा दिया। कोई भी उसके हृदय की गहराइयों तक न पहुँच सका। अब वह इस आवारापन से तंग आ चुकी है और केवल एक पुरुष के साथ ही जीवन बिताना चाहती है। वह बहुत गिड़गिड़ाई और रोई। मुझे उस पर तरस आ गया और मैंने उसे अपनी प्रेमिका बना लिया। किसी दिन तुम्हें उसके घर ले चलूँगा; तुमसे मिलाऊँगा। देखो कोई गड़बड़ न करना।" यह कहकर तीरथ चारपाई से उठा और अपने कमरे में चला गया।

जब तीरथ कमरे से बाहर निकल गया तो राज सोचता रह गया कि तीरथ किस तरह का आदमी है। उसे सिवाय प्रेम करने के और कुछ सूझता ही नहीं। दुनिया में और बहुत-से काम हैं जहाँ इनसान अपनी बुद्धि और विवेक का प्रयोग कर सकता है, लेकिन यहाँ तो प्रेम के सिवाय और कुछ है ही नहीं। जब से राज तीरथ से मिला था, उसने यही अनुभव किया कि तीरथ को प्रेम करने के सिवाय और कुछ नहीं आता। शायद इसका कुछ और भी कारण था। तीरथ के पास रुपये थे। ये रुपये कहाँ से आये, उसने किससे हथियाए और उनको अन्धा-धुन्ध क्यों खर्च कर रहा है, यह राज को मालूम न था। तीरथ को कल की चिन्ता न थी। अगर यह सब पूँजी समाप्त हो गई तो वह क्या करेगा;

उसके नौकर-चाकर क्या करेंगे; उसकी फर्म का क्या होगा; शायद तीरथ को इन बातों का गुमान भी न था। शायद वह सोचता हो कि लड़की पाकर इस समय तो वह खुश है। यही रास्ता है जिस पर वह चल रहा है। औरत और उसका प्रेम—वह इसी चक्कर में घूम रहा था।

जब से तीरथ ने इस नई औरत को पाया, वह कुछ और लापरवाह-सा हो गया था। पहले वह राज के कमरे में आया करता था, उससे बातें किया करता था, व्यापार को उन्नत करने की तरकीबें सोचता रहता था, एक लाख के दो लाख बनाने के ढंग बनाता था। लेकिन जब से इस औरत ने उसके जीवन में प्रवेश किया वह दिन-रात बाहर रहने लगा। वह अक्सर रात के दो बजे घर आता और चुपके से अपने कमरे में चला जाता और मुँह अन्धेरे ही फिर निकल जाता। कभी-कभी वह ऑफिस में मिलता, खोया-खोया-सा। परन्तु आजकल उसके कपड़े बहुत ही बढ़िया होते थे। उसने दो-तीन नये सूट सिलवाये थे। बालों को कंघे से खूब बनाकर और जमाकर, भड़कीली नैकटाई लगाकर वह दफ्तर में आता था। कुछ देर राज से और कुछ देर क्लर्कों से बातें करता और चला जाता।

एक दिन तीरथ राज को बुलाकर ले गया। रात का समय था। राज और तीरथ दोनों समुद्र-तट पर चले गए। अभी चाँद न निकला था। नारियल के वृक्ष इस अन्धेरे में काले देवों की भाँति दिखाई दे रहे थे और हवा अपने नर्म आंचल से रेत को सहला रही थी। तीरथ ने रेत को मुट्ठी में लेते हुए कहा—"मुझे उस औरत से प्रेम हो गया है।"

"तो इसमें बुरी बात क्या है?' राज ने समुद्र की ओर देखते हुए कहा। समुद्र पर अन्धेरे की एक विस्तृत चादर फैली दिखाई पड़ती थी।

"मैंने काफी समय बाद प्रेम किया है। इससे पहले ईराक में मुझे एक लड़की से प्रेम हो गया था। इस लड़की ने मुझ पर न जाने क्या जादू कर दिया कि मैं उसके बिना जिन्दा नहीं रह सकता, जब तक उससे मिल न लूँ चैन नहीं आता। इसी कारण से मैं इन दिनों तुमसे नहीं मिल सका। आशा है तुम मुझे क्षमा कर दोगे।"

"क्षमा की क्या बात है। प्रेम करना पाप नहीं," राज ने नारि-

यल के वृत्तों की ओर देखते हुए कहा।

"मैं भी इसे पाप नहीं समझता, लेकिन इस जाल में ऐसा फँस गया हूँ कि निकलने का रास्ता ही दिखाई नहीं देता।"

"शादी क्यों नहीं कर लेते!"

"वह नहीं मानती।"

"वह क्यों?"

"कहती है, अभी ठहर जाओ।"

"कोई कारण बताती है क्या?"

"नहीं तो। लेकिन मैं 'ना' में जवाब सुनने का कायल नहीं हूँ। यों तो मैं जीवन में बहुत संकीर्ण-हृदय रहा हूँ, इस जीवन में किसी की परवाह मैंने नहीं की, बड़े-बड़े तूफ़ान आये पर मैं चट्टान की तरह स्थिर रहा। लेकिन जब कभी कोई स्त्री मेरे पास से गुज़री मैं लड़खड़ाकर गिर पड़ा। मेरी सदा से यही इच्छा रही कि मेरी जोवन-संगिनी या मेरी प्रेमिका एक सुन्दर, रूपवती स्त्री हो। उसके बाल अमावस की रात से घने काले हों, उसके नयनों में चमक हो और शरीर के उभारों में चुम्बक-जैसा आकर्षण हो। जब मैं उसकी ओर देखूँ तो ऐसा लगे जैसे मैंने गुलाब के फूलों का एक बाग देख लिया। अजीब बात है कि मैं बदसूरत औरत से प्रेम नहीं कर सकता। मैं स्वयं बदसूरत हूँ, शायद इसलिए। जब से मैंने इस औरत को देखा है मुझे अनुभव हो रहा है कि इसके प्रेम ने मुझे पलक झपकते में आ घेरा है, और मेरे अस्तित्व को ऐसा झंझोड़ डाला है जैसे गर्मियों में तूफ़ान चीड़ के जंगल से गुजरकर आगे निकल जाय। प्रेम भी राज शराब की तरह होता है—मीठा-मीठा और नशीला।"

"जिस प्रकार शराब अधिक पी जाने से इनसान बीमार हो जाता है उसी प्रकार प्रेम...!" राज कहता-कहता चुप हो गया और आकाश की ओर देखने लगा। रात अधिक हो गई थी और हवा में कुछ नमी और शीतलता आ गई थी और चाँद उभर आया था। तट पर राज और तीरथ ही बैठे थे। इस वातावरण में पास के मकान ऊँघ-से रहे थे। दूर से एक कुत्ते के भौंकने की आवाज़ आई। दोनों चौंक पड़े।

"चलो घर चलें," राज ने तीरथ की ओर देखा।

"कल मैं तुम्हें उस लड़की से मिलाऊँगा", तीरथ ने मुस्कराकर कहा।

और वे दोनों पैदल चलने लगे। तीरथ अपने विचारों में मग्न था और राज सोच रहा था कि इस गुत्थी को कैसे सुलझाया जाय? यह अन्धा प्रेम अच्छा नहीं। वह प्रेम ही क्या, जो मनुष्य को विवेक-हीन कर दे। और फिर तीरथ—जो जीवन के उतार-चढ़ाव से पूर्णतया परिचित था, जीवन की धोखा-धड़ी से भिज्ञ था, एक औरत के सम्बन्ध में बच्चा बन गया। राज उस औरत से मिलने के लिए आतुर था जिसने तीरथ को अपने शिकंजे में जकड़ लिया था और तीरथ की तमाम शक्तियों पर छापा मार लिया था। राज यही सोच रहा था और दोनों सड़क पर चुपचाप चले जा रहे थे। सड़क साफ़ और चौड़ी थी। दोनों ओर समुद्र था। शायद दोनों ने चाँद की ओर न देखा, जिसकी किरणें उस जगह को अपनी चाँदनी से नहला रही थीं। अब जहाँ वे पहुँच गए थे वहाँ अँधेरा था, पीछे रोशनी थी, सड़क के दोनों ओर झाड़ियाँ उगी हुई थीं और दूर तक नारियल के वृक्ष नज़र आ रहे थे—अलग-अलग नहीं, बल्कि झुण्ड-के-झुण्ड। दूर एक कुत्ता भौंका और पास के मकान से बच्चे के रोने की आवाज़ आई। चारों ओर जीवन था परन्तु निन्द्रा-ग्रस्त, स्थिर, और चेतना-हीन। केवल चांद अपनी चाँदनी से उस भाग को सींच रहा था और राज सोच रहा था कि प्रेम करना पाप नहीं, किसी लड़की से प्यार करना अनुचित आचरण नहीं, लेकिन शर्त यह है कि प्रेम इनसान को जानवर न बना दे। उस प्रेम से क्या लाभ जो मनुष्य को सन्मार्ग से भटका दे। कल वह उस स्त्री से अवश्य मिलेगा और देखेगा कि उसमें आखिर वे क्या गुण हैं जो तीरथ को पथ भ्रष्ट कर रहे हैं!

: ८ :

जब दिन चढ़ आया तो राज ने खिड़की में से झाँककर देखा। बाहर बाग़ में फूल मुस्करा रहे थे और उनकी भीनी-भीनी सुगन्ध हवा में

 घुल रही थी। हवा तेज़ और स्वच्छ थी। उसका जी चाहा कि बाहर

जाकर बाग़ में टहले। लेकिन इतने ही में तीरथ ने उसके कमरे में प्रवेश किया। उसने एक बढ़िया सूट पहना हुआ था, बालों में सुगन्धित तेल था और कपड़ों से इत्र की खुशबू आ रही थी। जब इनसान प्रेम करता है तो वह सचमुच सुन्दर बनने का प्रयास करता है। उसने लाल रंग की नैकटाई लगाई हुई थी, जिसका रंग उसके सूट के रंग से मेल खाता था। तीरथ ने उसे भी तैयार होने को कहा। थोड़ी देर में राज भी तैयार हो गया। उसने भी एक बढ़िया सूट पहना, बूट को मैले कपड़े से साफ़ किया, बालों में कंघी की। तीरथ ने उसे नैकटाई लगाने के लिए कहा, लेकिन उसने इन्कार कर दिया। उसे नैकटाई से बहुत घृणा थी। नैकटाई लगाकर उसे लगता था जैसे फाँसी का फन्दा गले में पड़कर रह गया हो। न जाने लोग कैसे टाई बाँधे रहते हैं। हाँ, कुछ नौजवानों को टाई बड़ी सजती है। विभिन्न रंगों के सम्मिश्रण से सचमुच एक विशेष प्रभाव पैदा होता है और शायद नैकटाई इसीलिए पहनी जाती है कि आँखें विभिन्न रंग देखें और सौन्दर्य की भावना पैदा हो।

तीरथ कमरे में टहल रहा था जैसे वह जाने के लिए विकल हो। राज ने शीघ्रता से सूटकेस में से एक रूमाल निकाला, अपनी जेब में रखा और उसके साथ हो लिया।

कार एक चौड़ी सड़क पर से होती हुई एक जगह आकर रुकी। सड़क के दोनो ओर दुकानें थीं—बहुत ही छोटी-छोटी। तीरथ कार में से उतरा और मुस्कराता हुआ आगे बढ़ा। जिस ओर वह बढ़ा, उधर का रास्ता भी साफ़ न था, केवल कुछ झोपड़ियाँ सी दिखाई दे रही थीं। पास ही पानी का एक गढ़ा था। वहाँ से दोनों आगे बढ़े और सामने एक फूटा-सा मकान नज़र आया। नीचे मोची और चमार रहते थे। सामने चिकें लटकी हुई थीं। इधर-उधर मुर्ग़ियाँ अपने बच्चों समेत कूड़े-करकट में से गन्दी चीज़ें खा रही थीं। तीरथ एक जीने की ओर बढ़ा और दोनों सीढ़ियाँ चढ़कर एक कमरे के सामने रुक गए। दरवाजा खटखटाया गया। एक नौकर आया। उसने तनिक इन्तजार करने के लिए कहा। थोड़ी देर बाद कमरे का दरवाज़ा खुला और वे दोनों

अन्दर चले गए। कमरा काफ़ी खुला था। दायें-बायें एक सोफ़ा सैट लगा हुआ था, जिस पर अभी-अभी एक नया गिलाफ़ चढ़ाया गया था। बाईं ओर एक ड्राइङ्ग टेबिल रखी हुई थी। सोफ़ा सैट के पास एक ग्रामोफ़ोन रखा हुआ था और पास ही तिपाई पर रिकार्ड रखे हुए थे। इस कमरे के साथ दो कमरे और थे। एक रसोई-घर था और दूसरा कमरा बन्द था। जहाँ सोफ़ा सैट रखा हुआ था वहाँ उसके पास दीवार में एक खिड़की थी। तीरथ चुपचाप बैठा हुआ था, परन्तु उसके पाँव हिल रहे थे। उसे शायद इस बात पर क्रोध आ रहा था कि वह अभी तक क्यों नहीं आई। तीरथ से शायद और इन्तज़ार न हो सका और वह अपनी जगह से उठकर साथ वाले कमरे का दरवाज़ा खटखटाने लगा। अन्दर से आवाज़ आई—

"ठहरिये, अभी आती हूँ, कपड़े पहन लूँ।"

तीरथ यह सुनकर मुस्कराया और चुपके से अन्दर चला गया। एक-दो मिनट बीते होंगे कि दरवाज़ा फिर खुला और एक स्त्री अपनी साड़ी के पल्लू को सँभालती हुई अन्दर आई। स्त्री ने राज की ओर देखा और कुरसी पर बैठ गई। तीरथ आकर राज के पास बैठ गया।

"आप हैं हमीदा, और आप मेरे हिस्सेदार मिस्टर राज। राज साहब आपसे मिलने के बड़े इच्छुक थे, इसीलिए मैं इन्हें अपने साथ खींच लाया।"

राज ने लड़की की ओर देखा। इतने में एक नौजवान उसी कमरे से निकला।

"आप महबूब अली—यानी हमीदा के भाईजान," तीरथ ने परिचय कराया।

हमीदा ने महबूब अली को देखा और मुस्कराई, और महबूब अली एक कुरसी पर बैठ गया।

महबूब अली की आयु २५ से ऊपर न होगी। काफ़ी सुन्दर और गठा हुआ शरीर। जबड़े की हड्डियाँ मज़बूत और सख़्त। आँखें छोटी-छोटी, कद बीच का, होंठ मोटे-मोटे, माथा चौड़ा और बाल घुँघराले।

 महबूब अली ने जब राज से हाथ मिलाया था तो उसे यह भी मालूम

हो गया था कि उसके हाथ कड़े और मज़बूत हैं।

"तीरथ साहब अक्सर आपका ज़िक्र करते रहते हैं। मैंने कई बार इनसे कहा कि भई, उन्हें ले आइए। आपकी तारीफ़ सुनते-सुनते तो हमारे कान पक गए। अच्छा हुआ आपसे मुलाक़ात हो गई और अब तो आप आते ही रहेंगे। इस घर को अपना घर समझिये और यह घर तीरथ साहब का ठहरा।"

राज ने हमीदा की ओर देखा, चेहरे पर हल्का-सा पेंट किया हुआ था, शरीर भरा-भरा, रंगत दूध की भाँति साफ़। उसके चेहरे के कटाव इतने अधिक आकर्षक न थे लेकिन ऊपरी बनावट और उसके होठ, जो पतले और लाल-लाल थे, उसके रूप में वृद्धि कर रहे थे। हमीदा के शरीर से स्पष्ट था कि वह अच्छा खाना खाती है और खाती रही है। उसे अच्छे कपड़े पहनने का शौक़ है।

"कोई ठण्डी चीज़ पिलाइये, गर्मी बहुत ज्यादा है," राज ने महबूब अली की ओर देखते हुए कहा। और हमीदा ने नौकर को आवाज़ दी। नौकर आया। उसको बहुत-सी चीज़ें लाने के लिए कहा गया। इसके बाद हमीदा उठी और ग्रामोफ़ोन पर एक रिकार्ड लगाया—

"मुहब्बत करके भी देखा,
मुहब्बत में भी धोखा है।"

"नूरजहाँ बहुत अच्छा गाती हैं," राज ने बातचीत का सिल-सिला शुरू करते हुए कहा।

"अरे साहब, नूरजहाँ का जवाब नहीं," महबूब अली ने नाखून काटते हुए कहा।

तीरथ हमीदा की ओर देख रहा था और मुस्करा रहा था।

"और हाँ, मैं तो आपका इन्तज़ार नौ बजे से कर रही थी। कल आप पूरे नौ बजे आने को कह गए थे। मैं ठीक नौ बजे तैयार हो गई थी, लेकिन आप पूरे दस बजे आये, यानी एक घण्टा लेट?" हमीदा ने आँखें मटकाकर कहा।

"वास्तव में राज साहब तैयार न हुए थे। इन्होंने नहाने-धोने में

देर कर दी। मैं तो आठ बजे ही तैयार हो गया था," तीरथ ने उत्तर दिया।

"देखिये साहब, इतनी देर न लगाया कीजिये," हमीदा ने होठों को निकालते हुए कहा, "हम लोग आपका इन्तज़ार करते रहते हैं और आप लोग इतनी देर लगाकर आते हैं। क्यों राज साहब, मैं ठीक कहती हूँ न? आप बोलते ही नहीं, जवाब तो दीजिये।"

महबूब बीच में बोल उठा—"हाँ, हमीदा ९ बजे ही तैयार हो गई थीं।"

"साड़ी तो अभी पहन रही थीं," तीरथ ने पहलू बचाते हुए कहा।

"पहले एक साड़ी पहन चुकी थीं। अब उसे उतारकर दूसरी पहन रही थीं," महबूब अली ने तुरन्त जवाब दिया।

"इन्हीं बातों ने तो मुझे मोह लिया है," तीरथ ने पाँव हिलाते हुए कहा। महबूब अली चुप रहा। राज ने अनुभव किया कि तीरथ का यह वाक्य महबूब को अच्छा नहीं लगा। महबूब अली तो हमीदा का भाई था। शायद उसे इसीलिए यह वाक्य अच्छा नहीं लगा था।

राज ने महबूब अली की ओर देखा। वह हमीदा की ओर देख रहा था और हमीदा तीरथ की ओर देख रही थी और राज इन तीनों की ओर देख रहा था। उसे इस वातावरण में एक तरह की बनावट दिखाई दी जो बाहर से सुन्दर थी, परन्तु अन्दर न जाने क्या छिपा था। बाहर की टीप-टाप से आँखें चौंधिया जाती थीं, लेकिन अन्दर का कुछ नहीं मालूम था और अगर राज को मालूम होता तो वह यहाँ क्यों आता।

इतने में नौकर चार गिलास लेकर आया और मेज़ पर रख गया। चारों ने एक-एक गिलास उठाया और मुँह से लगाया। इतने में बिस्कुट आ गए। चारों ने बिस्कुटों की ओर हाथ बढ़ाये। किसी ने रिकार्ड बदल दिया था और अब सहगल की आवाज़ आने लगी—'जब दिल ही टूट गया।' और जब यह रिकार्ड खत्म हो गया तो हमीदा ने पूछा—"आज का प्रोग्राम?"

 "जो कहिये," तीरथ ने मुस्कराते हुए कहा।

"किसी रेस्तराँ में खाना खाया जाय और तीन बजे का शो देखा जाय। क्यों राज साहब ?" हमीदा ने बेतकल्लुफ़ होते हुए कहा।

"मंजूर," राज ने धीमी आवाज़ में कहा।

"तो मैं तैयार हो जाऊँ।"

"और मैं भी, अगर आप इजाज़त दें।" महबूब ने उठते हुए कहा।

और दोनों अन्दर चले गए। जब महबूब और हमीदा अन्दर चले गए तो तीरथ को ऐसा अनुभव हुआ कि उनको इकट्ठे अन्दर जाना नहीं चाहिए था। दरवाज़ा बन्द था लेकिन अन्दर से चटखनी नहीं लगाई हुई थी। राज की आँखें बराबर दरवाज़े पर थीं और उसकी टाँगें निरन्तर हिल रहीं थीं मानो उसे कोई मानसिक व्याकुलता सता रही हो।

आख़िर तीरथ से न रहा गया और उसने दरवाज़ा खटखटाया। अन्दर से आवाज़ आई—"आइये।" तीरथ मुस्कराता हुआ अन्दर चला गया। जब तीरथ अन्दर चला गया तो महबूब बाहर आ गया। उसके एक हाथ में बूट था और दूसरे में पॉलिश की डिब्बी। वह राज के पास बैठ गया और पॉलिश करने लगा। थोड़ी-सी देर में पॉलिश हो गई। उसने अन्दर जाकर पैंट पहनी, एक सुन्दर-सी टाई लगाई और तैयार हो गया। इतने में तीरथ और हमीदा भी बाहर आ गए। हमीदा ने होठों पर हल्की-सी लिपस्टिक लगाई हुई थी और एक के बजाय दो चोटियाँ की हुई थीं। सब नीचे उतरे और कार में बैठे। यह फैसला हुआ कि पहले किसी रेस्तराँ में खाना खाया जाय और फिर साढ़े तीन बजे के शो में अंग्रेज़ी तसवीर देखी जाय। कार बड़ी तेज़ी से जा रही थी। अगली सीट पर महबूब बैठा था। उसके हाथ में सिगरेट का डिब्बा था। उसने राज को सिगरेट पेश की और राज ने मुस्कराते हुए सिगरेट लेकर सुलगाई और कार में उसका धुँआ छोड़ दिया। तीरथ हमीदा से बातें कर रहा था। इतने में कार एक रेस्तराँ के पास पहुँचकर खड़ी हो गई। हमीदा उतरते ही महबूब के साथ जा खड़ी हुई, और तीरथ राज के साथ। और चारों रेस्तराँ में चले गए। इस बीच में राज ने अनुभव किया कि हमीदा महबूब के

साथ मिल-बैठकर अधिक प्रसन्न होती है। वह इस बात का हर एक प्रयत्न करती कि बाहर निकलते समय उसे कोई तीरथ के साथ न देख ले। अगर कोई देखे तो महबूब के साथ देखे। चारों ने खाना खाया और बिल तीरथ ने चुकाया। बाहर निकलकर सब सिनेमा की ओर चले। वहाँ पहुँचकर फिल्म देखी और कार समुद्र के किनारे आकर रुकी। चारों किनारे पर टहलने लगे। तीरथ और हमीदा एक ओर हो गए और राज और महबूब अली एक ओर। और सहसा राज को क्रोध-सा आ गया। उसने क्रोध को रोकते हुए पूछा—"आपका नाम ?"

महबूब अली—"आप इतनी जल्दी मेरा नाम भूल गए।"

"आप हमीदा के भाई हैं ?"

"जी नहीं," महबूब अली मुस्कराया।

"आप क्या काम करते हैं ?"

"फिल्म में काम करने के लिए आया हूँ।"

"अभी तक काम नहीं मिला ?"

"नहीं तो। कोशिश कर रहा हूँ। आप कहीं दिलवा दीजिये। तीन साल से बम्बई में हूँ। घर से भागकर आया था, एक घर में हमीदा से मुलाकात हो गई। उसके बाद इसके यहाँ चला आया। बम्बई अजीब शहर है साहब—यहाँ न रहने के लिए घर मिलता है और न करने के लिए काम। दो साल से इन श्रीमतीजी ने सहारा दिया हुआ है। आख़िर इन्सान हूँ, जीवन से प्यार है, मरने को जी नहीं चाहता और सड़क पर सोने से रहा। फलस्वरूप ऐसा जीवन बिता रहा हूँ। मुझे यह ज़िन्दगी पसन्द नहीं। अगर कहीं काम मिल जायगा तो तुरन्त मकान तलाश कर लूँगा और वहीं जाकर रहूँगा।"

"आपने दो-चार वाक्यों में अपनी कहानी सुना डाली। आपने मेरी बहुत-सी ग़लत फ़हमियाँ दूर कर दीं," राज ने महबूब की ओर देखते हुए कहा।

"आपका तीरथ साहब से क्या रिश्ता है ?"

"पाँच-छः महीने से जानता हूँ।"

 "यानी खून का कोई रिश्ता नहीं !"

"जी नहीं।"

"काफ़ी बेवकूफ़ आदमी दिखाई पड़ते हैं," महबूब अली ने तीरथ की ओर देखते हुए कहा, "वे औरतों के चरित्र को नहीं जानते, और खासकर इस औरत के। वे अपना काफ़ी समय खराब करते हैं, पैसा भी, लेकिन..."

"लेकिन क्या?"

"कुछ न मिलेगा।"

"क्यों?"

"इसलिए कि मैं इस औरत को जानता हूँ और बहुत निकट से जानता हूँ। इसे किसी से मुहब्बत नहीं, केवल रुपये से मुहब्बत है। इसे मुझसे भी मुहब्बत नहीं। मुझे इसलिए रखा हुआ है कि मैं खूबसूरत हूँ और मुझे बाहर ले जाकर यह अपना पति बता देती है, भाई बता देती है, जैसे हालात होते हैं। लेकिन यह औरत किसी एक की होकर नहीं रह सकती।"

"वह क्यों?"

"हालात ही ऐसे हैं। इसने अपने-आपको ऐश्वर्य-भावनाओं के चक्कर में ऐसा फँसा लिया है कि वह इस चक्कर से निकल नहीं सकती।"

यह कहकर महबूब चुप हो गया, क्योंकि तीरथ और हमीदा आ रहे थे। तीरथ और हमीदा आए और बोले, "चलो राज चलें, काफ़ी देर हो गई।"

अब अँधेरा घना हो गया था। मकानों में बत्तियाँ जल गई थीं। ज़िन्दगी उसी अंदाज से भागी जा रही थी। कारें, मोटरें, सुन्दर लड़कियाँ और बदसूरत लड़कियाँ आपस में हँसती-खेलती हुई इधर उधर टहलती फिर रही थीं। केवल अंधेरे में एक प्रकार की शान्ति थी। आकाश नीला और निर्मल था और दूर पश्चिम में एक बड़ा-सा तारा टिमटिमा रहा था। समुद्र अपना असीम आंचल फैलाये आकाश को अपनी गोद में ले रहा था। प्रकृति के सौन्दर्य से अब भी शान्ति प्राप्त होती है परन्तु मानव-जीवन—उसमें कितनी हीनता है। उस भावना को लिये हुए राज कार में बैठ गया।

रास्ते में हमीदा ने राज को हँसाने की कोशिश की। तीरथ अपनी प्रेमिका के पहलू में बैठा खुश हो रहा था। महबूब अली सिगरेट सुलगाये चुपचाप बैठा था। यद्यपि चारों इकट्ठे बैठे हुए थे, परन्तु दिलों में अजीब उलझन थी। पास होते हुए भी चारों एक-दूसरे से बहुत दूर थे।

: ६ :

हमीदा को उसके घर के समीप उतारा गया और फिर अगली शाम का प्रोग्राम बनाया गया। हमीदा ने अर्थपूर्ण दृष्टि से तीरथ को देखा और महबूब अली सिगरेट पीता रहा। फिर दोनों अलग हुए। राज और तीरथ कार में बैठकर घर आए। रास्ते में तीरथ चुप रहा। उसने बात करने की कोशिश नहीं की। राज ने बात चलाने के लिए कहा—"चुप क्यों हो गए?"

"कुछ समझ में नहीं आता, क्या करूँ," राज ने झुँझलाकर कहा।

"भाई तुम अजीब आदमी हो। तुम्हारे पास किसी चीज़ की कमी है क्या? रुपया है, औरत है, कार है, और क्या चाहिए?"

"घर चलो, वहाँ बताऊँगा," तीरथ ने ड्राइवर की ओर देखते हुए कहा।

जब वे घर पहुँचे तो तीरथ ने कोट उतारते हुए कहा—"पहले यह बताओ कि यह औरत तुम्हें पसन्द आई?"

"अच्छी-खासी है लेकिन उम्र की पकी हुई है।"

"हमारे भी तो बाल सफ़ेद हो रहे हैं।"

"मेरा विचार है, निभ न सकेगी।"

"वह क्यों?"

"अगर वह अकेली होती तो शायद...।"

"अकेली तो है। महबूब अली तो उसका भाई है।"

"नहीं। तुम ग़लती पर हो। महबूब अली उसका भाई नहीं है। वह महबूब से प्रेम करती है और उस पर जी-जान से मरती है।"

"मैं कभी विश्वास नहीं कर सकता। वह कभी झूठ नहीं बोल सकती।"

"हमारी बात मान लो। हम तुमसे उम्र में छोटे हैं, लेकिन इन रहस्यों से अच्छी तरह परिचित हैं।"

"यह कैसे हो सकता है ?"

"अरे यार बात सीधी है। महबूब खूबसूरत नौजवान है। जब बम्बई में आया तो नौकरी मिली नहीं। हमीदा की नज़र इस पर पड़ी। उसने इसे घर पर रख लिया। महबूब को एक सहारा मिल गया और इसी सहारे से वह आज तक जीवित है।"

"अगर मैं यह सहारा तोड़ दूँ, हमीदा से कह दूँ कि इस इनसान को घर से निकाल दो, तो क्या वह मेरी बात टाल जायगी ?"

"ऐसी बात न कहना।"

"तुम मुझे क्या समझते हो ? क्या मैं इसी तरह उल्लू बनता रहूँगा ? कल मैं हमीदा से साफ-साफ कह दूँगा कि घर में या तो मुझे रखो या इस लौंडे को ? राज भाई, घर का सारा खर्च मैं उठाऊँ और मेरी ही बात न मानी जाय, यह कैसे हो सकता है ?"

"कोशिश करना बेकार है। मुँह की खाओगे।"

"खैर कल देखा जायगा।" और यह कहकर तीरथ बाहर निकल गया।

: १० :

इस घटना के बाद तीरथ अकेला हमीदा के घर जाता रहा। राज जानता था कि तीरथ जो-कुछ कहेगा, उसमें सफल नहीं होगा। वह महबूब अली को हमीदा के घर से न निकाल सकेगा। हमीदा ने पहले तो तीरथ को चकमा दिया कि महबूब उसका भाई है। शुरू में तीरथ ने इन बातों पर विश्वास किया, लेकिन जब महबूब का पूरा चरित्र उसके सामने आ गया तो वह महबूब को घर से निकलवाने के प्रयत्न करने लगा। परन्तु प्रयत्न असफल रहे। इतना अवश्य हुआ कि अब तीरथ और हमीदा ही साथ-साथ बाहर जाने लगे। अब तीरथ और हमीदा का

अधिक समय साथ ही बीतता। वे साथ-साथ खाना खाते, तीन बजे का शो देखते, रात को कार में फिरते, जूहू पर सैर करते, शराब पीते और इस प्रकार तीरथ का जीवन पूर्ण रूप से हमीदा का हो रहा। अब उसे ऐसा लगता जैसे वह हमीदा के बिना जी न सकेगा। उन दिनों वह हमीदा पर अंधाधुन्ध रुपये खर्च कर रहा था। हमीदा की हर इच्छा को पूर्ण करना उसने अपना धर्म-सा बना लिया था।

वह चाहता था कि धीरे-धीरे हमीदा पर पूरा अधिकार जमा ले, महबूब अली को घर से निकाल दे और फिर शादी कर ले। लेकिन सब प्रयत्न करने पर भी वह सफल न हुआ। इस बीच में महबूब अली राज से मिलने आया। राज उससे मिलते हुए कुछ घबराता था। महबूब अली उसे बिलकुल न भाया। उसके चरित्र से उसे घिन आती थी यद्यपि वह देखने में सुन्दर था और अच्छे कपड़े पहने रहता था और बातचीत मे भी नम्रता मे काम लेता था। आज जब महबूब राज के पास आया और राज ने ठीक ढंग से व्यवहार न किया तो वह उदास-सा हो गया। उसने बहुत ही नम्र और कोमल लहजे में कहा—
"आप मुझसे नफरत करते हैं ?"

"नहीं तो।"

"आपने मुझे पहचानने की कोशिश नहीं की।"

"आप अजीब-सी बातें करते हैं।"

"मैं अपने चरित्र की सफाई पेश करना चाहता हूँ।"

"इससे क्या होगा ?"

"मेरे दिल का बोझ हल्का हो जायगा।"

"बातें करने से कुछ नहीं होता, काम करने से बहुत-सी बातें साफ हो जाती हैं।"

"अगर काम न मिले तो इनसान क्या करे ?"

"आप काफी हट्टे-कट्टे और स्वस्थ दिखाई पड़ते हैं। आपको काम मिल सकता है और अवश्य मिल सकता है अगर आप पूरी कोशिश करें।"

 "मैं हर रोज लोगों से मिलता हूँ, मिन्नतें करता हूँ, चापलूसी

करता हूँ, इसके बावजूद भी नौकरी नहीं मिलती। इसी लिए मजबूर होकर यह ज़िन्दगी बिता रहा हूँ।"

"इस जीवन से तो मर जाना ही बेहतर है।"

"आपका खयाल ठीक है।"

"इस पर अमल कीजिएगा।"

"लेकिन आप मेरी बात तो सुन लीजिए। आपको शायद यह नहीं मालूम कि मुझे हमीदा से बिलकुल प्रेम नहीं। यह तो मैं आपको बता ही चुका हूँ कि मेरी मुलाकात उससे कैसे और कहाँ हुई, और वह मुझे किस तरह अपने घर लाई, उसके बाद उसने किस तरह मुझे अपने घर में रखा और आज तक मेरी किसी बात को भी नहीं टाला। और प्राइवेट ज़िन्दगी में मुझे अपना पति समझा और मैं—मुझे समझने की कोशिश कीजिये। ख़ुदा गवाह है, मुझे काम नहीं मिलता और अगर आज ही काम मिल जाय तो मैं हमीदा का घर छोड़ दूँगा और अलग एक कमरा लूँगा। एक-दो बार इस ज़लालत की ज़िन्दगी से छुटकारा पाने के लिए मैंने अलग कमरा ले भी लिया था और इधर-उधर काम करने की पूरी कोशिश भी की थी। लेकिन इतनी दौड़-धूप के बाद भी मुझे काम न मिला और इस बीच में हमीदा मुझे फिर पकड़कर अपने मकान में ले आई। उसने मेरे कमरे का किराया भी चुकाया और मुझसे माफ़ी माँगी, मेरे पाँव पड़ी, मेरी मिन्नतें कीं। आप शायद नहीं जानते, वह मुझे बहुत चाहती है। उसकी मुहब्बत का आप अन्दाज़ा नहीं लगा सकते। वह तीरथ को नहीं चाहती। वह कई बार मुझे बता चुकी है कि वह केवल रुपये के लिए अपना बदन बेच रही है। पर तीरथ को इस बात का यक़ीन नहीं आता और वे उसके पीछे पड़े हुए हैं और मुझे घर से निकालने पर तुले हुए हैं। वे हमीदा से लड़ते हैं, हमीदा मुझसे लड़ती है। घर में हंगामा मचा रहता है और मैं हूँ कि मेरा सिर शर्म से झुका हुआ है। राज साहब, मैं सच कहता हूँ कि मुझे यह ज़िन्दगी ज़रा भी पसन्द नहीं। मुझे इस जिन्दगी से नफ़रत है। मुझे अपने से नफ़रत होने लगी है कि मैं एक औरत के टुकड़ों पर पल रहा हूँ और एक ऐसी औरत के टुकड़ों पर, जो

दूसरों के साथ सोती है। तीरथ से पहले उसके पास और लोग भी आते थे। इनके आने से इतना तो ज़रूर हुआ कि और लोग आने बन्द हो गए और तीरथ का आना यों बन्द नहीं हो सकता कि उनके बिना घर का ख़र्च नहीं चल सकता। और भी अन्दर की बहुत-सी बातें हैं। बहुत ही ज़लील जिन्दगी है। जी चाहता है, यहाँ से भाग जाऊँ। दूर किसी शहर में जाकर काम करूँ, कोई-सा काम—मिल की मज़दूरी, सड़क की रोड़ी तोड़ना। कम-से-कम इस ज़िन्दगी से छुटकारा तो मिले। दिमाग़ की उलझनें तो दूर हों। आप ही बताइए, मैं क्या करूँ?"

"आप सोचते तो ठीक हैं पर उस पर अमल क्यों नहीं करते?" राज ने डरते-डरते यह वाक्य कहा।

"आप हमें कहीं नौकर करा दीजिए।"

"मैं कोशिश करूँगा।" राज ने सोच-विचारकर कहा।

यह कहकर महबूब आगे चला गया और राज सोचता रह गया—'अजीब-सा गोरख-धन्धा है। हमीदा महबूब अली को चाहती है और वह उस पर हर चीज न्योछावर करने को तैयार है। इधर तीरथ हमीदा पर मर मिटने के लिए तैयार है और जो-कुछ उसके पास है, उस पर ख़र्च करता है। लेकिन हमीदा उससे पसन्द नहीं करती। इन तीनों के बीच केवल रुपये का सम्बन्ध है, जिसने इस सबको एक अनोखे-से सम्बन्ध में जकड़ रखा है। इतनी गन्दगी और हीनता के बावजूद ये सब लोग इकट्ठे रह रहे थे। जीवन के दिन बीतते जा रहे थे, लेकिन जीवन में सुख नहीं था, शान्ति नहीं थी, चैन नहीं था। किसी-न-किसी चीज़ का अभाव अवश्य था जो इनको अप्राप्य थी और एक अन्धी शक्ति के प्रभाव से ये लोग अपने जीवन को एक अज्ञात मंजिल की ओर ले जा रहे थे।'

वह ये बातें सोच ही रहा था कि तीरथ उसके कमरे में आया और कहने लगा—"आज फैसला होकर रहेगा।"

"किस बात का फैसला?"

"हमीदा से।"

 "किस बात का?"

"उस घर में या तो महबूब अली रहेगा या मैं। भाई, रुपये मैं देता हूँ, घर का खर्च मैं उठाता हूँ और यह साहब यों ही घर में रहें। क्या इस आदमी को इस बात पर लज्जा नहीं आती कि एक औरत के टुकड़ों पर यह पड़ा है। मैं हमीदा से साफ कहूँगा कि आज वह इस बात का फैसला करे। मैं इन बातों से तंग आ चुका हूँ। महबूब अली मेरी जिन्दगी में रोड़ा बनकर रह गया है। जब तक इस रोड़े को न हटाऊँगा, हमीदा मुझसे शादी न कर सकेगी। एक बार महबूब अली का साथ छूट जाय, वह मेरी हो जायगी और मेरे साथ शादी कर लेगी।"

"वह तुमसे शादी नहीं करेगी," राज ने चिढ़कर कहा।

"क्यों?"

"वह तुमसे प्रेम नहीं करती।"

"मैं उसके प्रेम को खरीद सकता हूँ।"

"किस तरह?"

"रुपये से।"

"उसे महबूब से प्रेम है।"

"मैं उसे घर से निकाल दूँगा। हमीदा से साफ़-साफ़ कह दूँगा कि तुम्हारे शरीर का मालिक मैं हूँ। मैं तुम्हें रुपये देता हूँ इसलिए इस घर पर मेरे सिवा किसी और का अधिकार नहीं।"

"अगर उसने तुम्हारी बात न मानी?"

"तो मैं उसे छोड़ दूँगा। लेकिन वह मेरी बात मानेगी, क्योंकि वह बता चुकी है कि वह महबूब से तंग आ गई है। वह कब तक उसे खिलाती-पिलाती रहेगी। उसने तो सोचा था कि महबूब घर रहकर कुछ काम करेगा, नौकर होकर उसकी देख-भाल करेगा, उसके बुढ़ापे का सहारा बनेगा। लेकिन पाँच साल उसे घर में रखे हो गए। महबूब को केवल खाने-पीने और अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने के सिवाय कुछ नहीं आया। वह स्वयं महबूब को छोड़ने पर तैयार है। आज तुम मेरे साथ चलो। तुम्हारे सामने फैसला होगा। उठो, चलो, जल्दी कपड़े पहन लो—मेरा मतलब है, कपड़े बदल लो और चलो मेरे साथ।"

राज स्वयं इन झगड़ों से तंग आ चुका था—'ये हर रोज़ के झगड़े, न फ़ैसला ही होता, न नाव ही पार लगती, और न डूबती ही। आज प्रेम है तो कल घृणा। आज लड़ाई हो रही है तो कल सुलह हो रही है। उसका मस्तिष्क इस प्रकार का जीवन बिताने के विरुद्ध था और उसका जी चाहता था कि तीरथ को खरी-खरी सुना दे और अपने मन की भड़ास निकाले। उससे कहे कि यह क्या दशा है। क्या प्रेम और मुहब्बत के अलावा जीवन में कुछ नहीं है। प्रेम किये जाओ और जीवन बिताये जाओ—यह भी कैसा जीवन है। चौबीस घण्टे प्रेमिका की याद, और कुछ नहीं, बस उसी का रोना, उसी की पूजा। अब तो संसार प्रगति कर गया है। जीवन विद्युत्-गति से अग्रसर है लेकिन इनसानों के दिमागों में प्रेम की वही घिसी-पिटी कल्पना घर किये हुए है। वही लैला-मजनूँ और वही शीरीं-फरहाद का वन-वन मारे-मारे फिरना, मन में प्रेमिका का भूत और उसके बिछोह और विरह में आहें भरना, रोना, मनाना और अन्त में बिछुड़ जाना—जैसे जीवन में इनसान का कोई और ध्येय ही नहीं, मंजिल ही नहीं।' और यह सोचते-सोचते राज और तीरथ हमीदा के घर पहुँच गए। सदा की भाँति हमीदा और महबूब कमरे के भीतर थे और ऊँचे-ऊँचे स्वर में वाद-विवाद की आवाज़ सुनाई दे रही थी, जैसे दोनों आपस में लड़ रहे हों। जब उन दोनों को तीरथ के आने की सूचना मिली तो महबूब अली सबसे पहले बाहर आया और उसने राज और तीरथ से हाथ मिलाया। तीरथ उठकर कमरे में चला गया और कुछ देर बाद तीरथ और हमीदा भी बाहर आ गए। महबूब ने तीरथ और हमीदा को कनखियों से देखा और तीरथ ने नाटक के अधम नायक की भाँति महबूब की ओर देखा। महबूब के चेहरे पर दुःख और क्रोध के भाव थे, परन्तु वह काफ़ी गम्भीर दिखाई दे रहा था। उधर तीरथ क्रोध से दाँत पीस रहा था और सोच रहा था कि बात किस तरह शुरू की जाय और किस तरह समाप्त की जाय। हमीदा उन दोनों की ओर
 देख रही थी कि किस तरह दोनों का मुकाबला किया जाय। हमीदा की

स्थिति अजीब हो गई थी। वह महबूब को चाहती थी, उससे प्रेम करती थी, इसमें लेश-मात्र भी सन्देह न था। परन्तु महबूब कुछ न कमाता था और हमीदा के सम्बन्धी, उसके मित्र, उसके भाई, सभी हमीदा की रोटी पर जीवित थे। इधर तीरथ रुपये के नशे में चूर, प्रेम की आग में झुलस रहा था। वह स्वयं कुरूप था, परन्तु अपनी गोद में एक ऐसी स्त्री देखना चाहता था जिससे वह अपनी सौन्दर्य-भावना को तृप्त कर सके और अपनी बदसूरती कम कर सके। अगर वह सुन्दर नहीं है तो उसकी प्रेमिका तो सुन्दर है और बहुत-से उसकी प्रेमिका को देखकर ईर्ष्या की आग में जलते हैं। इस बात के ज्ञान से उसे प्रसन्नता होती थी कि किसी-न-किसी तरह तो वह दूसरों से बढ़कर ही है। परन्तु वह हमीदा पर पूर्ण अधिकार जमाना चाहता था। वह यह नहीं चाहता था कि हमीदा का अस्तित्व केवल इस लिए हो कि वह रात-भर उसके साथ सो सके। वह चाहता था कि हमीदा उसके मन की शान्ति बन जाय, उसकी जीवन-संगिनी बन जाय और महबूब को छोड़ दे—सदा के लिए छोड़ दे। यह बीच का रास्ता ठीक नहीं। रुपये वह अंधाधुन्ध उड़ा रहा था। अपने व्यापार को एक ओर डालकर, मित्रों से दूर रहकर, नौकरों को वेतन न देकर वह केवल अपने प्रेम का पोषण कर रहा था और यह चेष्टा कर रहा था कि वह शीघ्रातिशीघ्र अपने उद्देश्य में सफल हो जाय। ऐसा न हो कि इधर रुपये समाप्त हुए और उधर हमीदा ग़ायब। उस स्थिति में वह हमीदा पर दबाव न डाल सकेगा और इस घर में उसका इतना सम्मान न रहेगा जितना आज है। इसलिए वह आज फैसला करना चाहता था। इस समय तो बैंक में रुपये मौजूद थे और वह इनकी शक्ति से हमीदा के रूप को ख़रीद सकता था, उसके नख़रे उठा सकता था, उसके सब ख़र्च उठा सकता था। वह सोच रहा था कि विषय कैसे छेड़ा जाय कि साँप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे।

हमीदा ने उन सबकी ओर देखा। महबूब कपड़े पहनकर तैयार हो चुका था। वह अपने दाँतों से नाख़ून काट रहा था। हमीदा उसे तैयार देखकर जल-भुन गई।

"कहाँ जा रहे हो।"

"बाहर जा रहा हूँ।"

"क्यों ?"

"काम की तलाश में।"

"कुछ खा-पी तो लो ?"

"भूख नहीं है।"

"दिमाग़ ठीक है ?"

"ठीक है।"

"दिखाई नहीं पड़ता।"

"समझने की कोशिश करो।"

"जहाँ जाता है, जाने दो इसे।" तीरथ ने जल-भुनकर कहा।

"आप चुप रहिए। मैं आज फैसला करके रहूँगी।"

"किस बात का फैसला ?" महबूब अली ने हमीदा की ओर रोष-पूर्ण नज़रों से देखकर कहा।

"यही कि तुम कहाँ जा रहे हो।"

"इसे जाने भी दो।"

"आप चुप रहिए। यह मेरा और महबूब का मामला है।"

तीरथ भीगी बिल्ली की भाँति चुप होकर बैठ गया।

"इससे पहले तुम इस तरह कभी नहीं गये थे!" हमीदा ने पुकारते हुए कहा।

"सच्ची बात तो यह है कि मैं तीरथ को बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

"तो कमाकर लाओ।"

"मैं कोशिश कर रहा हूँ।" और यह कहकर महबूब कमरे से बाहर निकल गया।

"अगर यह कमाकर न लाए तो मैं क्या करूँ। मेरे लिए कोई और रास्ता है ? तुम ही बताओ, आप ही बताइए राज साहब ! मैं बिलकुल अकेली हूँ। इस घर में केवल मैं ही कमाने वाली हूँ। अगर मैं कुछ न कमाकर लाऊँ तो सब लोग भूखों मर जायं—मैं ही नहीं, मेरी माँ, मेरे भाई, मेरे रिश्तेदार। ये सभी लोग यहाँ आते हैं, मुझे

गालियां देते हैं। मुझे रंडी कहते हैं और रुपये लेते हैं और खा-पीकर चले जाते हैं। अगर मैं घर वालों को एक महीने भी रुपये न भेजूँ तो गालियों से भरा हुआ खत लिखते हैं और मुझे वेश्या, बदकार, रंडी और दुनिया के वे तमाम बुरे नाम देते हैं जो एक बाज़ारी औरत के धरे जा सकते हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूँ? मैं महबूब को इस घर में इसलिए लाई थी कि वह कुछ कमाकर खिलायगा। लेकिन वह ऐसा न कर सका। शायद वह उम्र-भर ऐसा न कर सके। मैं उसे चाहती हूँ, प्यार करती हूँ। उसके बिना जीवित नहीं रह सकती।" सुन लीजिए तीरथ साहब—आप भी सुन लीजिएगा। इन भेदों को छिपाने से क्या फ़ायदा? मैं महबूब को नहीं छोड़ सकती। वह मेरी कमज़ोरी बन गया है। मैं आपको भी नहीं छोड़ सकती। आप मुझे रुपये देते हैं। आपकी भावनाएं सच्ची हैं। आप मुझे अच्छी बनाने की कोशिश करते हैं लेकिन यह सब बेकार है, बिलकुल बेकार। इस सवाल का कोई हल नहीं, सिवाय इसके कि महबूब कमाना शुरू कर दे और मैं उसके साथ रहने लगूँ। लेकिन महबूब को ाने क्या हो गया है। वह कमाता ही नहीं। वह लँगड़ा नहीं, काना नहीं, अपाहिज नहीं। इसके बावजूद भी वह नहीं कमाता। शायद मेरी मुहब्बत ने उसे अपाहिज बना दिया है। शायद मेरी देख-भाल, मेरे स्नेह और मेरे प्रेम ने उसे कहीं का न रखा। शायद वह अब किसी काम के योग्य नहीं रहा। लेकिन अजीब-सी बात है कि मैं उसको छोड़ नहीं सकती। रात को मेरा और उसका बहुत झगड़ा हुआ। वह कहने लगा—'तीरथ को यहां मत आने दो। मैं उसकी उपस्थिति को सहन नहीं कर सकता। तीरथ की निगाहों में ज़हर है। उसकी बातों में चुभन है। उसकी हँसी में तलवार की काट है। उसकी निगाहें मुझे इस बात की याद दिलाती हैं कि मैं बहुत ही निर्लज्जतापूर्ण जीवन बिता रहा हूँ। एक औरत के टुकड़ों पर पड़ा हूँ। इस निर्लज्जता, इस हीन-भाव, इस पाप का ज्ञान मुझे आज तक न हुआ था। या तो तीरथ को रखो या मुझे।' और यह कहकर उसने मेरी रान पर ज़ोर से चुटकी ली।"

यह कहकर हमीदा ने दाईं टाँग पर से साड़ी हटा दी और अपनी साफ़, चिकनी, मोटी रान पर एक गहरे नीले रंग का निशान दिखाया। "यह देखो कितना वहशी और कमीना है। मुझे मारने से भी नहीं डरता। राज साहब, आप भी देखिए इस निशान को। शर्म नहीं आती, कम्बख़्त मुझे जाने क्या समझता है। कमाकर मैं खिलाऊँ और मुझ ही पर रौब डाले।"

यह कहकर हमीदा चुप हो गई और उसकी आँखों से आँसू छलकने लगे। तीरथ का भी गला भर आया। राज ने हमीदा की गोरी चिकनी रान देखी तो उसकी कनपटियाँ जलने लगीं। बड़ी निर्लज्ज औरत है—उसने सोचा—यह कौन-सा समय था! यह किस प्रकार का प्रेम था! यह किस प्रकार के सम्बन्ध थे! प्रेम और रुपया—न तीरथ को सुख-शान्ति है न हमीदा को चैन; और महबूब तो बहुत ही ज़लील जीवन बिता रहा है। और फिर यह रान—यह लुभावना मांस, नर्म और गोरा, रेशम की भाँति मुलायम, गदराया चिट्टा—राज ने सोचा। उसका मस्तिष्क सुलग उठा। उसका मस्तिष्क एक गहरे, अज्ञात, अथाह अन्धेरे में डुबकियाँ खाने लगा। उसका जीवन औरत के प्यार से वंचित था। वह एक शर्मीला-सा युवक था, जिसके मन में औरत की इज़्ज़त थी। वह औरत को पवित्र और एक सुन्दर चीज़ समझता था। उसे प्राप्त करने के लिए विकल रहता था। लेकिन जब कभी औरत पास आती, उसका साहस न होता कि अपनी भावनाओं को उस पर व्यक्त कर सके। वह सदैव सोचता कि अगर औरत ने इन्कार कर दिया तो उसका क्या हाल होगा। लेकिन हमीदा की इस हरकत ने उसकी भावनाओं को भड़का दिया था, उसके मस्तिष्क को उत्तेजित कर दिया था। क्या यह हरकत जान-बूझकर की गई थी? क्या रान का यह प्रदर्शन किसी उद्देश्य से लिया गया था अथवा अनायास ही हो गया था। इसका क्या मतलब था? राज का जी चाह रहा था कि सोचता जाय और अँधेरा बढ़ता जाय और अन्धेरे के खड्ड में और कुछ न हो। न रुपये की आवश्यकता हो, न इनसान को अपना अन्तःकरण बेचना पड़े। और फिर यह दूषित हरकत, यह

हीनता से भरा जीवन, और ये सुन्दर क्षण और चाँद-जैसी सुन्दर-स्त्री—यह जीवन कितना असंतुलित था। और वह सोचता गया और चुपचाप बैठा रहा। अब तीरथ और हमीदा आपस में बातें कर रहे थे। राज ने इजाजत ली और कमरे से बाहर चला आया।

: १२ :

वह शहर के उस भाग में पहुँच चुका था जहाँ काफ़ी घनी आबादी थी। उसने इमारतों को देखा—एक-मंज़ली, दो-मंज़ली, तीन-मंजली, छः मंजली, गगन-चुम्बी। ये गाड़ियाँ, ट्रामें और असंख्य जन-समुद्र। हर व्यक्ति अपने काम में मगन था। बग़लों में फ़ाइलें दबाए हुए, कारों में बैठे हुए, लोग आ-जा रहे थे, हर व्यक्ति दौड़-धूप का शिकार था। किसी के मुख पर शान्ति न थी। हर ओर अशान्ति और दुर्दशा फैल रही थी। उसकी आँखों के सामने मिलों का धुआँ धीरे-धीरे वायु-मंडल में रेंग रहा था और आकाश में बादलों के टुकड़े विचरण कर रहे थे। हवा गर्म और नमी से बोझल थी। जिस जगह वह खड़ा था वहीं कुछ भिखारी बैठे हुए थे और उनके निकट ही कुछ झोंपड़े थे। बहुत ही गन्दी और मैली-कुचैली जगह थी। कुछ बच्चे नंग-धड़ंग इधर-उधर घूम रहे थे—काले-काले, पेट बढ़े हुए, नाक से पानी बहता हुआ। और औरतें मैली-सी फटी हुई धोतियां पहने अपने नवजात शिशुओं को दूध पिला रही थीं। उनकी छातियां सूखी हुई थीं। बालों में धूल अटी हुई थी और हाथ गन्दे और मैले थे। झोंपड़ों के निकट समुद्र धीमे-धीमे साँस लेकर हिलोरें ले रहा था। कुछ मछुवे मछलियाँ पकड़ रहे थे। वे छोटी-छोटी नौकाएं लेकर समुद्र में दूर तक चले जाते थे। लेकिन इन झोंपड़ों के पास एक और बिल्डिंग थी, जहां पशुओं का बध किया जाता था। बीमार भेड़ें और बकरियां भोले-भाले इनसानों की भाँति एक शैड में बैठी हुई अपनी मौत की प्रतीक्षा कर रही थीं। इस बिल्डिंग के ऊपर मोटे-मोटे, अत्यन्त कुरूप और क्रूर गिद्ध बैठे हुए थे, जो बचा-खुचा गोश्त, अंतड़ियाँ और अन्य गन्दी चीजें खाकर ऊँघ रहे थे। इन गिद्धों को देखकर उसे इनसानों का

ध्यान आ गया, जो ठीक इन्हीं की भाँति मोटे और कुरूप होते हैं, जो इन्हीं की भाँति इनसानों का खून चूसकर ऊँघते रहते हैं। अन्तर केवल इतना है कि ये लोग कोठियों और अट्टालिकाओं में रहते हैं और गिद्ध बिजली के तारों पर और खम्भों पर विश्राम करते हैं। लेकिन अगर यह बिजली का तार सहसा जल उठे तो गिद्धों का क्या होगा? और अगर ये झोंपड़ियों में रहने वाले, जो भेड़ों की तरह हैं, एक साथ संगठन कर लें तो?—वह बहुत दूर की बात सोच रहा था—बहुत दूर की बातें, निरर्थक बातें। और फिर वह एक जगह आकर रुक गया। यहाँ से वह बस में बैठ गया। उसने बस के अड्डे का टिकट लिया—इस प्रकार समय कट जायगा और शायद उसके मस्तिष्क का सन्तुलन ठीक हो जायगा, और इधर-उधर के जो विचार उसके परेशान दिमाग में घुस आए थे, शायद अपने निकलने का रास्ता बना लेंगे। उसने इधर-उधर देखना आरम्भ किया—ऊँची-ऊँची इमारतें, पक्की सड़क, कहीं सड़क बन रही थी और किसी जगह रौलर कंकड़ों को दबाकर समतल कर रहा था। और लोग 'क्यू' में खड़े होकर बसों की प्रतीक्षा कर रहे थे। ऊँची-ऊँची इमारतों से उसे घृणा हो गई थी। ऊँची-ऊँची इमारतें और उनके सामने फुटपाथ पर बैठे हुए लोग भीख माँग रहे थे। मिलों से निकलता धुआँ बिलकुल एक बड़े अजगर की भाँति दिखाई दे रहा था, जिसने लाखों करोड़ों इनसानों के स्वास्थ्य को खा लिया था। और इन मिलों के मालिक बड़े मजे से ऊँघते रहते हैं, उन बड़े-बड़े पण्डों की भाँति जो हरिद्वार में गंगा की पौड़ियों पर बैठे रहते हैं—इस प्रतीक्षा में कि नये यजमान कब आयं और वे धर्म, राम, कृष्ण के नाम पर उनको धन दे जायं। यह अजीब दुनिया है, जहाँ गिद्ध मजे से ऊँघते हैं और इनसानों का भेड़ों की भाँति बध किया जाता है।

: १३ :

दूसरे दिन राज काफी देर से उठा। सूरज चढ़ चुका था और धूप बरामदे में आ चुकी थी। उसका जी न चाहता था कि अभी

बिस्तर से उठे, और अगर वह उठ भी जाय तो करेगा क्या ? उसने खिड़की खोली और बाहर की ओर आँखें फाड़कर देखा—आकाश निर्मल और नीला था और मन्द-मन्द हवा चल रही थी। चीकू और नारियल के वृक्ष सूरज की किरणों में स्नान कर रहे थे। दूर तट पर समुद्र की लहरें शोर मचा रही थीं। उसके जी में आया कि वह इसी समय सीधा समुद्र के किनारे चला जाय। और इस विचार के आते ही उसने जूता पहना और बाहर निकल आया। तीरथ का कमरा खुला था—शायद वह स्नान कर रहा था। उसका नौकर जूतों पर पॉलिश कर रहा था। नौकर ने उसकी ओर मुस्कराकर सलाम किया और उसने उसके सलाम का जवाब दिया और फिर सीढ़ियाँ उतर गया। मकान से बाहर आकर, एक छोटे-से संकीर्ण रास्ते से होकर वह समुद्र की ओर बढता गया। समुद्र बहुत दूर न था, बल्कि बहुत ही निकट था। वह जल्दी-जल्दी पग उठाता गया। सुबह की ताज़ा हवा उसके बालों से खेल रही थी। उसने दो-तीन बार साँस अन्दर खींचा और फिर जूता उतारकर रेत पर चलने लगा। रेत नर्म था और पाँव उसमें धँसते जाते थे। और सामने समुद्र अपना विशाल वक्ष फुलाये, उसे अपनी गोद में लेने के लिए उद्यत था। उसकी नजरों के सामने समुद्र-ही-समुद्र था। नीला पानी, फैला हुआ नीला पानी मौन,शिथिल और गर्म—केवल तट के पास एक हलचल-सी प्रतीत होती थी। लहरें आती थीं, टकराती थीं और फिर वापस चली जाती थीं। केवल दाहिनी ओर कुछ मकान थे। लेकिन उसकी नज़र के सामने पानी की एक विस्तृत चादर फैली हुई थी समुद्र एक दूसरा आकाश प्रतीत होता था जिसमें मछुओं की नौकाएं कबूतरों की भाँति उड़ती हुई दिखाई पड़ रही थीं। वह अकेला तट पर खड़ा था, मौन, निश्चेष्ट, उदास और हवा उसके बालों को चूम रही थी और उसके पाँव से लहरें टकरा रही थीं। ऊपर नीला आकाश था और उसकी नज़रों के सामने एक और आकाश था, उसी की भाँति नीला और सुन्दर, प्यारा और मोहक। यहाँ आकर उसको शान्ति मिलती थी। उसकी आत्मा को एक चैन-सा प्राप्त होता था, जैसे वह अपने

दिल का गुबार और मन का बोझ यहाँ आकर उतार सकता था। यह समुद्र उसकी बातें सुनेगा और किसी से न कहेगा—उसके मन में यह भावना जाग्रत हुई। उसे इस जीवन से घृणा हो गई थी। दफ्तर में कोई काम न था और जिन लोगों से वह मिलता था वे उसके मर्म को समझते न थे, उसके गम से अपरिचित थे। वह किससे अपने मन का हाल कहे? और वह क्या कहे? वह क्या कहना चाहता था, उसे किस बात का दुःख था, यह बात आज तक उसके मस्तिष्क में भली प्रकार स्पष्ट न हो सकी थी कभी-कभी वह विचार करता कि कहीं-न-कहीं कुछ दोष, कुछ कमी अवश्य है। उसे यह जीवन पसन्द नहीं, बिलकुल पसन्द नहीं। यह लोग पसन्द नहीं आए। इनका रहन-सहन, इनकी बातें, इनके उद्देश्य—सब-कुछ बनावटी थे। इन सब पर गिलाफ चढा हुआ था और अगर इस गिलाफ को उतार दिया जाय तो इनसान नंगा दिखाई दे। जीवन का कोई ठोस, स्थिर मूल्य न था। हर ओर अराजकता थी, लूट-खसोट का बाजार गर्म था और इस लूट-खसोट के बाजार में वह अपने जीवन की समस्याएं हल करना चाहता था। परन्तु उसे कोई मार्ग न मिलता था। उसके मन, मस्तिष्क और आत्मा के चारों ओर गहरा अँधेरा फैला हुआ था। एक काली स्याह अँधेरी रात; जिसमें न चाँद चमकता था, न सितारे नाचते थे। केवल विषाद काला लबादा ओढ़े उसकी आत्मा पर छा गया था। कभी-कभी रोशनी की क्षीण किरणें इस स्याह लबादे में प्रवेश करने की चेष्टा करती थीं। वह बिलकुल एक उजड़े हुए महल की तरह था जिसमें तीव्र हवा फर्राटे भरती हुई अजीब आवाजें पैदा करती है। राज वहाँ देर तक न खड़ा रह सका और वापस लौट पड़ा। रास्ते में छोटे-छोटे केकड़े उसके पाँव की चाप सुनकर अपने छेदों में घुस जाते। छोटे-छोटे केकड़े, लाल, नीले, पीले, कभी-कभी तो वे फूलों की भाँति दिखाई पड़ते। घर के पास आकर उसने जूता पहन लिया और अपने कमरे में पहुँचा। कमरे में तीरथ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

 उसे देखते ही कहने लगा, "अरे भाई, अजीब आदमी हो।

दस बजे का समय हो गया और महाशय ने मुँह भी नहीं धोया।"

"क्या बात है?"

"आज बहुत ही अच्छा प्रोग्राम है।"

"मैं आज बाहर न जा सकूँगा।" राज ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"वह क्यों?"

"जी नहीं चाहता।"

"मियाँ, ऐसी जगह ले चलूँगा जहाँ जीवन-भर न गये होगे। आखिर घर में बैठकर क्या करोगे? प्रिय मित्र, कुछ किया करो, सारे दिन घर में बैठे रहने से कुछ न होगा। लोगों से मिला करो। अगर और कुछ नहीं हो सकता तो किसी लौंडिया से इश्क करो। अमा, अच्छा ख़ासा चेहरा है, लम्बा क़द, गेहुआँ रंग, भारी आवाज़ है और तुम्हारा व्यक्तित्व लोगों को प्रभावित कर सकता है। यह सब-कुछ होते हुए भी तुम अकेले, चुपचाप रहते हो। ख़ैर आज चलो मेरे साथ। रेस में चलेंगे वहाँ देखना तुम लोगों की दशा। लाखों रुपये चुटकी में उड़ा ले जाते हैं। अगर रुपयों की रेल-पेल देखनी हो तो आज चलो हमारे साथ। सुन्दर स्त्रियों को जी भरकर देखना हो तो आओ हमारे साथ। उठो, बस अब चलो। देखो, इस समय दस बज रहे हैं। आध घण्टे में नहा-धो लो। नाश्ता या खाना हमीदा के यहाँ खायंगे और फिर उसको साथ लेकर रेस चलेंगे। तुम भी कुछ खेलना, शायद भाग्य चमक उठे और एक दिन में लखपति बन जाओ। लो अब तैयार हो जाओ। मैं बरामदे में टहलता हूँ।"

यह कहकर तीरथ बरामदे में चला गया और राज नहाने लगा। राज ने दिल में सोचा कि घर में अकेले बैठना अच्छा नहीं। उसे बाहर जाना चाहिए। उसे यह देखना चाहिए कि दुनिया में क्या होता है। उसे लोगों से मिलना चाहिए, बातें करनी चाहिएं। शायद इस प्रकार उनके दिल का बोझ हल्का हो सके। इस सोच-विचार में वह नहा लिया और कपड़े पहनकर तीरथ के साथ चल लिया। कार में बैठकर वे हमीदा के घर पहुँचे। हमीदा घर पर थी, लेकिन महबूब अली

नहीं था। पूछने पर हमीदा ने बताया कि वह दो दिन से ग़ायब है। मालूम नहीं वह कहाँ गया। बताकर भी नहीं गया। यह बातें बताते समय हमीदा के होंठ कँपकँपा उठे। उसकी काली आँखों में उदासी की झलक आ गई। लेकिन तीरथ के होठों पर मुस्कराहट थी। तीरथ आज प्रसन्न था। उसे लग रहा था जैसे आज वह इस घर का मालिक बन गया है। जैसे आज हमीदा उसकी हो गई है। रुपयों ने प्रेम को मोल ले लिया है। रुपयों ने प्रेम को पराजित कर दिया है। 'आज हमीदा मेरी है, केवल मेरी है, वह किसी दूसरे की नहीं हो सकती', तीरथ ने सोचा, 'अब वह हमीदा से शादी करेगा। उसे एक नया घर लेकर देगा और वे दोनों इकट्ठे रहेंगे—केवल वह और हमीदा, अन्य कोई नहीं—नहीं, अन्य कोई भी नहीं। अब वह महबूब को ओर आँख उठाकर भी न देखेगी। वह महबूब को अपने घर भी न आने देगा। केवल वह स्वयं ही हमीदा का स्वामी होगा और वह उसकी आज्ञा का पालन करेगी, किसी अन्य की आज्ञा का नहीं।' आज वह कितना प्रसन्न था जैसे उसे कारूँ का खजाना मिल गया हो। वह हमीदा की ओर देख-कर मुस्कराया। आज हमीदा बड़ी ही सुन्दर दीख रही थी। शायद वह बहुत प्रसन्न थी कि महबूब से उसका साथ छूट गया। अच्छा हुआ वह चला गया—सदा के लिए चला गया था। कम्बख्त न कुछ कमाता था और न कमाने की चेष्टा करता था। केवल उसकी कमाई पर जीता था वह कब तक उसे कमा कर खिलाती। तीरथ यही कुछ सोच रहा था। परन्तु वह हमीदा के आन्तरिक विचारों से अनभिज्ञ था। उसे क्या मालूम कि हमीदा क्या सोच रही थी। उसे महबूब के जाने का दुःख था, या वह प्रसन्न थी, यह पूछने का साहस तीरथ में न था। वह इस बात को सुनकर प्रसन्न हो गया था कि महबूब दो दिन से घर नहीं आया। यह वास्तव में उसकी विजय थी। उसके चमकाते हुए रुपयों की विजय थी। उसकी चमकती हुई कार की विजय थी।

कुछ ही समय में हमीदा पफ़-पाउडर लगाकर तैयार हो गई और सब कार में आकर बैठ गए। ड्राइवर ने कार स्टार्ट की और कार महा-लक्ष्मी की ओर बढ़ने लगी।

रास्ते में कोई ख़ास बात नहीं हुई। तीनों चुप रहे। राज महबूब अली के सम्बन्ध में सोच रहा था कि इस समय बेचारा कहाँ होगा, क्या करता होगा, कहाँ सोया होगा। तीरथ अपने विजय के नशे में मुस्करा रहा था और हमीदा अपने दुःख को छिपाये तीरथ की ओर देखकर मुस्करा रही थी। इतने में कार रुक गई।

सामने रेस-कोर्स था। रेस-कोर्स के बाहर जमघट लगा हुआ था और कटहरे के बाहर कारें खड़ी हुई थीं। लोग कारों में आ रहे थे। कुछ पैदल भी आ रहे थे। कुछ टैक्सियों और घोड़ा-गाड़ियों में से उतर रहे थे। एक बड़ी भीड़ थी जो हाथों में कापियाँ, पैंसिलें लिये 'क्यू' में खड़ी टिकट ले रही थी और अन्दर जा रही थी। छोटे-छोटे लड़के चिल्ला-चिल्लाकर कापियाँ बेच रहे थे। हर व्यक्ति के हाथ में रेस की कापी थी और वह कापी देखने में तन्मय था। तीरथ ने तीन छोटी-छोटी कापियाँ और तीन पैंसिलें खरीद लीं। एक कापी हमीदा को और एक कापी राज को दी और एक स्वयं रख ली। टिकट ख़रीद कर तीनों कटहरे के भीतर चले गए।

: १४ :

रेस-कोर्स वास्तव में कोलाहल और भीड़-भाड़ का स्थान है। यहाँ आकर इनसान सचमुच अपने को भूल जाता है। सामने घोड़ों के नम्बर लगे हुए थे—एक, दो, तीन, चार और उनके नीचे मशीन की खट-खट से बिकते हुए टिकटों की संख्या हाथ-के-हाथ लिखी जा रही थी। जो घोड़ा सर्वप्रिय होता था अर्थात् जिसके जीतने की सबसे अधिक सम्भावना होती थी उसके टिकट अधिक बिकते थे। लोग अपने होश-हवास गँवाकर टिकटघर की खिड़कियों की ओर भाग रहे थे। इधर सामने घोड़ों के नम्बर, उनके जॉकियों के नाम, और उनका वज़न और घोड़ों के लय लिखे हुए थे।

"गुरू सिंह, जॉकी बहुत अच्छा है।" कोई चिल्लाया।

"अरे यार, पिछली बार इस साले पर रुपया लगाया था, कहीं नजर नहीं आया।" दूसरे ने जवाब दिया।

"अरे, रामसिंह पर लगाओ, आज अवश्य जीतेगा।"

"मियाँ, इस पर न लगाना। कम्बख्त ऐन वक्त पर घोड़ा खींच लेता है और दूसरों से मिल जाता है।"

"घोड़ा अगर है तो रॉयल क्रूसेड।"

"बिलकुल बूढा खूसट।"

"राजकुमार पर लगाओ।"

"जॉकी अयोग्य है।"

"प्रेमलता का क्या भाव है?"

"भाव-वाव तो बहुत है। घोड़ा काम का है लेकिन Tiner अच्छा नहीं। आशा बहुत कम है।"

"चार-पाँच रुपये देना। मैं अभी वापिस करता हूँ।"

"अपनी किताबें दिखाना।"

"कौन-सा घोड़ा जीतेगा?"

"सुबह जब मैं घर से निकला तो सबसे पहले जो कार दिखाई पड़ी उसके नम्बर का पहला अंक ३ था। इसी पर लगाओ।"

"पंडित जी ने तो नम्बर ६ बताया है।"

"अरे यार पंडितों को नम्बर ज्ञात होता तो स्वयं सड़कों पर मारे-मारे क्यों फिरते?"

"मुझे तो एक जॉकी ने 'टिप' दिया है। यह 'टिप' कभी धोखा नहीं दे सकता। नम्बर ६, काले रंग का घोडा, जॉकी ने लाल रंग की टोपी लगाई हुई है।"

"आज बुधवार है। लाल रंग के लिए बहुत ही बुरा दिन है।"

"अगर मेरा घोड़ा जीत जाय तो भगवान् क़सम, महीने-भर की शराब का खर्च निकल आय।"

"शराब तो बम्बई में बन्द हो गई।"

"ब्लैक मार्केट में खूब मिलती है।"

"आज खद्दरधारी बहुत दिखाई देते हैं।"

"आज जवाहर जीतेगा।"

"बिलकुल नहीं। डाँवाडोल क़िस्म का घोड़ा है; कभी इधर, कभी उधर।"

लोग बातें कर रहे थे, कोई देख रहे थे, किताब पढ़ रहे थे, औरतों की ओर देख रहे थे, पत्नियों और प्रेमिकाओं को घोड़ों के नम्बर बता रहे थे। इधर आ रहे थे। उधर जा रहे थे। उधर 'बुकियों' के दस पन्द्रह स्टाल थे जहाँ धनी आदमी आकर रुपया लगाते हैं—एक सौ, दो सौ, तीन सौ, दस पाँच सौ बल्कि दस हज़ार, बीस हज़ार, पचास हज़ार। 'बुकी' चिल्ला रहे थे। सामने बोर्ड पर घोड़ों के नम्बर और भाव। जिस घोड़े के जीतने की अधिक संभावना होती है उसका भाव सबसे कम मिलेगा। नम्बर ६ पर पाँच हजार, नम्बर दस पर दस हजार, नम्बर सात पर पाँच हजार, नम्बर ८ पर बीस हजार। 'बुकी' कार्ड पर नम्बर और भाव लिखकर देता है और साथ में रकम। अगर घोड़ा जीत गया तो इसी भाव से बुकी इतने दाम दे देगा; वरना १० हज़ार हज़म। बीस हज़ार और पाँच सौ बुकी की जेब में।

इसी हलचल में घण्टी बजती है। लोग भागने लगते हैं—औरतें भी, मर्द भी। सभी पैवीलियन की ओर भागते हैं। रेस शुरू होती है। लोग दूरबीन लगाकर रेस देखते हैं। वे उस समय तक चुप रहते हैं जब तक घोड़े दौड़ते रहते हैं, हारने जीतने की पोज़ीशन स्पष्ट नहीं होती। घोड़े निकट आने लगते हैं। एक घोड़ा बहुत आगे है। एक आदमी चिल्लाता है—"राजा जी।"

"शट अप! राजा जी नहीं, जवाहर।"

"बकवास बन्द करो।"

"प्रेमलता।" कोई व्यक्ति बैंच पर खड़ा होकर चिल्लाता है। घोड़े और निकट आते हैं। प्रत्येक व्यक्ति देखता है—प्रेमलता आगे बढ़ रहा है। उसके साथ जवाहर है। सब लोग चिल्लाते हैं। गर्दन बढ़ाकर देखते हैं—'प्रेमलता, प्रेमलता' दोनों पैवीलियनों में लोग पागलों की भाँति चिल्लाते हैं, गला फाड़ते हैं। तीसरे पैवीलियन में लोग अपेक्षाकृत चुप रहते हैं। यह पैवीलियन बड़े-बड़े आदमियों का है। क्लब के सदस्यों का है। राजाओं, और पूँजीपतियों का है।

घोड़े भागते हैं, लोग भागते हैं और अन्त में क्या होता है ?—न प्रेमलता जीती है, न जवाहर। जीता है—टाटा।

"अरे यार ग़ज़ब किया टाटा ने। ठीक समय पर थूथनी निकाल ली। किसी को मालूम न था। सबसे पीछे था यह घोड़ा।"

"यह रेस सब फ्रॉड है।"

"जॉकी ने चार सौ बीस की है।"

"ट्रेनर ने जान-बूझकर यह हरकत की।"

"जॉकी ने जवाहर की लगाम खींच ली थी।"

"और राजा तो हाँफकर रह गया। जॉकी ने बहुत मारा-पीटा पर राजा में दम न था।"

"टाटा ने ग़ज़ब किया। क्या था इस पर ?"

"कौन-सा जॉकी था ?"

"पुराना आदमख़ोर।"

"किसी को मालूम भी न था।"

"क्या भाव ?"

"दस के चार सौ बीस।"

"बहुत कम टिकट बिके होंगे।"

और जो लोग हार गए थे उन्होंने अपने टिकट फाड़ डाले और अपनी-अपनी प्रेमिकाओं की ओर देखने लगे, प्रेमिकाएं मुस्कराने लगीं। 'कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। दूसरे घोड़े पर'—अब फिर खट-खट शुरू हो गई थी। लोग किताबें देख रहे थे। कुछ लोग हार-थककर चाय या सोडा पी रहे थे। कुछ लोग घोड़ों के नम्बर देख रहे थे। बहुत-सी वेश्याएं चेहरों पर सुर्खी-पाउडर मलकर गाहकों की खोज में आई हुई थीं। कुछ मनचले उन्हीं के पीछे लगे हुए थे। रेस-कोर्स वास्तव में एक बड़ी मण्डी है। राज यही सब-कुछ देख रहा था कि तीरथ और हमीदा उससे अलग होकर जाने कहाँ चले गए। 'अच्छा उन्हें जाने दो। मैं उनके साथ-साथ रहकर क्या करूँगा।' वह रेस-कोर्स देखता रहा। उन लोगों को देखने में तल्लीन हो गया जो रुपयों

 के लिए इतना शोर मचा रहे थे। इतना रुपया कहाँ से आता है ? और

लोग बिना झिझक, बे-सोचे-समझे रुपया खर्च कर रहे थे। किसी के मुख पर चिन्ता की छाया न थी। सब प्रसन्न और उत्साहपूर्ण दिखाई पड़ रहे थे। यह अनोखा मनोरंजन था। यहाँ रेस-कोर्स में भी तीन पैवीलियन थे—पहला दर्जा, दूसरा दर्जा और तीसरा दर्जा। वही रेल के डिब्बों वाला हिसाब—वही पूँजीवाद की व्यवस्था। जो अधिक दाम दे वह ऊँचे दर्जे के पैवीलियन में खड़ा हो जाय। यहाँ हिन्दू-मुसलमान का भेद न था, हिन्दू-सिख का फर्क न था, ब्राह्मण और हरिजन का भी भेद नहीं था, यहाँ वेश्या और कुलीन घराने की स्त्रियों में कोई अन्तर दिखाई न पड़ता था। यहाँ अगर कोई रिश्ता था तो केवल रुपये का—सिर्फ रुपये का। इन्सान बे-जान थे, हैवान थे, बुद्धि-हीन थे। यहाँ घोड़ों का अधिक सम्मान होता था। लोग घोड़ों को चूमते थे और उनके पैरों की धूल को माथे चढ़ाते थे। जीतने वाले जॉकी को परमात्मा से अधिक शक्तिमान मानते थे। उसके शब्दों को वेद और कुरान से अधिक श्रद्धेय मानते थे। और राज सब-कुछ देख रहा था और उसके जी में आया कि वह किसी घोड़े पर कुछ लगा दे। उधर, 'ट्रिपल पूल' था। पाँच रुपये लगाइये और एक लाख कमाइये। तीन रेसों में तीन घोड़ों के नाम बताइये या उनके नम्बर। अगर वही घोड़े जीत जायें तो आप 'ट्रिपल पूल' गीत गायेंगे और जीवन-भर ऐश करेंगे। पाँच रुपये से एक लाख—जुआ। सट्टा, व्यभिचार, वेश्या-वृत्ति—सब-कुछ यहाँ था। राज अब इधर-उधर घूमने लगा। उसने देखा कि तीरथ हमीदा की कमर में बाँहें डाले हुए इधर-उधर घूम रहा था। महबूब अली रूठकर चला गया था और हमीदा उसके साथ थी—चलो अच्छा हुआ। राज अकेला खड़ा हुआ बोर्ड की ओर देख रहा था कि किसी ने उसे सम्बोधित करते हुए पूछा—

"इस रेस में कौन-सा घोड़ा जीतेगा?"

राज ने मुड़कर देखा, उसके सामने एक लड़की खड़ी थी, वह घबरा-सा गया—"जी, मुझे कुछ नहीं मालूम, मैं रेस-कोर्स में पहली बार ही आया हूँ, और फिर बताने से लाभ क्या?"

"क्यों ?"

"मैं रेस खेलने का आदी नहीं हूं।"

"परन्तु आप यहां आये क्यों ?"

"रेस देखने के लिए।"

"वाह आप अनोखे आदमी हैं।"

"जी अनोखा नहीं, एक साधारण आदमी हूं।"

"आप चाय पियेंगे ?"

"आप बड़ी बे-तकल्लुफ हैं ?"

"और आप बहुत शर्मीले—तो आइये, चाय पियें।" राज लड़की के साथ चल दिया। उसने लड़की की ओर देखा, लड़की उसे अच्छी लगी। वह न मोटी थी, न पतली। शरीर का गठन आकर्षक था। उसने अपने जूड़े पर एक रूमाल लपेटा हुआ था। रेस्तरां में पहुँचकर लड़की एक मेज़ पर बैठ गई और अपना गॉगल उतारकर रख दिया।

दो काले कजरारे नयनों ने उसकी ओर देखा। उसने ऐसी आँखें कभी नहीं देखी थीं। वे कितनी सुन्दर और मोहक थीं, मानो अपनी मूक भाषा में कह रही हों— मैं अजनबी नहीं हूं, अपरिचित नहीं हूँ, मैं तुमसे भली-भांति परिचित हूं।'

"आपका नाम ?" लड़की ने अपनी कुहनियां मेज़ पर टिकाते हुए उससे पूछा—उसकी वाणी में रस था।

"राज— और आपका ?"

"शीला।"

शीला ने चाय का आर्डर दिया। उसने फिर शीला की ओर देखा और देखता ही चला गया। उसे शीला का चेहरा पसन्द आया, उसकी नाक पसन्द आई और उसके पतले-पतले होंठ पसन्द आये, जो इस समय खुले हुए थे और उसे निमन्त्रण दे रहे थे—'हमें चूम लो, हमें चूम लो।'

शीला को देखकर राज को एक अनोखे से सुख और आनन्द का अनुभव हो रहा था। उसकी आँखों में एक भीगी-भीगी चमक थी

और उसने इतना पतला और कसा हुआ ब्लाउज़ पहना हुआ था कि उसकी छातियों का मामूली-सा उतार-चढ़ाव भी साफ़ नज़र आता था। शीला उसके समीप बैठी थी और वह उसके शरीर की सुगन्धि का आनन्द ले रहा था। राज को इस बात का अनुभव हुआ कि इस लड़की को अपने शरीर का विशेष तौर पर ख्याल है। उसका शरीर कितना सुगठित है। शरीर को सजाने का उसे विशेष ढंग आता है। राज ने फिर शीला की ओर देखा और उसे लगा कि यदि यह लड़की उसे न मिली तो वह पागल हो जायगा, बिलकुल पागल हो जायगा। शीला ने बैरे को आवाज़ दी।

पीछे से किसी की आवाज़ आई—"हैलो शीला।"

राज ने मुड़कर देखा—एक नवयुवक उसके सामने खड़ा था दुबला-पतला, बाल बिखरे हुए, बहुत ही सादा कपड़े पहने हुए।

"आप हैं राज।" शीला ने परिचय कराते हुए कहा, "और आप हैं रोमेश—काफी बातूनी।"

"क्यों कुछ जीतीं ?"

"कुछ नहीं बल्कि हार गई।"

"और तुम ?"

"मैं तो कभी रेस नहीं खेलता।"

"तो आज यहाँ किस तरह आये ?"

"भाई, पहली बार आया हूँ, दोबारा कभी नहीं आऊँगा।"

"वह क्यों ?"

"अजब बदतमीज़ी है—शोर मचाने के अतिरिक्त और काम ही नहीं। यहाँ तो वे लोग आयें जिनके पास हज़ारों रुपये हों और जो हारकर भी माथे पर बल न लायें, जो इनसानों की जगह घोड़ों की इज़्ज़त करें; जो ब्लैक मार्किट करके..."

"देखो, ऐसी बातें न करो, सी० आई० डी० वाले पकड़ लेंगे। मैं कई बार कह चुकी हूँ कि ऐसी जगहों पर ऐसी बातें न किया करो मगर तुम हो कि ऐसी ही बातें किया करते हो।"

"अच्छा भाई अच्छा, मैं चला, सलाम।" और रोमेश चला गया।

"ये साहब क्या काम करते हैं ?" राज ने पूछा ।

"मुझे कुछ नहीं मालूम । एक-दो बार चन्दा लेने आए थे, उसी सम्बन्ध में बातें हुई थीं । काफी समय बाद आज मिले ।"

"आप क्या काम करती हैं ?"

"मैं नाचती हूँ ।"

"फिल्म में या स्टेज पर ?"

"दोनों पर ।"

"काफ़ी रुपये कमाती होंगी ?"

"जी नहीं, पेट भर जाता है । चाय पीजिये न, ठण्डी हो रही है ।"

"आपने मुझसे क्यों बात की, यानी इस घनी भीड़ में आपने मुझे ही क्यों ताका ?"

"सवाल काफ़ी टेढ़ा है । इसका उत्तर यह भी हो सकता है कि आप अकेले खड़े थे ।"

"यह कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं है ।"

"आप ठीक कहते हैं, Love at first Sight" शीला ने मुस्कराकर कहा ।

"मैं आपसे ऐसी आशा कदापि नहीं करता ।"

"आप आवश्यकता से अधिक खरी-खरी बातें करते हैं—वास्तव में मैं अकेली खड़ी थी और मेरे पास आप अकेले खड़े थे और आप कुछ उदास थे—आँखों में निराशा की काफ़ी झलक थी—मैं इधर से गुज़री, काफ़ी रुपये हार गई थी, आपको देखा, मैंने बुला लिया और आप आ गए—पेस्टरी खाइए ।"

"मेरे पास रुपये बहुत कम हैं ।"

"चिन्ता न कीजिये । मुझे रुपयों की आवश्यकता नहीं है आपने मुझे ग़लत समझा है ।" यह कहकर शीला एक-साथ चुप हो गई, मानो बर्फ के ढेर से टकरा गई हो । उसकी आँखें उदास-सी हो गईं और वह चंचलता और चपलता उसके चेहरे से एक क्षण के लिए ग़ायब हो गई । शीला ने जल्दी-जल्दी चाय पीना शुरू किया । रेस्तराँ

में काफ़ी लोग जमा थे। सिंगिल चाय और लेमन-सोडा पी रहे थे और घोड़ों, जाकी और रुपयों की बातें कर रहे थे। शीला ने सहसा चाय समाप्त की, बैरा को बुलाया, पैसे देने लगी कि राज ने हाथ बढ़ा दिया। वह चुप हो गई। कँपकँपाते हुए होंठों पर हल्की-सी मुस्कान आ गई। शीला उठ खड़ी हुई—"अच्छा अब आज्ञा दीजिए। बड़ी संक्षिप्त मुलाक़ात हुई है।"

वह जाने लगी तो राज ने पूछा—"आपका पता?"

"मैरीन लाईन, हक़ लॉज, दूसरा फ्लोर" और वह साड़ी के पल्लू को सँभालती हुई चली गई। राज ने उसकी ओर देखा—वह रेस्तरां में से गुज़र रही थी, उसका क़द लम्बा था, शरीर सुगठित था और उसे साड़ी बाँधने का ढंग आता था। अब वह चली गई थी, दृष्टि से ओझल हो गई थी। राज वहीं बैठा रहा। राज सोच रहा था—क्या ही अच्छा होता यदि वह न जाती। वह इतनी जल्दी क्यों चली गई? क्या उसकी बातें रोचक नहीं थीं?—हाँ, वह चुप रहा। थोड़ी-सी बातें थीं और वह भी रूखी-फीकी—यह ठीक है। उसे यह लड़की पसन्द थी। लेकिन क्यों?—लड़की जवान थी, उसका शरीर अच्छा था, उसके चेहरे का कटाव अच्छा था। इससे पूर्व भी उसने सुन्दर लड़कियाँ देखी थीं लेकिन यह लड़की उनसे अलग थी, बिलकुल अलग-थलग। यह उनसे अधिक सुन्दर नहीं थी, लेकिन उसे पसन्द थी। शायद लड़की ने भी उसे पसन्द किया था। पहले उसी ने बात की थी। लड़की उसे अवश्य पसन्द करती होगी—उसने स्वयं क्यों बुलाया? और फिर चाय के लिए आर्डर दिया। वह कितनी स्वस्थ थी। उसमें जीवन की झलक थी और एक आकर्षण था। वह अकेला था, लड़कियाँ उससे खुलकर बातें न करती थीं। और वह हमेशा उदास, अकेला और दुःखी-सा रहता था। जीवन में पहली बार किसी लड़की ने उसकी ओर झांका था और ऐसी नज़रों से देखा था। वह बिना कुछ कहे चली गई थी। वह कुछ उदास दिखाई दे रही थी। क्यों? उसे क्या मालूम। पहली भेंट में उसे क्या मालूम हो सकता था। जब वह

दुबारा मिलेगी तो वह उससे पूछेगा कि वह उदास क्यों रहती है; उसे किस बात का दुःख है। क्या वह उसके दुःख का भागी हो सकता है?

राज ने इधर-उधर देखा—लोग चाय पीकर चले गए थे। रेस की घण्टी बज चुकी थी। घोड़ों ने दौड़ना शुरू कर दिया था। वह रेस्तराँ से बाहर निकला। बाहर लोग चिल्ला रहे थे, शोर मचा रहे थे घोड़ों का नाम ले-लेकर उछल रहे थे—"पद्मनी, पद्मनी, बैक अप, बैक अप, बैक अप।" कोलाहल मचा हुआ था। हर आदमी इस इन्तज़ार में था कि उसका घोड़ा जीत जाय और वह धनवान बन जाय। रेस इस प्रकार समाप्त हो जाती है। जीतने वाले टिकटों को कैश कराने के लिए झटपट खिड़कियों की ओर जाते हैं और हारने वाले टिकटों को क्रोध में फाड़ देते हैं। हारने वाले अपने घोड़ों को गालियाँ देते हैं, जॉकी को गाली देते हैं और फिर दूसरी रेस शुरू हो जाती है। इस प्रकार दस-बारह रेस होती हैं। लोग रुपया लगाते हैं। सब यही चाहते हैं और यही आशा करते हैं कि वे जीत जायंगे और फिर कार खरीदेंगे, कोठी बनायंगे, नई प्रेमिका लायंगे, विवाह करेंगे, बच्चे होंगे और वे बाप का आदर करेंगे। इसका एक और रूप भी है—वे अपने यार-दोस्तों को निमन्त्रण देंगे, कार लेकर उनके मकानों की खिड़कियों के नीचे खड़ी करेंगे और फिर हार्न बजायंगे, 'अबे क्या तू भी कार में सैर कर सकता है। देख—इधर देख, इस कार को देख'—परन्तु जब हॉर्न बजता है तो वह किसी दूसरे की कार होती है। हारे हुए जुआरी इधर-उधर देखते हैं—अब तो कुछ न था, न प्रेमिका, न कार, न कोठी, केवल अपने चार बच्चे, एक पत्नी, एक खोली और 'कल राशन कैसे आयगा'—फिर वही भाग्य का रोना। यह अनोखा खेल है। आमोद-प्रमोद का अनोखा साधन है। इस आमोद-प्रमोद का ध्यान आते ही उसे तीरथ और हमीदा का ख़याल आ गया। वे कहाँ होंगे? क्या कर रहे होंगे? वे उसे कहाँ मिलेंगे? शायद वे अब उसको नहीं मिल सकते। इतनी भीड़ में वे कहाँ दिखाई देंगे। अच्छा, कल मिल लूँगा। रात को मिल लूँगा। वह चला। रेस-कोर्स से निकलने से पहले उसे फटे हुए टिकट नज़र आये। उदास चेहरे, उदास आँखें, लोग गाली बकते हुए, सिर हिलाते हुए चले जा रहे थे।

आये थे हँसने के लिए, जा रहे थे रोते-पीटते हुए। कुछ लोग खुश थे। शायद उन लोगों ने कुछ रुपया जीता हो, परन्तु अधिक लोग हारकर आये थे। राज ने सारी भीड़ में देखा—न उसे हमीदा दिखाई पड़ी और न तीरथ। उसने शीला को भी देखना चाहा, परन्तु वह भी न दिखाई दी। वह चुपचाप आगे बढ़ आया। सड़क के किनारे-किनारे कारों की भीड़ थी, टैक्सियों का ताँता बँधा था परन्तु अधिकतर लोग पैदल जा रहे थे। पास ही स्टेशन था। शायद वे लोग उधर ही जा रहे थे। वह भी उधर ही हो लिया। पास से एक मोटर गुज़री। किसी ने हाथ हिलाया। उसने देखा—शीला हाथ हिला रही थी। उसने भी हाथ हिलाया। मोटर चली गई और थोड़ी-सी धूल हवा में तैरती हुई नज़र आई।

अब राज के सामने ऊँची-ऊँची इमारतें थीं। पास ही एक मिल मुँह उठाये आकाश की ओर देख रही थी और मुँह से गन्दा भूरा धुँआ निकाल रही थी। राज सोचता गया और आगे बढ़ता गया। वह आज कुछ खुश था। एक अनजान-सी खुशी उसके रोम-रोम में समा रही थी। उसके एकान्त जीवन में एक और सूरत उभर रही थी। वह एक अनजान भावना का आलिंगन कर रहा था और दूर पश्चिम में सूरज डूब रहा था और उसकी विदा होती हुई किरणें ऊँचे-ऊँचे मकानों की छतों को चूम रही थीं। राज ने एक गहरा सांस भरा और तेज़ी से क़दम उठाता हुआ स्टेशन की ओर चल दिया।

: १५ :

दूसरे दिन जब राज तीरथ से मिला तो तीरथ क्रोध से लाल-पीला हो रहा था। उसकी आँखें अंगारे-सी जल रही थीं—शायद वह रात-भर न सोया था। "कल शाम कैसी गुज़री ?" राज ने तीरथ को खुश करने के ध्येय से पूछा।

"कमबख़्त महबूब ने मेरी ज़िन्दगी हराम कर रखी है। न जाने वह रेस में कहाँ से टपक पड़ा। उसे देखते ही हमीदा ने मेरे प्रति अपने व्यवहार में रूखापन पैदा कर लिया और अलग होकर उससे

बातें करने लगी। मैं वहाँ अकेला खड़ा रहा। वे दोनों चाय पीने चले गए और मैं उन्हें दूर से देखता रह गया। वे हँस-हँसकर बातें करने लगे जैसे दोनों आपस में कभी झगड़े न थे। वे काफ़ी देर तक बातें करते रहे और चाय पीने के बाद मेरे पास आये। हमीदा ने कहा—"अब हम दोनों में मेल हो गया है। महबूब अली आज वापस घर आ जायगा।" और वह मुस्करा पड़ी। मेरी जेब में हाथ डालकर दस रुपये का नोट निकाल लिया और महबूब अली को दे दिया और उसने कहा कि रात को वह अवश्य घर पहुँच जायगा। दस रुपये का नोट लेकर महबूब अली चला गया। जाने से पहले उसने मेरी ओर मुस्कराकर देखा। मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि अब मैं क्या करूँ। मैं नहीं चाहता कि महबूब अली हमीदा के साथ रहे। हर प्रकार का प्रयत्न करता हूँ कि हमीदा महबूब अली को छोड़ दे। उसे समझाता हूँ और समझाने पर वह मान जाती है। जब महबूब अली उसके सामने आता है तो वह हर बात भूल जाती है। पागलों और दीवान की तरह उसके पीछे भागती है। मन में आता है कि उसे जान से मार दूँ। महबूब अली का गला घोंट दूँ ताकि हमेशा के लिए वह नर्क-लोक में पहुँच जाय।" यह सब-कुछ तीरथ ने क्रोध में कहा और वह दाँत पीसने लगा।

राज ने मुस्कराते हुए कहा—"इस समस्या का एक ही हल है।"

"वह क्या?"

"तुम हमीदा को छोड़ दो, और अगर उसे नहीं छोड़ सकते तो एक बात करो।"

"बताओ?"

"रुपये मत दो।"

तीरथ ने यह सुना और चुप हो गया। उसे राज की ये बातें अच्छी नहीं लगीं। वह कई महीनों से लगातार हमीदा पर रुपया पानी की तरह बहा रहा था और सदैव यह चाहता रहा था कि किसी तरह हमीदा ठीक रास्ते पर आ जाय और उसे अंगीकार कर ले। इसी धुन में वह रुपये खर्च कर रहा था।

इतने में तीरथ का नौकर आया और चाय का एक प्याला रखकर बोला—"बाबूजी, राशन के लिए रुपये चाहिएं, धोबी को रुपये देने हैं, बिजली का बिल और मकान का किराया चुकाना है। कल मकान-मालिक आया था। वह कह रहा था कि छः महीने से किराया नहीं दिया गया। अगर इस महीने किराया न दिया गया तो नोटिस मिल जायगा।"

"उससे कह दो कि बाबू कहीं भागकर नहीं जा रहे हैं, किराया दे दिया जायगा। ये लो राशन के लिए रुपये।"

"बाबूजी, मेरी तनख्वाह ?"

"कल दूँगा।"

"मुझे बहुत ज़रूरत है। मेरी लड़की बीमार है अगर समय पर रुपये न मिले तो बेचारी मर जायगी।"

"कह दिया कल दे दूँगा, आज मेरे पास रुपये नहीं हैं।"

नौकर चुप हो गया और कमरे से बाहर निकल गया।

इस बीच में दफ़्तर का क्लर्क आया और उसने तनख्वाह माँगी। तीरथ ने टालमटोल कर दी और कहा कि वह रुपयों का प्रबन्ध कर रहा है। स्वयं उसके पास रुपये नहीं हैं, आज राशन नहीं आया, नौकर को तनख्वाह नहीं दी जा सकी है और मकान का किराया और बिजली का बिल चुकाना बाकी है। बेचारा क्लर्क चला गया। तीरथ ने राज को बताया कि आजकल उसकी आर्थिक स्थिति खराब है। एक दोस्त से रुपये लेकर व्यापार शुरू किया था, लेकिन व्यापार में घाटा रहा। जो रुपया था वह इस प्रकार समाप्त हो गया। अब कुछ नहीं सूझता कि क्या करूँ ? क्या होगा ? तुम्हें भी एक महीने की तनख्वाह नहीं दी। राज यह सुनकर अपने कमरे में चला आया। राज ने जब ये बातें तीरथ से सुनीं तो उसे अचम्भा न हुआ। वह जानता था कि तीरथ को रुपया यों ही हाथ लगा है और वह उसे बे-दर्दी के साथ उड़ा रहा है। वह न व्यापार करता है, न किसी काम की ओर ध्यान देता है। यदि उसे किसी काम का ध्यान है, लगन है, चिन्ता है तो वह हमीदा की। किसी तरह हमीदा उसको अपना ले, उसकी बात मान

जाय, उसकी हाँ-में-हाँ मिलाय। इसी धुन में वह रुपये लुटा रहा था। शायद उसे कभी यह खयाल भी नहीं आया था कि अगर रुपया यों ही खर्च होता रहा तो एक दिन सारी पूँजी समाप्त हो जायगी और तब वह क्या करेगा, कहाँ से खायगा, नौकरों को कहाँ से तनख्वाह देगा! दफ्तर का क्या होगा? क्या उसके मस्तिष्क में यह विचार कभी उभरे थे या उसके मन में सिवाय हमीदा के किसी और का ध्यान था। राज तीरथ से ज़रा सँभलकर चला था। जो कुछ उसे मिलता, वह कुछ तो खर्च करता और कुछ बचाता रहा। उसे मालूम था कि एक-न-एक दिन वह दिन भी देखना पड़ेगा जब तीरथ को जेब खाली हो जायगी। इसलिए उसने बुरे दिनों के लिए कुछ बचा रखा था।

राज ने खिड़की के पास खड़े होकर बाहर को ओर देखा। आकाश पर सफ़ेद बादल तैर रहे थे और हवा धीमी-धीमी बह रही थी। पेड़ों पर पंछी चहचहा रहे थे। एक कबूतर गुटगूँ कर रहा था। सूरज की किरणें पत्तों से छन-छन कर पृथ्वी को चूम रही थीं। राज ने सोचा कि आज वह क्यों खुश था। तीरथ की बातें सुनकर भी उसका मन खिन्न न हुआ था। कल की मुलाकात ने उसके मन के वीराने में गुलाब के फूल खिला दिए थे। वह आज सचमुच खुश था। उसे वह लड़की याद आई और उसके शरीर के उभार, उसकी बातें, उसका हँसना, मुस्कराकर बातें करना और इतनी जल्दी बे-तकल्लुफ़ हो जाना। वह सचमुच सुन्दर थी, उसके शरीर में एक आकर्षण था। उसके पतले-पतले होंठ, छोटी-छोटी परन्तु विवेकपूर्ण और मद-भरी आँखें। उसके उठकर चले जाने के बाद भी राज उसके रूप की कल्पना में विलोन रहा। उसकी आवाज़ की मधुरता, उसका जादू, हर शब्द जैसे संगीत की लहर हो और फिर उसके शरीर के उभार और कटाव, चाल-ढाल और रूप-रंग—सबसे जैसे यौवन की चमक फूटी पड़ती थी। उसके फड़कते हुए अंग, उसकी काली-काली आँखें, उसकी अदाएं इस बात की हट कर रही थीं कि उनको देखा जाय। वह चाहती थी कि न हँसे परन्तु उसका शरीर हँस रहा था। यौवन एक शोला बनकर भड़क रहा था और लपटें ले रहा था। राज ने सोचा कि वह कल उससे

भी नोट कर लिया था। क्या वह आज जाय ?—अगर वह आज चला गया तो कहीं लड़की यह न समझ ले कि वह उस पर बिलकुल मर मिटा है। कुछ दिन और संयम रक्खा जाय ताकि लड़की को सिर्फ़ यह अनुभव हो कि राज उससे मिलने आया है और कोई बात नहीं है। उसे यह सन्देह न हो कि वह प्रेम करने लगा है—विचारों ने फिर पलटा खाया—न जाने कैसी लड़की है, क्या करती है, उसके माता-पिता इस मेल-जोल को पसन्द करेंगे भी कि नहीं ? एक दिन का परिचय और कुछ नहीं। हो सकता है वह यों ही मिली हो। कोई विशेष आकर्षण न हो, केवल समय काटने के लिए ही वह उससे मिलने आ गई हो। आख़िर उस मुलाक़ात में क्या था ?—वह यों ही दूर की सोच रहा था मानो सचमुच ही शीला उससे प्रेम करने लगी थी—जी नहीं, यह गलत है, असम्भव है। इस सोच-विचार में मग्न राज बिस्तर पर लेट गया। सूरज की किरणें उसके बिस्तर पर पड़ रही थीं। सोचते-सोचते वह सो गया। उसके सिर के बाल बिखर गए थे। आँखें कुछ खुली थीं और कुछ बन्द, मानो वह अभी तक अपनी प्रेयसी को देख रहा था। उसके मुख पर प्रसन्नता और खुशी झलक रही थी। वह दो घण्टे तक सोता रहा। जब वह जागा तो तीरथ जा चुका था। वह उठा और नहाकर, कपड़े बदलकर बाहर निकल गया।

वह दफ्तर जाना चाहता था, परन्तु उसे मालूम हो गया था कि वहाँ कुछ काम नहीं है। वहाँ भी क्लर्कों को तनख्वाह नहीं मिली है। अगर वह खाली हाथ गया तो वे लोग तंग करेंगे और उसे शर्मिन्दा होना पड़ेगा; इसलिए उसने दफ्तर जाने का इरादा छोड़ दिया।

: १६ :

जब कभी राज अकेला होता था; उसे उदासी का अनुभव होता था। इसलिए आज वह घर से निकल आया था। शीला की याद ने उसे और भी अधिक उदास कर दिया था। वह इधर-उधर घूमता रहा। कभी इलेक्ट्रिक ट्रेन में बैठता और कभी किसी स्टेशन पर

उतरकर बुक-स्टॉल पर रखे हुए अखबारों को देखने लगता, या लोगों को ट्रेन पर चढ़ते-उतरते देखता। इस तरह उसका ध्यान बँटा रहता और वह कुछ समय के लिए इनसान की कमीनी हरकतें भूलने की कोशिश करता। आकाश बादलों से घिरा हुआ था—'हो सकता है बारिश हो जाय'—जब वह घर से निकला था तो आकाश साफ़ था। उसने स्टेशन के स्टॉल से पाउडर की चाय पी—चाय कड़वी और कसीली थी। मुँह का ज़ायका ठीक करने के लिए उसने एक आने के चने लिये और फिर गाड़ी में बैठ गया। जब वह गाड़ी से उतरा तो उसके पाँव अपने-आप हौले-हौले शीला के घर की ओर उठने लगे। वह हर प्रकार से कोशिश कर रहा था कि शीला के घर न जाय, परन्तु उसके पग उसी ओर उठे जा रहे थे। जब वह चर्च गेट के स्टेशन पर ही था तो बारिश शुरू हो गई थी। देखते-देखते उसने मूसलाधार बारिश का रूप धारण कर लिया। अब शाम हो चली थी। दफ्तरों से क्लर्क बगल में फाइलें दबाये हुए, हाथों में छाते लिये घरों को जल्दी-जल्दी जा रहे थे। स्टेशन मर्द-औरतों से भरा हुआ था। वह यहाँ काफी देर तक खड़ा रहा क्योंकि जब तक बारिश नहीं थम जाती वह शीला के घर तक न पहुँच सकेगा। उसका घर यहाँ से निकट ही था क्योंकि जैसा शीला ने बताया था उसका घर मेरीन लाइन पर था और मेरीन लाइन यहाँ से केवल दो-तीन फर्लांग था—कुछ मिनटों का रास्ता है--और यह रास्ता तै कर लेने पर वह शीला से मिल सकेगा। बारिश के थमने की प्रतीक्षा में लगभग एक घण्टा बीत गया। अब बारिश पहले से मद्धम हो गई थी। हल्की-हल्की फुहारें पड़ रही थीं, जिनसे कपड़े न भीग सकते थे। राज स्टेशन से निकलकर आगे बढ़ा। यह सड़क कितनी चौड़ी, साफ-सुथरी थी। दोनों ओर इमारतें आकाश की ओर निगाहें उठाये हुए थीं। यद्यपि ये इमारतें ऊँची न थीं परन्तु यहाँ से समुद्र समीप था—नीला और गहरा; और उसके सामने इमारतें, यहाँ बम्बई के धनी लोग रहते हैं। ऐश करते हैं, न बच्चों के दूध की चिन्ता, न पढ़ाई की। न मकान के किराये की, न रोटी-कपड़े की। राज इन्हीं विचारों में मग्न चला जा रहा था और इधर-

उधर लड़कियाँ, मर्द-औरतें हाथ-में-हाथ डाले आ-जा रहे थे। यद्यपि हल्की-हल्की बारिश थी परन्तु उसे बारिश तो न कह सकते थे—नन्हीं-नन्हीं बूँदें, हल्की-फुल्की बूँदें। जी चाहता था की इस हल्की-हल्की बारिश में इनसान घूमता रहे, न कपड़े भींगें और न सिर के बाल। बस हवा इन नन्हीं-नन्हीं बूँदों से भीगे हुए अपने होंठों से चेहरे को चूमती रहे। अब राज शीला द्वारा बताई हुई बिल्डिंग के पास पहुँच चुका था। बिल्डिंग पर नीला रोगन किया हुआ था। क्या वह अन्दर जाय या लौट जाय? उसका मन धक्-धक् करने लगा। अब वह मंज़िल के निकट आ गया था। क्यों न वह अन्दर जाय और समाप्त कर दे इस उलझन को, इस विकलता को? बात तो साफ़ हो जाय। यह सोच-कर राज सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। पहला फ्लोर, दूसरा फ्लोर; उसका साँस फूल रहा था, उसके चेहरे पर पसीनें की बूँदें छलक आई थीं, उसने जेब से रूमाल निकाला, वह अब तीसरे फ्लोर पर था। वह १४ नम्बर कमरे के पास जा खड़ा हुआ और बिजली का बटन दबाया। घण्टी बजी, दरवाज़ा खुला और एक नौकर ने झाँककर बाहर देखा।

"क्या शीला अन्दर हैं?"

"आप कौन हैं?"

"मेरा नाम राज है। मैं शीला से मिलना चाहता हूँ।"

"आप ज़रा यहीं ठहरिये।"

नौकर अन्दर चला गया। उस समय राज का दिल इतने ज़ोर से धड़क रहा था मानो अभी-अभी फट जायगा और वह यहीं तीसरे फ्लोर पर जान दे देगा। वह रूमाल से अपने चेहरे का पसीना बार-बार पोंछता-पर पसीना था कि...

सहसा शीला की आवाज़ दरवाज़े में से आई—"अन्दर आइये आप?"

शीला की आवाज़ सुनकर राज की जान-में-जान आई और वह शीला के साथ अन्दर चला गया। एक छोटा-सा ड्राइंग-रूम था। समान बहुत अधिक न था, एक सोफ़ा सैट, एक कोने में पलंग और उसके पास एक रेडियो सैट। सबसे पहले शीला ने राज का अपनी माँ से परिचय कराया—

"आप मेरी माँ हैं।"

एक नौजवान लड़का साथ वाले कमरे से निकला।

"और आप हैं मेरे भाई मनोहर।"

"आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।"

"और मैं आपका नाम बताना तो भूल गई—आपका नाम है राज। अम्मी इनसे रेस में मुलाक़ात हो गई थी। इन्होंने पता पूछा, मैंने बता दिया।"

"ओह, आप रेस खेलते हैं" रेस का नाम सुनते ही अम्मी के चेहरे पर प्रसन्नता के चिह्न उभर आए। शुरू में राज से मिलकर वह प्रसन्न न हुई थीं। उसकी राज के नाम से कोई दिलचस्पी न थी, लेकिन रेस का ज़िक्र आते ही उसकी आँखों और उसके चेहरे में एक परिवर्तन हो गया। मनोहर ने उसकी ओर कनखियों से देखा—मनोहर दुबला-पतला था। क़द बिचौला, वह आँखें नीची करके देखता था और उसके माथे पर अकसर त्यौरियाँ पड़ी रहती थीं जैसे उसके मस्तिष्क में सदा कोई संघर्ष होता रहता हो, ऐसी चुभन होती रहती हो जिसका वह इलाज नहीं कर सकता था। राज को गर्मी लगी और उसने अपना रूमाल हिलाना शुरू किया। शीला ने उठकर पंखा खोल दिया।

"आप क्या पियेंगे? यह चाय का समय है और आज मौसम भी अच्छा है!" शीला ने पल्लू को झटकते हुए कहा।

"अगर चाय का एक प्याला मिल जाय तो अत्यन्त कृपा होगी।"

कुछ समय बाद चाय आ गई।

राज शीला की ओर देखता रहा। वह बात करने के लिए विषय ढूँढ़ रहा था, परन्तु शीला की माँ और उसके भाई की उपस्थिति के कारण वह कुछ न कह सका।

शीला यदि अकेली भी होती तो वह कुछ न कह सकता। वैसे वह कहना चाह रहा था—'शीला जबसे तुम मिली हो तुमसे मिलने को बहुत जी चाहता है। मैंने दिल को बहुत समझाया कि यहाँ आने का कोई फ़ायदा नहीं, क्योंकि मेरा तुम पर कोई अधिकार नहीं। केवल

एक दिन की मुलाकात है और एक दिन की मुलाक़ात में होता क्या है। आखिर तुम मुझ पर इतनी कृपा क्यों करती हो ? क्या तुम्हें मुझसे मुहब्बत है ? या केवल शरारत है ? या तुम्हारा सबसे ऐसा ही व्यवहार है ? मैं आज इसलिए आया हूँ कि जब से तुम मिली हो मेरे मन में प्रेम का एक अनोखा भाव पैदा हो रहा है यानी तुमसे मिलने को, तुमसे बातें करने को बार-बार जी चाहता है।'

"चाय पीजियेगा।" शीला ने आगे बढ़कर चाय का प्याला दिया।

राज के विचारों की श्रृङ्खला टूट गई। वह चाय पीने लगा। जब वह चाय पी चुका तो सोचने लगा, 'अब क्या किया जाय—अब जाने की इजाज़त लेनी चाहिए।'

शीला ने एक रिकार्ड लगा दिया।

वह उठ न सका—'चलो रिकार्ड सुनकर फिर चला जायगा।' यह रिकार्ड फ़िल्मी था—मुहब्बत और इश्क का। वह इससे पहले इस रिकार्ड को सुन चुका था। इस कारण उसे यह रिकार्ड खास अच्छा न लगा। जब रिकार्ड खत्म हुआ तो उसने इजाज़त चाही।

उसने शीला की माँ की ओर देखा—वह गुम-सुम थीं। उसने शीला के भाई की ओर देखा—मानो वह कह रहा था कि आप ख़ासे शरीफ़ आदमी हैं। अब आपका जाना ही उचित है। उसने शीला की ओर देखा—मानो वह कह रही थी कि आपको यहाँ अक्सर आना चाहिए। मैं आपसे मिलकर बहुत खुश हुई। यदि आप इस प्रकार आते रहें तो मेरा मन बदल जायगा। राज जाने लगा तो शीला उसे दरवाज़े तक छोड़ने आई।

उसने हाथ जोड़कर नमस्ते की और शीला ने हौले से कहा—"फिर कब आइयेगा ?"

"जब आप कहें।" राज के मुँह से निकला।

"जब आपको फुर्सत हो—मैं अक्सर दिन-भर घर में ही रहती हूँ।"

"तो मैं आऊँगा, और अवश्य आऊँगा"—वह मुस्कराया और आगे बढ़ गया।

जब राज सड़क पर पहुँचा तो वह अपने को बड़ा हलका-फुलका महसूस कर रहा था मानो एक भारी बोझ उसके दिल पर से उतर गया था। अब शाम हो चुकी थी और सामने खुला हुआ समुद्र अन्धेरे में साँस ले रहा था। मेरीन लाइन बिजली की बत्तियों से प्रकाशित हो रहा था। सब लोग घरों को लौट रहे थे केवल रेस्तराँओं में लोग बैठे हुए थे और चाय पी रहे थे, केक-पेस्ट्री खा रहे थे। वह चुपचाप एक रेस्तराँ में घुस गया और चाय का आर्डर दिया। चाय आई और वह चाय पीने लगा। उसके मन में आया—काश! शीला उसके साथ होती, इसी रेस्तराँ में, केवल वह और शीला, और कोई नहीं—उस अवस्था में वह अवश्य उससे बातें करेगा, वह भी उससे बातें करेगी। जो घुटन उसे शीला के कमरे में महसूस हुई थी वह यहाँ न होगी। परन्तु, आख़िर वह शीला से क्या बात करता? कोई ऐसी बात न थी जिसे वह छोड़ सकता था। उसने जल्दी-जल्दी चाय पी और रेस्तराँ से बाहर निकल आया।

: १७ :

इसी प्रकार दिन बीतते गए, परन्तु तीरथ के आवारापन में कमी न आई। वह बिस्तर पर लेटा हुआ था और उसकी दृष्टि छत पर लगी थी, मानो वह किसी गहरे विचार में डूबा हुआ था। राज के क़दमों की आहट सुनकर वह चौंका और उठकर बिस्तर पर बैठ गया। राज के पूछने पर तीरथ ने बताया कि उसकी आर्थिक स्थिति बहुत ख़राब है और हमीदा की बेवफाई ने उसके दिल के टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं। "अजीब औरत है, राज! न मुझे अपनाती है और न महबूब ही को छोड़ती है। जब कल मैं हमीदा के घर गया तो उसका दरवाज़ा बन्द था। मैंने दरवाज़ा खटखटाया। काफ़ी देर बाद दरवाज़ा खुला और नौकरानी ने बाहर झाँककर देखा और मुझे ठहरने के लिए कहा। फिर हमीदा आई और उसके साथ महबूब आया। मैं उसे देखकर जल-भुन गया। जी चाहता था कि कम्बख़्त का सिर फोड़ दूँ लेकिन हमीदा की मुस्कराहट ने मेरे दिल को पिघला दिया और मैं बिना कुछ कहे अन्दर

चला गया। हम सबने मिलकर खाना खाया। हमीदा ने मुस्करा-मुस्करा-कर बातें कीं। सिनेमा चलने का अनुरोध किया और मैं टाल न सका। बटुवे में जितने रुपये थे सब सिनेमा में ख़र्च हो गए। सिनेमा देखने के बाद एक रेस्तराँ में गये। वहाँ खाना खाया। बिल हमीदा ने चुकाया और वह हँस-हँसकर महबूब से बातें करने लगी। मैं अकेला बैठा इस दृश्य को देखता रहा। वहाँ से निबटकर हमने टैक्सी की। हमीदा बीच में बैठी और एक तरफ मैं और दूसरी तरफ महबूब। हमीदा महबूब की ओर ऐसे देख रही थी जैसे वह उसका पति हो। टैक्सी से उतरते समय उसने एक चुटकी ली और मेरी ओर कनखियों से देखा। उसने कुछ रुपये माँगे। मैंने खाली बटुआ दिखा दिया। क्रोध से उसकी आँखें लाल हो गईं और उसने कहा—'कहीं से रुपये लाकर दो। मेरे पास इस पखवाड़े का राशन नहीं है, नौकर को रुपये देने हैं, मकान का किराया देना है।' इसके बाद वह मन्थर गति से महबूब के साथ चली गई और मैं घर लौट आया"—यह कहकर तीरथ चुप हो गया। उसका चुप होना उसकी हार का प्रतीक था।

तीरथ की निगाहों में क्रोध था और वह बार-बार दाँत पीसने लगता था। कहने लगा—"तुमसे क्या छिपाऊँ, इस लड़की के लिए मैंने अपना जीवन बरबाद कर लिया। रुपया पानी की भाँति बहाया—व्यापार चौपट हो गया। बैंक बैलेन्स सिफ़र रह गया और आज यह हालत है कि न नौकरों को तनख्वाह दे सकता हूँ और तीन-चार महीने का किराया चुकाया है। ऑफिस के नौकर भी वेतन माँगते हैं। उन्हें कहाँ से दूँ, और सबसे बड़ी बात तो यह है कि हमीदा हाथ से जा रही है। एक कार बाकी रह गई है और यह कम्बख्त महबूब उसका साथ छोड़ता नहीं। एक जोंक की तरह उसके साथ लगा हुआ है—न शर्म, न लिहाज़। उसकी कमाई खाये जाता है।"

राज ने तीरथ की तरफ़ देखा। तीरथ एक घायल पक्षी की भाँति फड़फड़ा रहा था। उसे सचमुच अपनी नादानी पर क्रोध आ रहा था। लेकिन वह हठीला था। हार मानना उसकी प्रकृति के प्रतिकूल था और वह हालात को भली प्रकार कभी न समझ सका। अपनी सूरत और

अपनी जेब का ध्यान किये बिना ही वह आगे बढ़ता गया था। इसमें सन्देह नहीं कि उसे हमीदा से प्रेम था और यदि हमीदा भी उससे प्रेम करती तो वह उसे सुमार्ग पर लाता, पत्नी बनाकर रखता और शायद व्यापार भी कर लेता। लेकिन यहाँ तीरथ हमीदा को केवल रुपयों के बल पर खरीदना चाहता था। उसने यह समझने का कभी प्रयत्न न किया कि हमीदा किस स्वभाव की औरत है। क्या एक औरत में सौन्दर्य-भावना होती है? और पेशा कमाते हुए भी अपनी सौन्दर्य-भावना को वह जीवित रख सकती है? इनसान जब अपनी इज्जत बेचता है या औरत अपने शरीर को रुपयों के लिए बेचती है तो क्या उसकी सब सौन्दर्य-भावना मर जाती है? क्या सौन्दर्य, प्रेम की कामना, एक स्वस्थ और सुन्दर युवक के साथ रहने की इच्छा—ये सब उमँगें मर जाती हैं? तीरथ ने शायद इन बातों पर कभी विचार नहीं किया। उसने यह नहीं सोचा कि हमीदा तीरथ से क्यों प्रेम नहीं करती? उसमें क्या कमी है? राज चाहता था कि वह तीरथ को सब बातों का ज्ञान कराय। उसे मार्ग दिखाय, परन्तु अब हालत ऐसी हो गई थी कि रास्ते में मोड़ न थे। तीरथ सब यत्न कर चुका था, परन्तु हमीदा महबूब को छोड़ने के लिए तैयार न थी और अब तो तीरथ की आर्थिक स्थिति भी खराब हो चली थी। हमीदा के लिए एक ओर रुपया था और दूसरी ओर सौन्दर्य, अपनी पसन्द, अपनी कामनाओं की पूर्ति, अपने स्वप्न, अपनी इच्छा और कामना। स्वेच्छा से काम करने में कितना सुख और कितनी शान्ति मिलती है, शायद इसका अनुभव तीरथ को न था।

"तुम हमीदा का पीछा क्यों नहीं छोड़ देते?" राज ने क्रोधित होकर कहा।

"मैंने बहुत बार सोचा है कि हमीदा कभी मेरी नहीं हो सकती, परन्तु अब एक अन्तिम प्रयत्न करूँगा। यदि इस बार हार गया तो..." इससे आगे तीरथ कुछ न कह सका और कमरे से बाहर निकल गया। इतने में तीरथ का नौकर जुम्मन आया और उसने राज से शिकायत की कि बाबू ने कई महीनों से तनख़्वाह नहीं दी। आजकल

वह राशन के लिए भी रुपये नहीं देते। स्वयं वे बाहर खाना खाते हैं। मुझे अपना ख़याल नहीं, किन्तु मेरी पत्नी बहुत बीमार है। उसके इलाज के लिए भी बाबू पैसे नहीं देते; कभी कहते हैं कल दूँगा और कभी परसों, और इस तरह दिन बीत रहे हैं। आखिर कब तक इन्तज़ार करूँ, कब तक भूखा रहूँ और कब तक झूठे वायदों पर जीता रहूँ।" यह कहकर वह बूट साफ़ करने लगा।

राज को उस पर बड़ा क्रोध आया—'आखिर यह नौकर बिना रुपयों के क्यों काम करता है। यहाँ से चला क्यों नहीं जाता। और कहीं नौकरी क्यों नहीं कर लेता। तीरथ की गालियों और उसके वायदों पर क्यों जीता है। और तीरथ भी कैसी प्रकृति का इनसान है कि केवल अपनी प्रेयसी को पाने के लिए दिन-रात विकल रहता है और उन तमाम सम्बन्धों को भूल बैठा है जो इनसान और इनसान के बीच होते हैं। वह अपनों से झूठ बोलता है, परायों से अलग रहता है, नौकरों पर अत्याचार करता है। वह हर कमीनी हरकत को ठीक समझता है ताकि उसका प्रेम, उसकी मुहब्बत चलती रहे। वह हर एक के साथ विश्वास-घात करने के लिए तैयार था, परन्तु उसका यह नौकर अभी तक उसी के सहारे पर आस लगाये जीवित था।

: १८ :

तीरथ की हरकतें वैसी ही थीं। प्रेम का भूत उस पर बुरी तरह सवार था। जीवन में एक ही चुभन थी, एक ही चाह थी, एक ही लक्ष्य था—हमीदा किसी तरह उसकी बन जाय और उसके अन्धे प्रेम के सामने आत्म-समर्पण कर दे। तीरथ सुबह-सवेरे घर से निकल जाता और शाम को घर आता। नौकर रुपये माँगता तो वह रुपये न देता। कभी घर में खाना खाता और कभी बाहर। अब वह राज से बहुत कम मिलता। ऑफ़िस बन्द हो चुका था, क्लर्क चले गए थे। वे कभी-कभाकर अपनी तनख़्वाह माँगने आते। अक्सर तीरथ से उनकी मुलाक़ात न होती और अगर कभी होती भी तो वह उन्हें टाल देता। परन्तु इन बातों के होते हुए भी तीरथ कार में सैर करता था। कभी-

कभी हमीदा को रेस्तराँ में ले जाता, सिनेमा दिखाता और अपनी बची-खुची पूँजी भी उसकी भेंट चढ़ाता। यदि तीरथ के इस प्रेम का विश्लेषण किया जाय तो साफ़ पता चलेगा कि उसे हमीदा से बस एक ज़िद, एक हठ हो गई थी। उसने अपनी जिन्दगी की काफ़ी पूँजी इस औरत पर खर्च कर दी थी, परन्तु फिर भी उसे पूरी तरह प्राप्त न कर सका था। महबूब हमीदा के साथ रहता। एक-दो बार महबूब और तीरथ की लड़ाई भी हुई। तीरथ ने महबूब को मारा और महबूब ने तीरथ को। लेकिन हमीदा ने दोनों को कुछ न कहा। वह दोनों को लड़ते देखकर घर से बाहर निकल गई—कर लेने दो दोनों को फैसला। हमीदा वस्तुतः दोनों को चाहती थी। महबूब के स्वस्थ सौन्दर्य को और तीरथ के रुपये को। लेकिन अब तीरथ का पाँसा कुछ हल्का पड़ता जा रहा था। पहले वाली दावतें, सैरें, रंग-रलियाँ और रास-रंग की महफिलें कुछ कम हो गई थीं। तीरथ की जेब हल्की हो गई थी और हमीदा को मालूम हो गया था कि सेठ तीरथ की जेब कुछ दिनों बाद खाली हो जायगी। काश तीरथ सुन्दर होता—तब वह तीरथ से शादी कर लेती और अपने इस दूषित जीवन को सदा के लिए बदल डालती। कितनी बार उसने अपने जीवन को बदलने का प्रयत्न किया था, परन्तु हर बार कोई-न-कोई बाधा आ पड़ती। कभी मर्द बे वफ़ा निकलता, कभी बे-पैसे वाला, और कभी बदसूरत; और जब मर्द स्वस्थ और सुन्दर मिला तो उसकी जेबें खाली थीं। इस कारण उसे जीवन में एक समझौता करना पड़ा—तीरथ को अपना शरीर देना और महबूब से प्रेम करना और इस प्रकार अपना जीवन बिताना।

और तीरथ समझदार होते हुए भी अपनी हठ पर अड़ा हुआ था कि वह हमीदा को अपनी बनाकर ही दम लेगा। तीरथ जानता था कि अब उसके पास बहुत थोड़ी पूँजी रह गई है और हमीदा को दिन-प्रतिदिन उसकी खाली जेब का पता चलता जा रहा है। उसके व्यवहार में भी अन्तर आ चला था—वह सेवा-सत्कार, वह हँसी-मजाक, वह मेल—अब पहले-जैसा न था, एक अन्तर आ गया था।

कहाँ वह पहले तीरथ की बात माना करती थी और कहाँ अब महबूब को मनाया जाता है, उसकी चापलूसी की जाती है—और तीरथ के सामने, जैसे तीरथ का कोई अस्तित्व ही न था। तीरथ अब भी घर में जा सकता था, बैठ सकता था, कुछ बातें कर सकता था, उसके साथ सिनेमा जा सकता था, चाय पी सकता था; परन्तु इन तमाम बातों में अब पहले वाला प्यार, भावनाओं का आदर, चापलूसी और हँसी नहीं थी। अगर हमीदा तीरथ से बातें करती तो ऐसा लगता जैसे वह अपने मस्तिष्क पर जोर डालकर बातें कर रही है। जैसे वह तीरथ से मिलकर खुश नहीं थी। परन्तु तीरथ इन बातों को सहन करता रहा, इस निरादर को सहता रहा, क्रोध को पीता रहा, महबूब की उचित और अनुचित हरकतें बरदाश्त करता रहा। अब तो पासा सचमुच पलट गया था। कहाँ महबूब तीरथ का आदर-सम्मान किया करता था और कहाँ अब तीरथ को महबूब का आदर सम्मान करना पड़ता था। यानी घर का मालिक महबूब हो गया था। रुपये वह खर्च करे लेकिन घर का मालिक महबूब बन बैठे। यह बात तीरथ कैसे सहन करता—वह महबूब का असली रूप जानता था, परन्तु वह करता तो क्या करता ? इस उलझन को वह कैसे सुलझाता और किस तरह अपनी मंजिल तक पहुँचता ? उसका प्रेम किस तरह पूरा होता ? कई बार तीरथ के मन में विचार आया कि महबूब को जान से मार दे। किसी से कत्ल करवा दे। उसके बाद हमीदा उसकी हो जायगी। लेकिन तीरथ के पास इस बात की क्या गारण्टी थी कि महबूब की हत्या के बाद हमीदा पूर्ण रूप से उसकी हो जायगी। और अगर इस बीच में इस हत्या का रहस्य खुल गया तो प्रेम के लिए फाँसी पर चढ़ना पड़ेगा। शायद तीरथ फाँसी पर चढ़ने के लिए तैयार न था। उसका मस्तिष्क इस बात से सहमत न होता कि प्रेम के लिए केवल हमीदा के लिए अपनी जान से हाथ धोये। नहीं, नहीं, वह महबूब की हत्या नहीं करेगा, हमीदा की हत्या नहीं करेगा। वह ऐसी कोई बात न करेगा जिससे उसे फाँसी पर चढ़ना पड़े। परन्तु वह अन्तिम प्रयत्न अवश्य करेगा। वह रुपयों से काम लेगा। वह एक बार

फिर हमीदा को रुपयों से सदा के लिए खरीद लेगा और महबूब को ठोकरें खाने के लिए छोड़ देगा। उसे पैसे-पैसे के लिए तरसायगा ताकि उसे और हमीदा को भी अनुभव हो जाय कि तीरथ की जेब का उन दोनों पर कितना प्रभाव पड़ सकता है। वह रुपयों से उन दोनों को खरीद लेगा। महबूब में था क्या? उसकी क्या बिसात थी जो उसके सामने ठहर सके।

: १६ :

एक दिन तीरथ राज के कमरे में आया और कहने लगा—"मैं एक हफ्ते के लिए बाहर जा रहा हूँ।"

"कहाँ जा रहे हो?" राज ने पूछा।

"पूना।"

"क्यों?"

"सैर करने।"

"अकेले या हमीदा के साथ?"

"हमीदा के साथ!"

"कब लौटोगे?"

"एक हफ्ते बाद।"

"मुझे कुछ रुपये दे जाओ।"

"मेरे पास बहुत कम रुपये हैं।" वह बोला।

"थोड़े ही से रुपये दे जाओ।"

"होते तो जरूर दे जाता।"

"लेकिन तुम पूना जा रहे हो—अपनी प्रेयसी के साथ।"

"हाँ, लेकिन मेरे पास बहुत कम पैसे हैं।"

"वहाँ खर्च तो काफी होगा।"

"वह अपने गहने बेचकर जा रही है।"

"तुम्हारे साथ?"

"हाँ मेरे साथ।"

 "और महबूब अली?"

"उसका साथ उसने छोड़ दिया है।"

"सदा के लिए ?"

"मेरा विचार है सदा के लिए।"

इतने में जुम्मन अन्दर आया और कहने लगा—"बाबूजी मेरी बुरी दशा है। मेरी तनख्वाह तो देते जाइए।"

"अरे, तुम्हें मेरा एतबार नहीं ? अगर कुछ रुपयों की ज़रूरत हुई तो राज साहब से माँग लेना। मैं वापस आकर तुम्हें ज़रूर रुपये दे दूँगा। इस समय मैं कार से पूना जा रहा हूँ।" यह कहकर तीरथ बाहर निकला।

नौकर राज की ओर देखने लगा और राज ने दो रुपये निकाले और उसको दिये। उसने रुपये ले लिये और बोला—"बाबू साहब यह भी अनोखे आदमी हैं। खुद तो ऐश करते हैं और हमें कुछ नहीं देते। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूँ। बातें बहुत करते हैं कि मैं यह करूँगा, वह करूँगा लेकिन जब काम-काज के लिए रुपये माँगो तो जेब खाली। भला पूना जाने के लिए रुपये कहाँ से आ गए हैं ? उस औरत पर खर्च करने के लिए रुपये कहाँ से आते हैं ? मेरी बीवी बीमार थी। मैं उसे रुपये न भेज सका, वह बेचारी मर गई। मेरा बेटा चोरी के अपराध में पकड़ा गया है। उसके लिए वकील करना है। वकील रुपयों के बिना मुकदमे की पैरवी नहीं करेगा। लेकिन तीरथ साहब मेरी तनख्वाह ही नहीं देते।"

"मैंने तुमसे कहा था कि तुम यहाँ से चले जाओ।"

"आपने ठीक कहा था, मैं आज ही यहाँ से चला जाऊँगा।"

"तुम्हें रुपये नहीं मिलेंगे।"

"आप सच कहते हैं बाबूजी ! पर बाबूजी वे इतनी लम्बी-चौड़ी बातें क्यों करते हैं ? कहते थे, जुम्मन कुछ दिन और इन्तजार करो, मैं तुम्हारी बीवी को यहाँ बुलाऊँगा। उसे अस्पताल में भरती कराऊँगा और उसका इलाज कराऊँगा। बीवी तो मर गई इस इन्तज़ार में। अब लड़के की बारी है जेल जाने की। इस बीच में मुझे कई नौकरियाँ मिलती थीं पर मैंने 'ना' कर दी। अब खुद नौकरी ढूँढ़नी पड़ेगी।"

"एक हफ़्ते की तुमको छुट्टी मिली है—नौकरी ढूँढ़ लो और फिर इधर न आना।"

"अच्छा बाबूजी, जैसा आप कहेंगे वैसा ही करूँगा। लेकिन बाबूजी एक बात तो बताओ।"

"कौन-सी बात ?"

"यह कैसे आदमी हैं—ये झूठ बोलते हैं और इश्क भी करते हैं।"

"इनका इश्क भी झूठा होता है जुम्मन।"

"सच कहते हैं बाबूजी आप। बाबूजी की औरत—वह हमीदा, इनका तनिक भी खयाल नहीं करती। वह तो महबूब पर जान देती है और ये हमीदा पर। ऐसी मुहब्बत हमने कभी नहीं देखी। अगर कोई मेरी औरत की ओर इस तरह देखे तो मैं उसे गोली से मार दूँ, उसके टुकड़े-टुकड़े कर दूँ। यहाँ इनको सब-कुछ मालूम है लेकिन फिर भी उस महबूब से हँसते-बोलते हैं, उसे साथ लिये फिरते हैं -जाने कैसे आदमी हैं।"

"अच्छा अब तुम अपना काम करो।"

"अच्छा बाबूजी, मैं आज ही यहाँ से चला जाऊँगा और सामान आपको सौंप जाऊँगा।" यह कहकर जुम्मन कमरे से बाहर निकल गया।

: २० :

राज उस दिन बहुत ही दुखी और उदास रहा। वह कहीं भी न जा सका। दिन-भर कमरे में बैठा रहा, नहाया, खाना खाया और सोचता रहा—वह कहाँ जाय ? किधर जाय ? वह अब ऑफिस भी न जा सकता था; क्योंकि तीरथ ने ऑफिस बन्द कर दिया था और सैर करने के लिए पूना चला गया था। जब दिन ढल गया और अन्धकार ने आस-पास के मकानों को अपने आँचल में लपेट लिया, तो वह घर से बाहर निकला। इधर-उधर अन्धेरा था, केवल सड़क पर बिजली की बत्तियाँ जल रही थीं जिनके मध्यम प्रकाश में सड़क साफ दिखाई दे रही थी। जहाँ निगाह जाती थी वहाँ तक अन्धेरे की एक लम्बी चादर

फैली हुई थी। एक अजीब सुनसान, खामोश अन्धेरा; केवल कभी-कभी समुद्र के कराहने की आवाज़ आती। दूर एक लारी सड़क पर दनदनाती हुई चली जा रही थी और वह अकेला सड़क पर चला जा रहा था। उदासी एक बोझ बनकर उसकी नस-नस में फैलती चली जा रही थी। 'तीरथ इस समय कहाँ होगा? क्या करता होगा? क्या हमीदा उसके साथ होगी? वह उन उन्मादप्रद क्षणों को किस तरह बिता रहे होंगे? क्या सचमुच हमीदा ने महबूब अली को छोड़ दिया है और सिक्कों ने सौन्दर्य पर विजय पा ली है?' हमीदा की इन हरकतों पर राज को क्रोध आ रहा था। 'इस औरत का कोई सिद्धान्त न था। केवल पेट के लिए अपना शरीर बेच रही थी, कभी यहाँ कभी वहाँ, मानो जीवन का कोई मूल्य नहीं होता; इनसान की ज़िन्दगी का कोई सिद्धान्त नहीं होता। क्या इनसान की ज़िन्दगी का यही ध्येय और उद्देश्य है कि केवल दो वक्त की रोटी प्राप्त करे, और वह भी इस तरह कि अन्तःकरण टुकड़े-टुकड़े हो जाय। परन्तु पेट को ईंधन मिलता रहे? आखिर यह भी क्या जिन्दगी है कि कभी इसके होकर रहे और कभी उसके; कभी सौन्दर्य के पीछे भागे और कभी रुपये के; कभी पेट के कारण विवश हुए और कभी माँ-बाप के कारण।'

यह सोचते-सोचते राज बस-स्टैण्ड तक आ गया। कुछ देर वह बस-स्टैण्ड पर अकेला खड़ा रहा। पेड़ चुपचाप खड़े उसका मुँह देख रहे थे और हवा धीरे-धीरे चल रही थी। हवा में एक प्रकार की सीलन थी और कपड़े शरीर से चिपक रहे थे। यह पसीना भी अद्भुत था कि न शरीर ही सूखता था, और न कपड़े ही भीगते थे। इतने में बस आ गई और वह बस में बैठ गया। कुछ देर तक वह बस में बैठा रहा और लोगों की ओर देखता रहा। उसका सिगरेट पीने को भी जी चाहा लेकिन सामने लिखा हुआ था, 'यहाँ सिगरेट पीना मना है।' कुछ देर तक वह यों ही सीट पर बैठा रहा और सोचता रहा—'वह कहाँ जाय?' आखिर वह एक जगह उतर गया। वहाँ से गाड़ी पकड़ी और सीधा मैरीन लाइन उतरा। अब अँधेरा काफ़ी हो चुका था लेकिन बिजली की बत्तियों ने अँधेरे में उजाला कर दिया था। मैरीन लाइन पर चलते हुए

ये बत्तियाँ अनोखा दृश्य पेश करती हैं। दाईं ओर समुद्र था गहरा, नीला, लेकिन इस समय काला और मौन, मानो तट पर पड़ा सो रहा था—मानो दिन-भर के परिश्रम से उसका अंग-अंग शिथिल हो गया था और अब वह रेत की गोद में चुपचाप पड़ा था। कभी-कभाक एक हल्की-सी लहर उठती और तट पर बनी हुई दीवार से टकराती। एक हल्की-सी ध्वनि हवा में तैर जाती और ऐसा लगता जैसे समुद्र ने अँगड़ाई ली हो—हौले से, आराम से; मानो सोती हुई कोई सुन्दरी स्वप्नावस्था में सिहर उठे और उसके केश बिखर जायं। ये लहरें भी तो केशों की भाँति नर्म, कोमल और मुलायम होती हैं। ये भी तो केशों की तरह समुद्र के ललाट पर लहराती हुई आगे बढ़ जाती हैं। ऊपर आकाश साफ़ और निर्मल था और आकाश तथा धरती के बीच घना अन्धकार था। राज सड़क पर पैदल चल रहा था। काफ़ी लोग आ-जा रहे थे और बहुत-से लोग तट पर बनी हुई दीवार पर बैठे थे और समुद्र के मौन संगीत से आनन्दित हो रहे थे। राज एक बिल्डिंग के आगे रुक गया—वही नीला रंग—आकाश की तरह नीला आँखों को भला लगने वाला। 'क्या शीला घर में होगी ? क्या उसे शीला के घर जाना चाहिए ? वह यहाँ किस तरह आ गया ?' कौन-सी शक्ति थी जो उसको यहाँ ले आई ? क्या उसे सचमुच शीला से प्रेम हो गया था ? शायद उसके मन में शीला ने चुपके-से वास कर लिया था। जिस दिन वह शीला से मिला था, शीला उसी दिन से उसके मन और मस्तिष्क पर छा गई थी। आखिर क्या हुआ ऐसा ? क्या यह लड़की सचमुच उसे पसन्द थी ? यदि पसन्द है, तो क्या वह इसे प्राप्त कर सकता है ? क्या आज उसके कमरे में जाना उचित है ?—शीला ने कहा था, 'आप आइयेगा और अवश्य आइयेगा'—शीला ने अपने हाव-भाव से यह प्रकट न किया था कि उसे उसका आना बुरा लगा। हो सकता है उसके भाई ने बुरा-सा मुँह बनाया हो या उसकी माँ ने उसकी उपस्थिति को अच्छा न समझा हो। आखिर इस संसार में कितने लोग हैं जो एक-दूसरे के मेल-जोल को अच्छा समझते हैं। अगर वह शीला

 से अलग-अलग रहा तो वह कुछ न समझ सकेगी। उसे उससे मिलना

चाहिए, बातें करनी चाहिएं। उसके मन की दशा जाननी चाहिए। अगर उसकी माँ या भाई ने उसके आने-जाने का बुरा मनाया तो वह दुबारा नहीं जायगा। आखिर शीला भी तो अपने विचार व्यक्त करेगी। वह काफ़ी दिनों से शीला से न मिला था। लेकिन वैसे वह शीला से अलग न हुआ था। शीला मानो उसके पास थी। उसके मस्तिष्क में वे तमाम बातें अंकित थीं जो शीला ने कही थीं। ऐसा लगता था कि किसी चित्रकार ने उन बातों को उसके स्मृति-पट पर चित्रित कर दिया था। वह अभी तक शीला के शरीर के हर कटाव और उभार को अपनी आँखों के सामने ला सकता था। वह उसकी पहली मुस्कराहट को देख सकता था। वह उस दृश्य को ज्यों-का-त्यों अपने सामने ला सकता था जब वे चाय पी रहे थे और वह उसके होंठों को देख रहा था, उसके बालों को देख रहा था, उन उँगलियों को देख रहा था जिन्होंने चाय के प्याले को पकड़ा हुआ था—उसका जी चाहता था कि उन उँगलियों को पकड़ ले और बड़े प्यार से उन्हें हौले-हौले चूमे। उसके बाद शीला से दूसरी मुलाकात—कितनी छोटी थी वह मुलाक़ात, लेकिन उसकी आवाज़ की मिठास, उसके बोलने का अन्दाज़, फ़र्श पर उसके क़दमों के निशान—सब-के-सब उसके मस्तिष्क में सजग थे। वह शीला को किस तरह भूल सकता था। इस मुलाक़ात से पहले शीला कहाँ थी। वह शीला से इससे पहले क्यों न मिल सका। वह इस खुशी और इस आनन्द से आज तक क्यों वंचित रहा। शीला से मिलने के बाद आज तक वह उसके निकट क्यों न जा सका ताकि उसके शरीर के अंग-अंग से परिचित हो सकता, उसके प्रेम में ओत-प्रोत हो सकता। यदि ऐसा हो जाता तो जीवन में इतनी असफलता क्यों होती! जीवन में इतना दुःख और विषाद क्यों होता! लेकिन आज वह शीला से मिलकर सब-कुछ बता देगा, उससे कह देगा—'शीला मुझे तुमसे प्रेम है—असीम और अगाध प्रेम।'

शायद यह सब-कुछ सोचकर राज अपनी शक्ति को बटोर रहा था ताकि वह ऊपर जा सके और शीला से मिल सके। यह सोचते-सोचते वह तीसरे फ्लोर पर पहुँच गया और दरवाज़े के सामने खड़ा हो गया।

उसने हौले से दरवाज़ा खटखटाया। कोई उत्तर न आया। अन्दर बिजली जल रही थी। उसने दुबारा दरवाज़ा खटखटाया, किसी ने उत्तर न दिया। दरवाज़ा भी न खुला। क्या वह चला जाय? क्या शीला अन्दर थी। वह लौटने वाला ही था कि उसने फिर दरवाज़ा खटखटाया और तनिक ज़ोर से। दरवाज़ा धीरे से खुला और उसके सामने शीला खड़ी थी।

"माफ़ कीजिये राज साहब, मैं अन्दर ग़ुसलखाने में थी।"

"मैंने तीन बार दरवाज़ा खटखटाया था। मैं जाने ही वाला था।" और राज कुरसी पर बैठ गया।

"आज आप अकेली हैं?"

"अकेली तो नहीं, हम दो हैं।"

"ओह, मेरे यहाँ होने का आपको ध्यान है।"

वह आइने के सामने खड़ी हो गई और बालों में कंघी करने लगी।

"माफ़ कीजियेगा मैं अभी नहाकर आई हूँ, तनिक मेक-अप कर लूँ। आपको 'मेक-अप' वाली लड़कियाँ अच्छी लगती हैं?"

"मन पर 'मेक-अप' न हो तो कोई बात नहीं।"

"यह तो मिलने-जुलने के बाद मालूम होता है।"

"कई बार पहली मुलाक़ात ही में मालूम हो जाता है।"

"अगर मालूम हो गया होता तो आप यहाँ न आते।"

"माता जी कहाँ हैं?"

"वे बाहर गई हुई हैं, अभी आती होंगी।"

"और आपके भाई साहब?"

"वे चीज़ें खरीदकर लाने के लिए माता जी के साथ गये हैं।"

"आप भी बाहर जा रही हैं?"

"अगर आप इजाज़त दें, तो।"

"मेरी इजाज़त लेकर क्या कीजियेगा? आप स्वयं अपने दिल की मालिक हैं।"

 "जी हाँ, हूँ तो, लेकिन—"

शीला चुप हो गई और साड़ी का पल्लू ठीक करते हुए कहने लगी—"मैं एक मिनट में आई।" और वह फिर गुसलखाने में चली गई।

एक मिनट बीता।

राज को लगा जैसे एक साल गुज़रा।

एक मिनट बाद शीला इठलाती हुई अन्दर आई।

"माफ़ कीजिएगा, मैं तनिक लिपस्टिक और पाउडर लगा रही थी।"

"शौक़ से लगाइयेगा।"

"आप क्या पीजियेगा ?"

"इस समय प्यास नहीं।"

"चाय पीजिएगा ?"

"आपकी वाणी में रस है। आपकी बोली बड़ी मीठी है।"

"जी हाँ, लखनऊ में काफ़ी समय रह चुकी हूँ।"

राज फिर चुप हो गया और कमरे को देखने लगा।

"आप कुछ विकल-से जान पड़ते हैं ?"

"विकल तो नहीं। हाँ, अपने को यहाँ अजनबी-सा जरूर महसूस कर रहा हूँ।"

"वह क्यों ?"

"कहीं आप मेरे आने का कुछ ऐसा-वैसा मतलब तो नहीं निकालतीं ?"

"ऐसा-वैसा का क्या मतलब ?"

"मैं यहाँ बड़ी सद्भावना लेकर आता हूँ।"

"क्या किसी ने अशिष्टतापूर्ण व्यवहार किया है यहाँ आपसे ?"

"नहीं तो।"

"फिर आप तकल्लुफ़ क्यों करते हैं ?"

"तकल्लुफ़ नहीं करता, सावधानी बरतता हूँ।"

"आवश्यकता से अधिक सावधानी बरतना अच्छा नहीं होता।"

"आपका नौकर कहाँ है ?"

"वह भी बाहर गया हुआ है। क्या बात है ? आप कुछ nervous से हो रहे हैं।"

"जी—मैं सोच रहा था कि आप अकेली हैं।"

शीला फिर खिलखिलाकर हँस पड़ी और अलमारी की ओर गई। अलमारी खोली, कुछ बिस्कुट निकाल और एक प्लेट में रखकर राज को पेश किये।

"इन्हें खाइए और अकेलापन महसूस न कीजिये।"

"आप कहीं जा रही थीं ?"

"जी नहीं, मैं कहीं नहीं जा रही थी। मैं आपका इन्तज़ार कर रही थी।"

"क्यों मज़ाक कर रही हैं आप ?"

"यानी मैं आपका इन्तज़ार भी नहीं कर सकती ? आप बिस्कुट खाइयेगा। तब खाकर बात कीजियेगा।"

"आप बहुत चालाक हैं!" राज ने अपनी कमजोरी छिपाते हुए कहा।

"आप काफ़ी शर्मीले हैं—" शीला ने मुस्कराकर कहा और अपने होंठों पर ज़बान फेरते हुए बिस्कुट खाने लगी।

"राज साहब, आपने हमारा नाच कभी नहीं देखा ?"

"जी नहीं।"

"कहिये तो अभी नाचकर दिखाऊँ ?"

"अगर आपकी अम्मी आ गईं तो ?"

"वे देखकर खुश होंगी।"

"अगर नाराज़ हो गईं ?"

"तो मैं उन्हें मना लूँगी।"

शीला अपनी कुर्सी से उठी और राज की कुर्सी के पीछे खड़ी हो गई।

"राज साहब आपकी profile अच्छी है। अगर आप फ़िल्म में काम करें तो सचमुच हीरो बन सकते हैं।"

शीला उसके पीछे खड़ी थी। राज अगर चाहता तो शीला की गर्दन में दोनों बाहें डालकर उसके चेहरे को अपने होंठों के पास ला सकता था, चूम सकता था।

"आपने कभी कोशिश नहीं की ?" रुककर, उत्तर न पाकर "दानी फ़िल्म में काम करने की।"

राज चुप रहा। वह केवल यही सोच रहा था कि वह कोई ऐसी हरकत न कर बैठे जो शीला को बुरी लगे। उसने सामने बड़े आइने में देखा—शीला उसके पीछे खड़ी थी। दोनों की निगाहें आइने से टकरा गईं।

मस्तिष्क का कोना-कोना विस्फुटित हो गया—मन चीख़-चीख़कर कहने लगा 'शीला तेरे पीछे खड़ी है, तेरे बिलकुल निकट, बिलकुल समीप, इतनी समीप कि तू उसे पकड़ सकता है, उसे छू सकता है, अपनी बना सकता है।'

राज ने अपना हाथ शीला के हाथ पर रखा। शीला खड़ी रही, उसने कुछ न कहा। राज का दिल धक-धक करने लगा। उसकी दोनों बाहें शीला की गर्दन में पड़ गईं और उसने एक झटके से शीला को झुकाकर उसके होंठों को चूम लिया और देर तक उनको चूमता रहा और शीला ने कुछ न कहा। राज के होंठ शीला के होंठों पर कँपकँपाते रहे, और फिर कँपकँपाते हुए कपोलों की ओर बढ़ गए जहाँ हंस के पँखों और कश्मीरी शालों-जैसी नर्मी और कोमलता थी। वहाँ से वे आँखों की ओर, और फिर उसकी श्वेत गर्दन की तरफ़ आ गए जहाँ एक काला तिल था। शीला का आधा शरीर राज की बाहों में था और शीला ख़ामोश थी। शीला की आँखें बन्द थीं। राज ने अपने होंठों से शीला की पलकों को चूमा—कितनी लम्बी और काली-काली पलकें थीं। और फिर उसकी निगाहें शीला की छातियों की ओर चली गईं जो घायल पक्षियों की तरह फड़फड़ा रही थीं। उसका शरीर प्रज्वलित हो उठा और कानों में आग-सी लग गई। उसके शरीर में ज्वालामुखी की गर्मी भर गई थी। इतने में किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। शीला तुरन्त उसकी गोद से चौंककर उठ खड़ी हुई। राज भी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

शीला ने उसे बैठने को कहा और आइने में जाकर बाल सँवारने लगी और फिर लिपस्टिक लगाई। वह मुस्कराती हुई गई और दरवाज़ा खोल दिया।

उसका नौकर अन्दर दाखिल हुआ।

राज ने नौकर को देखा, उसका ढाढ़स बँधा—कहीं शीला की माँ आ जाती या उसका भाई। शीला ने नौकर को कोई चीज़ लेने के लिए फिर बाहर भेज दिया।

"आपने तो ग़जब कर दिया राज साहब, अगर माता जी आ जातीं तो?"

"मैं वास्तव में शर्मिन्दा हूँ, शीला!"

"आप अपनी भावनाओं पर क़ाबू नहीं रख सकते।"

"मैंने बुरी बात नहीं की। मेरा दिल चूमने को चाहा और मैंने आपको चूम लिया।"

"आप वहशी हैं। इतने ज़ोर से चूमा है कि मेरा निचला होंठ कट गया।"

"दिखाइये तो!" राज ने उन होंठों को फिर देखना चाहा।

"साहब दूर रहियेगा।"

राज कुछ झेंप-सा गया। क्या सचमुच उसकी हरकत निन्दनीय थी! आखिर उसने क्या किया था—केवल शीला को चूमा था। और चूमने की इच्छा और इस इच्छा की पूर्ति कोई बुरी बात न थी। स्त्री से प्रेम करना कोई हीनता नहीं! अगर उसने पूछा होता यानी इजाज़त ली होती और वह ना कर देती तो वह क्या करता? अगर शीला की मर्ज़ी न होती तो वह उसके पीछे क्यों खड़ी होती? क्या हर एक लड़की यों राज की कुरसी के पीछे खड़ी होगी? अगर शीला के दिल में उसके लिए प्रेमयुक्त भावनाएं न होतीं तो वह इतनी देर चुप क्यों रहती? पहले ही झटके में उसने क्यों थप्पड़ रसीद न कर दिया! वह चुप क्यों हो गई? क्यों उसने अपने को उसकी गोद में समर्पित कर दिया और चूमने की इजाज़त दे दी थी? क्या शीला उस समय खुश न थी?'

"आप क्या सोच रहे हैं?"

"अब मुझे इजाज़त दीजियेगा।"

 "फिर कब आइयेगा?"

"अब शायद न आ सकूँ।" राज ने उसे छेड़ते हुए कहा।

"भूलियेगा नहीं!" शीला ने उसकी ओर कनखियों से देखा।

जब राज जाने लगा तो शीला ने फिर पूछा—

"बताइये कब आइयेगा?"

"एक-दो दिन बाद।"

"लेकिन अवश्य।"

राज कमरे से बाहर निकल गया। रास्ते में उसे शीला का नौकर मिला। उसने घूरकर राज की ओर देखा और अच्छी तरह राज को सिर से पांव तक देखा। राज का माथा एक सैकिण्ड के लिए ठनका, लेकिन फिर वह आगे बढ गया। जब वह नीचे सड़क पर पहुँचा तो रात अँधेरी और काली हो चुकी थी। समुद्र गहरा और काला हो गया था, परन्तु आकाश पर तारे निखर आए थे। मैरीन लाइन पर बिजली की बत्तियाँ और सुन्दर दिखाई दे रही थीं। आज राज बहुत खुश था। सचमुच खुश था। जब वह घर पहुँचा तो आधी रात बीत चुकी थी। उसके कमरे में एक आनन्ददायक ख़ामोशी और अँधेरा था। बिस्तर पर लेटने के बाद भी वह शीला के होंठों के दबाव का अनुभव कर रहा था—वे होंठ कितने कोमल और कितने गर्म थे। उन्हें चूमकर कितने आनन्द का अनुभव हुआ था। वह अभी तक उन चुम्बनों के आनन्द में डूबा हुआ था। उसने जीवन में पहली बार एक लड़की के होंठों को चूमा था, और उस लड़की के होंठों को जिसने अपनी मरज़ी और अपनी इच्छा से अपने को उसे सौंप दिया था और जिसे किसी बात का लोभ न था, रुपयों की चाह न थी—केवल प्रसन्नता और आनन्द की प्राप्ति ही एक-मात्र जिसका ध्येय था। इन्हीं सुखद क्षणों की स्मृति में उसे नींद आ गई।

: २१ :

दिन काफ़ी चढ़ चुका था और सूरज की नर्म किरणें राज को जगाने के लिए उसके बालों को चूम रही थीं। राज बिस्तर से उठा, गुसलख़ाने गया, मुँह पर ज़रा-सा पानी छिड़का और बाहर निकल गया। आज

वह प्रसन्न था और उसे हर एक चीज़ सुन्दर और रूपवान दिखाई दे रही थी। राज ने इधर-उधर देखा—एक कौआ सामने दीवार पर बैठा चोंचें मार रहा था। सामने के पेड़ पर दो कबूतर इठला-इठलाकर एक-दूसरे के आगे-पीछे फिर रहे थे। दो नारियल के लम्बे-लम्बे वृक्ष आपस में कानाफूँसी कर रहे थे और दूर समुद्र की लहरें किनारे को चूम रही थीं।

आज उसके जीवन में उदासी कम थी, प्रसन्नता का भाव था। वह अपने को हल्का-हल्का अनुभव कर रहा था जैसे जीवन में कुछ मिल गया हो...जैसे उसने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर लिया हो। अभी तक उसके होंठों पर शीला के होंठों का मज़ा ताज़ा था। क्या यह केवल आकस्मिक घटना थी कि उसके सोये हुए जीवन में बहार अपना आँचल फैलाये आ रही थी? बहार आई ही नहीं थी बल्कि उसने बहार की सुगन्ध को सूँघा भी था, उसके फल को चखा भी था। जीवन का रूप कितना कोमल और मोहक हो जाता है जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की ओर मैत्रीपूर्ण भावनाओं से देखता है। जीवन कितना घिनौना रूप धारण कर लेता है जब इनसान इनसान को वहशियाना निगाहों से देखता है। क्या शीला को सचमुच राज से प्रेम हो गया था या केवल राज को शीला से प्रेम हुआ था? 'अगर शीला को राज से प्रेम न होता तो'—और वह यह सोचकर रुक गया। सामने एक गाय खड़ी थी जिसके थनों को एक मासूम बछड़ा मुँह लगा रहा था। उसे देखकर गाय ने बछड़े के एक लात जमाई, लेकिन बछड़ा माँ के थनों के साथ चिपटा रहा। राज आगे बढ़ गया। दोनों ओर झाड़ियाँ थीं और बीच में रास्ता था—छोटा-सा रास्ता। उसने पास की झाड़ी से एक टहनी तोड़ी, उस पर से पत्ते साफ़ किये और दातन करने लगा। दातन करते-करते वह सड़क पर चलने लगा। जब वह कच्ची सड़क छोड़कर कोलतार की सड़क पर पहुँचा तो उसे एक माँ और दो बच्चे दिखाई दिये। दोनों बच्चे बड़े प्यार से अपनी माँ की ओर देख रहे थे। वे उँगली छुड़ाकर सड़क पर भागने लगे। माँ उनके पीछे भागी और उसने हँसते हुए दोनों को जा पकड़ा। वह एक बच्चे को एक ओर और दूसरे को दूसरी ओर

लेकर सड़क के किनारे खड़ी हो गई; क्योंकि दूर से एक लारी आ रही थी। लारी पास से गुज़र गई, मानो एक बड़ी आफ़त टल गई और माँ अपने बच्चों की उँगलियाँ पकड़े हुए बड़े आराम से आगे बढ़ गई। हवा ज़ोर-ज़ोर से चलने लगी। हवा का एक झोंका आया और उसके बालों को चूमता हुआ आगे बढ़ गया। राज देर तक सड़क पर खड़ा होकर फैली हुई प्रकृति को देखता रहा। सामने भूमि फैली हुई थी और उस पर झाड़ियों के अतिरिक्त कुछ न था। जब समुद्र में ज्वार की लहरें उठतीं तो समुद्र का पानी इधर आता और इस सारे भूमि के टुकड़े को जलमग्न कर देता। यह दृश्य बड़ा अद्भुत होता और पूर्णमासी की रात को तो और भी अद्भुत होता। चारों ओर पानी-ही-पानी—ऊपर चाँदनी, शीतल, श्वेत, शान्तिदायक और कोमल—कई बार वह किनारे पर इस चाँदनी में नहाया था। लेकिन उन दिनों वह अकेला होता था, सिवाय चाँद और चाँदनी के, और फैली हुई पानी की विस्तृत चादर के दूसरा कोई उसका संगी न होता। क्या एक रात शीला उसके साथ इस तट पर आयगी और वे दोनों इस चाँदनी में नहायंगे? इस तट पर बैठकर इस दृश्य को एक साथ निहारेंगे? दूर तक नारियल के वृक्ष आपस में गले मिलते रहेंगे, हवा फ़र्राटे भरती हुई चलती रहेगी और समुद्र की लहरें उनके पग चूम-चूमकर समुद्र में लौटती रहेंगी? वह यह सोच रहा था कि एक लारी ने हार्न बजाया। वह चौंककर एक ओर खड़ा हो गया। चाँद की चाँदी-जैसी चाँदनी के बजाय सूरज की गर्म, तेज़ और भेदती हुई किरणें उसके शरीर में प्रवेश कर रही थीं। यह कितनी सुन्दर धूप थी जो इतने प्यार से उसे चूम रही थी। बहुत देर तक वह घूमता रहा, फिर घर की ओर लौटा। आज उसका जी चाह रहा था कि वह हँसकर लोगों से बातें करे। कोई परिचित मिल जायगा तो वह उसे चाय पिलायगा, गप्पें हाँकेगा और किसी अच्छे रेस्तराँ में खाना खिलायगा। राज को ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे बहुत समय बाद उसे छुट्टी मिली है और वह इस छुट्टी के दिन को पूरे मज़े और मनमाने ढंग से बिताना चाहता था ताकि उसके मस्तिष्क पर जो बोझ वर्षों से पड़ा हुआ था वह हल्का हो जाय, शोक और

उदासी के स्थान पर प्रसन्नता और उल्लास का राज्य हो जाय।

यह सोचते-सोचते वह सामने वाले कॉफ़ी-हाउस में चला गया। इस कॉफ़ी-हाउस में बहुत लोग आते थे, कॉफ़ी पीते थे, गप्पें हाँकते थे और चले जाते थे। वह एक कुर्सी पर बैठ गया। बैरा आया। उसने कॉफ़ी का आर्डर दिया और खाने को कुछ चीज़ें मँगाईं। बैरा चला गया और वह इधर-उधर देखने लगा। लोग बहुत कम थे। यहाँ बारह बजे के बाद काफी भीड़ हो जाती थी। वह किसी परिचित व्यक्ति को ढूँढना चाह रहा था। सहसा उसकी दृष्टि सामने वाले दरवाज़े की ओर गई—एक जानी-पहचानी शक़्ल दिखाई दी। राज ने मस्तिष्क पर बहुत जोर दिया परन्तु आगन्तुक का नाम याद न आया। कहीं-न-कहीं उसे देखा अवश्य था—शायद बार में; देखा एक ही बार था; कहीं तो देखा अवश्य ही होगा। आगन्तुक उसके पास से निकला। उसने भी राज को पहचानने का प्रयास किया—वह एक क्षण के लिए ठिठक गया।

"मैंने आपको कहीं देखा है," राज ने हिचकिचाते हुए कहा।

"मैं भी यही सोच रहा था कि आपको देखा अवश्य है, बैठिये।"

"ओह! याद आया। शायद आपको रेस में देखा था, शीला के साथ।"

"बिलकुल ठीक," राज ने हड़बड़ाते हुए समर्थन किया, "मैं और शीला चाय पी रहे थे। मेरा नाम राज है।"

"और मेरा नाम रमेश।"

"आप कॉफ़ी पियेंगे?"

"जी, अवश्य पिऊँगा।"

राज ने रमेश की ओर देखा—काफ़ी सुन्दर आदमी था। लेकिन ऐसा लगता था कि उसे अच्छा भोजन नसीब नहीं होता, तभी उसके चेहरे की रंगत फीकी-फीकी थी। कमीज़ कुछ मैली-सी थी और दाईं ओर का कॉलर कुछ फटा हुआ था। सिर के बाल सँवारे हुए थे और चेहरे पर गम्भीरता और उदासी झलकती थी—ऐसी गम्भीरता और उदासी जो विचारशीलता और गहरे अध्ययन से उत्पन्न होती है। ऐसी

 झूठी और ऊपरी उदासी नहीं जो प्रेमिका को प्राप्त न करने के कारण

अक्सर चेहरों पर झलक आती है।

"उस दिन बड़ी संक्षिप्त-सी मुलाक़ात हुई थी। न मैं आपको जान सका और न आप मुझे।"

इतने में बैरा आ गया। राज ने बैरे को एक कॉफ़ी और लाने का आर्डर देकर रमेश से पूछा—

"क्या खायेंगे आप ?"

"कुछ नहीं, केवल गर्म पानी। हाँ, उस दिन बातें भी क्या होतीं; आप शीला के साथ थे। आप शीला को कब से जानते हैं ?"

"उस दिन पहली ही बार मुलाकात हुई थी।"

"ओह।"

"और आप ?"

"मैं उन्हें काफ़ी समय से जानता हूँ, परन्तु सिवाय जानने के और किसी प्रकार की दिलचस्पी नहीं रखता। एक बार 'शो' में मुलाकात हो गई थी—मुझे उनका नाच पसन्द आया था। बस वही परिचय की पहली सीढ़ी थी। इसके बाद आगे बढ़ने का साहस न हुआ और हालात ने इजाज़त न दी।"

"हालात ने इजाज़त न दी ? क्या मतलब आपका ?" राज ने कॉफ़ी पीते हुए पूछा।

रमेश कुछ देर के लिए चुप हो गया, जैसे समुद्र के तल तक पहुँचकर फिर ऊपर उभर रहा हो।

"अच्छा यह बताइये कि आप क्या काम करते हैं ?"

"काम करता था, अब तो बे-काम हूँ।"

"पहले क्या करते थे ?"

"एक फ़र्म में नौकर था।"

"फ़र्म क्या हुई ?"

"दिवाला निकल गया। और आप क्या काम करते हैं ?" राज ने बड़ी गम्भीरता से प्रश्न किया।

"काम तो मैं बड़ा अच्छा करता हूँ लेकिन शायद आपके पसन्द न आयगा।"

"सम्भव है कि आपका काम मुझे पसन्द न आय, परन्तु आप मुझे बेहद पसन्द आए हैं।"

"साहब मैं—" वह सहसा रुक गया और इधर-उधर देखने लगा।

"आप कहते-कहते रुक क्यों गए?"

"वास्तव में पहले मैं एक गवर्नमेण्ट ऑफिस में नौकर था। वहाँ चापलूसी न कर सका। अपने आत्म-सम्मान का स्वयं हनन न कर सका। जी चाहा कि बाहर आकर व्यापार करूँ, लेकिन व्यापार में लूट-खसोट और शोषण देखा। उसमें भी मन न लगा। साम्यवाद पर किताबें पढ़ने लगा—इस तरह कम्युनिस्ट बन गया। पाँच-छः साल से पार्टी में काम कर रहा हूँ। वास्तव में यह जीवन मेरी रुचि के अनुकूल सिद्ध नहीं हुआ, यानी जिस युग में हम जी रहे हैं उसकी व्यवस्था बहुत दूषित है। एक ईमानदार व्यक्ति बिना अपने स्वाभिमान को कुचले, प्रगति नहीं कर सकता।" रमेश फिर इधर-उधर देखने लगा जैसे किसी को ढूँढ़ रहा हो। उसने जल्दी से कॉफ़ी पी डाली।

"आप कहाँ रहते हैं?"

"यहाँ पास ही रहता हूँ?"

"क्या आपने शादी कर ली है?"

"जी नहीं।" रमेश जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

"कहाँ जा रहे हैं, आप?"

"अपने घर।"

"क्या मैं भी आपके साथ घर तक चल सकता हूँ?"

"शौक़ से।"

राज ने कॉफ़ी पी ली थी। बैरा आया, बिल चुकाया गया और वे दोनों बाहर निकल आए। बस में बैठकर वे एक स्टैण्ड पर उतरे। पास के एक मकान में गये। दूसरी मंजिल पर एक कमरे के सामने पहुँचकर रमेश ने जेब से चाबी निकाली, कमरा खोला और दोनों ने अन्दर प्रवेश किया।

: २२ :

कमरा सजा हुआ न था। केवल किताबें ढंग से रखी हुई थीं। कोई पलंग न था। बिस्तर ज़मीन पर बिछा हुआ था और ऐश-ट्रे में सिगरेट के कुछ टुकड़े निर्जीव लाशों की भाँति पड़े थे। सामने की दीवार पर लेनिन और स्टालिन के चित्र, मेज़ पर बिखरे हुए काग़ज़ों के अतिरिक्त क़लम और दवात। खूँटी पर कुछ कपड़े लटक रहे थे। कोने में एक टीन का बक्स था, जिसमें ताला था ही नहीं।

"यही मेरी दुनिया है। सिगरेट पीजियेगा।"

"जी, मैं सिगरेट नहीं पीता।"

"यह आप अच्छा करते हैं। दुनिया में सिगरेट ही एक ऐसी चीज़ है जिसके पीने से किसी प्रकार का लाभ नहीं होता। डॉक्टर ने मुझे मना किया है परन्तु यह मुँह को लगी है, छूटती ही नहीं।"

"आप कहाँ तक पढ़े हैं?"

"आपका क्या विचार है?"

"मैं ज्योतिषी तो हूँ नहीं!"

"आपका सवाल क़ाफी हास्यजनक है। पढा हुआ तो एम० ए० तक हूँ। इंगलिश में एम० ए० किया है, लेकिन इस पढाई ने कुछ नहीं सिखाया। केवल शेक्सपीयर के ड्रामों से कुछ सीख पाया हूँ। बाक़ी पढाई तो निष्फल ही रही।"

"आपने यह जीवन क्यों अपनाया?" राज ने बात की तह तक पहुँचने की कोशिश करते हुए कहा।

"मैंने आपको पहले ही बता दिया कि मुझे यह झूठा, अप्राकृतिक जीवन तनिक भी पसन्द नहीं। पहले मैं सोचता था कि कोई एक पुर्ज़ा ख़राब है परन्तु अब ज्ञात हुआ कि इसका कोई एक पुर्ज़ा ही नहीं, यह सारी मशीन खराब है।"

"मशीन से क्या मतलब?"

"इस युग से।"

"तो आप कांग्रेस-संस्था के सदस्य क्यों नहीं बन गए?"

"कांग्रेस का कोई उद्देश्य और लक्ष्य नहीं है। ये केवल शासन करना

चाहते हैं। तीन वर्षों में इन लोगों ने क्या किया है? आप भी शिक्षित हैं। आप ही बताइये कि तीन सालों में इन्होंने स्थिति में क्या सुधार किया? क्या बेकारी कम हुई? क्या चीज़ों के मूल्य घटे? क्या जनता का जीवन-स्तर ऊँचा हुआ? क्या फुटपाथ पर सोने वालों को घर मिले? आख़िर इस आज़ादी का क्या फ़ायदा जिससे नंगे शरीर न ढक सकें, जिससे पेट न भर सके, रहने के लिए मकान न मिलसके और करने के लिए काम-काज न मिल सके? बताइये राज साहब, इस आज़ादी और उस गुलामी में क्या अन्तर है?"

"लेकिन धीरे-धीरे सब-कुछ हो जायगा—कांग्रेस को अभी कुछ और समय दीजिये।"

"क्या आप अख़बार पढ़ते हैं?"

"कभी-कभी।"

"आप हर रोज़ अख़बार पढ़ा कीजिये, तब आपको मालूम होगा कि लोगों की दशा कितनी बिगड़ती जा रही है। मैं तो केवल यह कहता हूँ कि यदि बेकारी दूर नहीं कर सकते तो ब्लैक-मार्केट बन्द कर दें। यह तो उनके बस की बात है। केवल सिगरेट और शराब बन्द करने से क्या लाभ? आप जीवन की मूल समस्याओं को नहीं सुलझा सकते तो कम-से-कम ब्लैक-मार्केट ही बन्द कर दो। लेकिन वे ऐसा नहीं कर सकेंगे। यह पूँजीवाद का युग है और इस युग में ऐसी असामाजिक कुरीतियाँ चलती रहती हैं। जब तक इस युग को न बदला जायगा, तब तक हालत नहीं सुधरेगी। आप कुछ खायेंगे?"

"अभी तो कॉफी पीकर आये हैं हम लोग।"

"अच्छा! क्या विचार है आपका इन बातों के सम्बन्ध में?"

"मैंने कभी सोचा नहीं।"

"आप अजीब आदमी हैं। आप पढ़े-लिखे हैं। कभी-कभी इन बातों पर अवश्य विचार कीजिये कि इन समस्याओं का समाधान किस प्रकार हो सकता है। अगर आप-जैसे लोग इन बातों पर विचार न करेंगे तो कौन करेगा? आख़िर यह ऐसी बात नहीं जिस पर सोच-विचार न किया जा सके या इन कठिनाइयों का हल न ढूँढ़ा जा सके।

राज साहब, दूसरे देशों की ओर देखिये, वे कितनी जल्दी प्रगति कर रहे हैं। रूस को देखिये। हाल ही में हुई चीन की क्रान्ति को देखिये। इन देशों में जनता की दशा एकदम सुधार दी गई है। भूखों और नंगों को अन्न, नौकरी और वस्त्र आदि दे दिये गए हैं। उन्होंने देश से भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ फेंका है। औरतों को मर्द के समान दर्जा दिया है। जागीरदारी व्यवस्था को खत्म किया है और साम्यवाद की नींव रखी है। अगर रूस और चीन अपने देश से बेकारी, भ्रष्टाचार, वेश्या-वृत्ति और ब्लैक-मार्केटिंग को दूर कर सकते हैं तो हम क्यों नहीं कर सकते? यह सीधी-सी बात है जो हर साधारण व्यक्ति की समझ में आ जानी चाहिए।"

"तो क्या पूँजीवाद के युग में रहकर हम बेकारी और भूख को नहीं मिटा सकते?"

"जी नहीं, बिलकुल नहीं। अमरीका में पूँजीवाद अपने शिखर पर है। वहाँ भी बेकारी है, वहाँ हब्शियों पर अत्याचार किया जाता है, गुलाम रखकर उनसे काम लिया जाता है। वहाँ औरतें वेश्या बनकर शरीर बेचती हैं और आज अमरीका जो-कुछ कर रहा है वह आपकी आँखों के सामने है। पहले ब्रिटिश-साम्राज्य समस्त एशिया में अपने पंजे गड़ाये हुए था, अब अमरीकी साम्राज्य सारे संसार को डालर का गुलाम बनाये हुए है।"

"लेकिन अमरीका के लोग तो बहुत सीधे-सादे होते हैं?"

"मुझे अमरीका की जनता और वहाँ के साधारण लोगों से कोई वैर-भाव नहीं। लेकिन जो लोग शासन चलाते हैं, जिनके हाथ में ताकत है, वे एटम बम के जोर पर राज्य करना चाहते हैं। आपने देखा कोरिया की लड़ाई..."

"वहाँ तो उत्तरी कोरिया वालों ने पहले आक्रमण किया।"

"अरे साहब, लड़ाई उत्तरी और दक्षिणी कोरिया वालों के बीच थी। कोरिया एक प्रदेश है, वहाँ एक जाति के लोग रहते हैं। अमरीकनों ने इस प्रदेश के दो भाग कर दिये ताकि कोरिया का आधा भाग उनके अधीन रहे, हवाई अड्डे उनके पास रहें, और जब तीसरा महायुद्ध

आरम्भ हो तो ये लोग इन अड्डों को रूस के विरुद्ध प्रयोग में ला सकें। ये तो सीधी-सादी-सी बातें हैं। इन्हें बताने की आवश्यकता नहीं। मेरा विचार है कि आप मेरी इन राजनीतिक बातों से अवश्य तंग आ गए होंगे। आप अपनी बात कहियेगा।"

"मैं वास्तव में आपकी बातें सुनने आया हूं। आप काफ़ी दिलचस्प आदमी नज़र आते हैं।"

"साहब, मैं चिड़ियाघर का पत्ती नहीं हूँ कि आप मुझमें इस प्रकार की दिलचस्पी लें। फिर भी हर आदमी को अपने जीवन-निर्माण का अधिकार है और मैंने इस अस्त-व्यस्त सामाजिक दशा में अपने लिए यह रास्ता निकाला और इस रास्ते पर अग्रसर हूँ और कम्युनिस्ट-पार्टी में काम करता हूँ।"

"आप यहाँ अकेले रहते हैं?"

"जी हाँ।"

"आपने शादी क्यों नहीं की? मैंने कम्युनिस्टों के सम्बन्ध में बड़ी अद्भुत बातें सुनी हैं कि ये लोग गन्दे रहते हैं, सिर के बाल नहीं मुँड़वाते, दाँत साफ़ नहीं करते, काम नहीं करते, सिगरेट बहुत पीते हैं।"

"लेकिन आपने कभी यह नहीं सुना कि कम्युनिस्ट जेलों में गोली किस प्रकार खाते हैं। लाल झण्डे को किस तरह ऊँचा उठाए रखते हैं, और किस साहस और संयम से आगे बढ़ते हैं। अपने देश की आज़ादी के लिए मर मिटते हैं। आज कांग्रेस-सरकार की गोलियाँ कौन खा रहा है? किसने शासकों की गोलियाँ अपनी छाती पर सही हैं? कौन थे वे शूरवीर नवयुवक जिन्होंने सलोम जेल और नासिक जेल में गोलियों का सामना किया और जवानी ही में मौत का शिकार हुए? क्या हमने फ्यूचक पैदा नहीं किये जो पार्टी की आवाज़ सुनकर मौत के मुँह में कूद पड़ें? यह आप ठीक कहते हैं कि कम्युनिस्ट लम्बे बाल रखते हैं। लम्बे बाल रखना कोई दोष नहीं। बाल तो टण्डन जी के भी लम्बे हैं। बाक़ी अच्छे और बुरे साथी हर एक पार्टी में होते हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि हम लोग अपनी गलती मान लेते हैं और दूसरे नहीं मानते।"

"आपसे मिलकर मुझे सचमुच बहुत प्रसन्नता हुई है और आपकी बातें सुनकर मन से बहुत-से संशय दूर हो गए हैं। परन्तु यह और बताइये कि आपने विवाह क्यों नहीं किया ?"

"भाई पहली बात तो यह है कि आजकल इतने रुपये नहीं होते कि आदमी निर्वाह कर सके, विवाह कर सके। और अगर विवाह करेगा तो बच्चे भी पैदा होंगे। फिर उनकी पढ़ाई-लिखाई का प्रबन्ध भी होना चाहिए। केवल बच्चे पैदा करने से क्या लाभ ?"

"और प्रेम ?"

"किया है, अवश्य किया है, और अगर कभी अवसर मिला तो अवश्य करूँगा। परन्तु विवाह करने के लिए मुझे एक ऐसी जीवन-संगिनी चाहिए जो मेरे साथ चल सके, मेरे रास्ते में रोड़ा न अटकाये, मेरे लिए एक जटिल समस्या बनकर न रह जाय। बल्कि यों कहो कि हम दोनों क़ाफिले के साथ चलते रहें और क़ाफ़िला आगे बढ़ता चले। अभी तक ऐसी लड़की नहीं मिली इसीलिए विवाह नहीं किया।"

"और अपनी काम-वासना को कैसे शान्त करते हैं आप ?"

"जब सामने एक लक्ष्य, एक उद्देश्य हो तो उसके आगे काम-वासना क्या महत्त्व रखती है ? जब हम मौत से नहीं डरते तो जीवन के अन्य ऐश्वर्य त्यागने ही पड़ते हैं।"

"क्या आपको मौत से डर नहीं लगता ?"

"लगता है, और अवश्य लगता है। जीवन से कौन प्यार नहीं करता ? राज, औरत से कौन प्यार नहीं करना चाहता ? इस नीले आकाश और फूली हुई पौ से किसे प्यार न होगा ? अपनी माँ और अपने बच्चों के साथ रहना कौन नहीं चाहता ? आखिर मैं भी एक इनसान हूँ। एक सम्पूर्ण जीवन बिताना चाहता हूँ। परन्तु जब हालात ऐसे हों, जब वातावरण ऐसा दूषित हो कि एक सच्चा-सीधा व्यक्ति भली प्रकार सुखमय जीवन न बिता सके तो प्रत्यक्ष है कि वह इन हालातों को बदलने की कोशिश करेगा। और मैं यह जानता हूँ, मुझे ही क्या, हम सब कम्युनिस्टों को यह ज्ञात है कि हमको मौत का सामना करना पड़ेगा। हम नए जीवन के अग्रपंथी हैं। हम नए युग की मशाल हैं।

हम नई चेतना के दीप हैं। अगर एक दीप बुझ जाता है तो कोई बात नहीं। दूसरा दीप उसकी जगह ले लेता है। हमारे साथ सचाई है, मानवता है, समस्त संसार की जनता है। इसलिए मुझे विश्वास है कि अन्त में जीत हमारी ही होगी। सम्भव है कि मैं इस युद्ध में, सचाई, मानवता और शान्ति के संघर्ष में मारा जाऊँ। लेकिन इस मौत का मुझे दुःख न होगा, तनिक भी पछतावा न होगा—" यह कहकर रमेश चुप हो गया। एक क्षण के लिए कमरे में सन्नाटा छा गया। बहुत समय बाद राज ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क में आया था जिसका कोई उसूल था, जिसका वास्तव में कोई सिद्धान्त था। जिसके जीवन का एक निश्चित मार्ग था। जीवन को नए साँचे में ढालने की जिसमें लगन थी। इस वातावरण को बदलने की जिसमें गहरी चाह थी। जीवन से प्यार था। मौत से टक्कर लेने की शक्ति थी। उदासीनता, असफलता और अन्य कठिनाइयों का सामना करने का साहस था। इस वातावरण को बदलकर एक नई दुनिया बसाने की लालसा और इच्छा थी। केवल इच्छा ही नहीं थी बल्कि वह इस पथ पर अग्रसर था। वह सोच विचार नहीं कर रहा था, वह दोराहे पर नहीं खड़ा था, वह काम कर रहा था। राज ने सोचा कि रमेश जवान है। वह बड़ी आसानी से एक सुन्दर लड़की से शादी कर सकता है। वह पढ़ा-लिखा है और आसानी से नौकरी प्राप्त कर सकता है। वह विवेकशील है और थोड़े-से परिश्रम से उच्च पोज़ीशन तक पहुँच सकता है। लेकिन उसने यह रास्ता नहीं अपनाया। आखिर क्यों? इसीलिए कि जीवन दुःख, विषाद और निराशा से इतना असह्य और बोझल हो गया था कि उसे बदलने की आवश्यकता थी। रमेश की बातों ने राज के दिल में एक आग-सी लगा दी। उसे जीवन के एक नए रास्ते का पता दिया। वह वहाँ से उठा, रमेश से साम्यवाद के विषय की कुछ किताबें लीं और फिर मिलने का वचन देकर कमरे से बाहर आ गया।

: २३ :

 जब राज घर पहुँचा तो रात हो चुकी थी। आकाश पर बादल

थे और हवा ज़ोर-ज़ोर से चल रही थी। वह दिन-भर का थका हुआ था। आज उसने जी भरकर खाना खाया था। रमेश की बातें सुनी थीं। रमेश की बातें उसके मस्तिष्क पर अंकित हो गई थीं। उसे एक नया रास्ता मिल गया। उसके मस्तिष्क के अन्धकारमय कोनों में एक बिजली-सी कौंध गई थी। उसे संसार को सुन्दर और सुखमय बनाने का सच्चा मार्ग मिल गया था। वह बहुधा अख़बार पढ़ा करता था। लेकिन केवल ख़बरें। उसने मार्क्सिज्म, साम्यवाद, फ़ासिज़्म और अन्य 'इज़्मों' के सम्बन्ध में सुना था। उसने इनके बारे में कुछ पढ़ा भी जरूर था, परन्तु उसका ज्ञान पूर्ण न था। आज उसने एक जीता-जागता पात्र देखा था जो आग की लपटों से खेल रहा था। जिसके साहस के आगे हर चीज़ छोटी और तुच्छ थी। वह यही बातें सोचते हुए कपड़े उतारने लगा। पतलून उतारकर वह पाजामा पहनने लगा और फिर वह दरवाज़े की ओर गया। एक लिफ़ाफ़ा पड़ा हुआ था। यह ख़त तीरथ का था। उसमें लिखा था :

"प्यारे राज, पूना

मैं जब से यहाँ आया हूँ, तुम्हें खत न लिख सका। इसके लिए क्षमा माँगता हूँ। जब से यहाँ आया हूँ हमीदा मेरे साथ है। जिस बात की मैं आस मनाता था, जिन इच्छाओं और कामनाओं को मैं अपने वक्ष में पालता था, वह पूरी होती हुई दिखाई पड़ती हैं। यह जीवन कितना सुन्दर है। मेरे पास एक कमरा है जिसकी खिड़की एक बाग़ में खुलती है। उस बाग़ में फूल खिले हुए हैं और इस समय हमीदा फूल तोड़कर अपने बालों में लगा रही है। मेरे सारे स्वप्न पूरे हो रहे हैं। आज हमीदा मेरे पास है। उसका हर साँस मेरी आत्मा में रचा हुआ है। मैं आज कितना खुश हूँ। मेरी रग-रग में प्रसन्नता और उल्लास की लहरें दौड़ रही हैं। इस समय मेरे पास सब-कुछ है। एक सजा हुआ कमरा, जेब में रुपये और पहलू में हमीदा। मैंने कार गिरवी रख दी है। यह मेरी अन्तिम पूँजी थी। मैं अपनी इस अन्तिम पूँजी से जीवन की हर एक खुशी ख़रीदना चाहता हूँ। मैं हमीदा को रुपयों में नहला दूँगा। उसकी हर एक माँग और प्रत्येक इच्छा पूरी

कर दूँगा ताकि उसको विश्वास हो जाय कि मैं सचमुच उसे चाहता हूँ। मुझे वास्तव में उससे प्यार है। हमीदा मुझसे कुछ खिंची-खिंची-सी रहती है। लेकिन वह जब से मेरे साथ आई है और जब से उसका महबूब से साथ छूटा है वह कुछ उदास और शोकातुर भी दिखाई देती है। मुझे आशा है कि धीरे-धीरे वह उसे भूल जायगी। आख़िर महबूब उसके लिए क्या करेगा? आज तक उसने क्या किया है? इस बात को हमीदा न कभी सोचती है और न इस पर विचार करती है। लेकिन यह सब-कुछ होते हुए भी अब हमीदा मेरा ध्यान रखती है। बिस्तर साफ़ रखती है, कपड़े निकालकर देती है, चाय बनाकर प्याला पेश करती है और जब कभी बात करता हूँ तो हँसकर जवाब देती है।

मेरे लिए यह क्या कम है? एक बात मैं तुम्हें अवश्य बताऊँ। मुझे दुनिया के बनाने वाले पर बड़ा क्रोध आता है कि उसने मुझे कुरूप क्यों बनाया। लेकिन राज, मेरे पास रुपये हैं, धन है। और धन संसार में सर्वोच्च वस्तु है। परमात्मा साक्षी है कि आज मैं कितना खुश हूँ। जब सुबह हमीदा नहा-धोकर एक सुन्दर-सी साड़ी पहनकर मेरे सामने आती है और मुस्कराकर मेरी ओर देखती है तो सहसा मेरे मस्तिष्क पर मादकता की बदली छा जाती है। तुमने शायद हमीदा को ध्यान से नहीं देखा। उसके बालों को नहीं देखा कि वे कितने नर्म और मुलायम हैं। राज, मुझे उससे अगाध प्रेम है। मैं उसके बिना नहीं रह सकता। लेकिन राज, रुपये धीरे-धीरे खत्म हो रहे हैं। होटल का खर्च कम नहीं है। मित्र भी आते हैं और ये रुपये मैंने कार को गिरवी रखकर प्राप्त किये हैं। मुझे विश्वास है कि अब कार नहीं मिल सकेगी। लेकिन जब रुपये ख़त्म हो जायंगे तो मैं क्या करूँगा? कहाँ जाऊँगा, इस प्रेम का क्या होगा? हमीदा का क्या होगा? हो सकता है कि इस बीच में मैं हमीदा के हृदय पर पूर्ण-रूप से अधिकार प्राप्त कर लूँ। उसके मन में से महबूब का प्रेम उखाड़ फेंकूँ। वह सदा के लिए मेरी बन जाय। उसकी हर चीज़ मेरी अपनी हो जाय—उसके सुनहले बाल, उसके गुलाबी कपोल, उसका शरीर, उसकी छातियाँ,

उसकी मुस्कराहट, उसकी लजीली निगाहें, उसकी इठलाती हुई चाल, उसकी मधुर वाणी, उसका रूठना, मेरा मनाना, उसका भागना, मेरा पीछा करना—सब-कुछ मेरा अपना हो जाय। आज मौसम कितना सुहावना है। मेरे कमरे की खिड़की खुली हुई है और मैं देख रहा हूँ कि हमीदा ने एक गुलाब का फूल तोड़कर अभी-अभी अपने बालों में लगाया है और दूसरा फूल तोड़कर अपने जूड़े में बाईं ओर लगा रही है। जी चाहता है कि खिड़की में से कूदकर बाग़ में पहुँच जाऊँ और उसे अपने बाहु-पाश में बाँध लूँ और उन फूलों को चूम डालूँ जो उसके सुनहले केशों में शोभा पा रहे हैं।

मैं जानता हूँ कि इस खत को पढ़कर तुम अवश्य हँसोगे। लेकिन इसके अतिरिक्त जीवन में है भी क्या? रुपया, औरत और कुछ नहीं। लेकिन कभी-कभी यह विचार आकर सताने लगता है कि अगर रुपया खत्म हो गया तो? जब रुपया खत्म हो जायगा तो मेरी क्या दशा होगी? हमीदा की क्या दशा होगी? लेकिन अब विदा दो, क्योंकि हमीदा मेरी ओर आ रही है। वह खिड़की के पास आ गई है। वह अपनी मोह लेने वाली निगाहों से मुझे देख रही है और एक कोमल गुलाब के फूल को धोकर अपने होंठों से चूम रही है—अब आज्ञा दो—मैं जाता हूँ। उसके पास जाता हूँ। उसके और अधिक पास जाता हूँ।

तुम्हारा—

तीरथ"

जब राज तीरथ का पत्र पढ़ चुका तो उसे उसकी दशा पर दया आई। लेकिन वह काफ़ी समय तक इस प्रेम-कहानी के विभिन्न पहलुओं पर सोच-विचार करता रहा। हमीदा का ध्यान आते ही उसे शीला का ध्यान हो आया। सोई हुई भावनाएं फिर जागृत होने लगीं। उसने बिजली का बटन बन्द कर दिया और कमरे में अँधेरा छा गया। इस अँधेरे में वह सोने का प्रयास करने लगा। वह सोच रहा था—'तीरथ और रमेश में कितना अन्तर है: दोनों मनुष्य हैं, पढ़े-लिखे हैं लेकिन दोनों के जीवन-मार्ग कितने पृथक्-पृथक् हैं। एक ओर प्रेम का अन्धा खड्ड है और दूसरी ओर जन-सेवा की उच्च-भावना। एक ओर अपनी

निजी इच्छाओं की पूर्ति का उद्देश्य है और दूसरी ओर समस्त देश-वासियों की प्रगति और समृद्धि का लक्ष्य। एक ओर एक स्त्री का शरीर पाने के लिए तीरथ अपना जीवन नष्ट कर रहा है और दूसरी ओर स्त्री-प्रेम है परन्तु नियन्त्रित और उसके साथ-साथ जीवन को सुधारने का दृढ़ संकल्प। एक ओर रास-रंग की महफिलों, स्त्रियों की मुस्कराहटों और उनके बालों के लिए जान देना और दूसरी ओर देश की स्वतन्त्रता किसान-मज़दूर-राज्य के लिए तड़प, भूख और बेकारी मिटाने की निरन्तर कोशिश और इस कोशिश में जान तक दे देने का संकल्प। यह कितनी महान् कोशिश थी, इस कोशिश में मनुष्य कितना महान् और ऊँचा हो जाता है—जैसे हिमालय की चोटी। इस ऊँचाई पर पहुँचकर अगर मनुष्य को उद्देश्य-पूर्ति के लिए जान भी देनी पड़ जाय तो कोई बात नहीं। किसी बात का दुःख नहीं। ऐसी मृत्यु कितनी सुन्दर और गौरवपूर्ण होती है। ऐसी मृत्यु केवल शहीदों और पुण्यात्माओं को ही नसीब होती है। लेकिन शीला......अगर शीला उसकी जीवन-संगिनी बन जाय। जीवन-भर उसका साथ दे तो'—और इन्हीं विचारों के झमेले में उसे नींद आने लगी। वह सो गया।

: २४ :

राज फिर शीला से मिलने गया। लेकिन शीला घर पर न मिली। शीला की माँ का व्यवहार राज के साथ अच्छा न था। पहली बार वह कुछ देर ठहरा। दूसरी बार केवल पूछकर चला आया और किसी ने उसे बैठने तक को भी नहीं कहा। उस समय कमरे में उसकी माँ के अतिरिक्त और कोई न था। वह पलंग पर लेटी हुई थी। ज्यों ही उसने प्रवेश किया वह सँभलकर बैठ गई। राज ने शीला के बारे में पूछा। शीला की माँ ने सिर हिला दिया और वह बाहर चला आया। न शीला घर में थी और न उसका भाई। राज ने सोचा कि शायद शीला उससे मिलना नहीं चाहती। परन्तु मन के एक कोने से आवाज़ आती थी कि 'उससे एक बार मिलकर पूछ तो लो—शायद कोई बात हो। वह कुछ कहना चाहती हो, उससे एक बार मिलकर सब बातें सुलझा लो और

फिर उससे न मिलना।'—इस प्रकार कई दिन बीत गए और वह असमंजस में गिरफ्तार रहा कि क्या करे ? शीला से कैसे मिले ? घर पर वह मिलती नहीं, बाहर कहाँ ढूँढे ?' एक दिन राज फिर शीला से मिलने चला गया। दरवाज़ा बन्द था। अन्दर से आवाज़ें आ रही थीं जैसे कोई लड़ रहा हो, किसी से बक रहा हो। दरवाज़ा खुला—शीला उसके समक्ष खड़ी थी। राज को देखते ही उसका रंग पीला पड़ गया। राज अन्दर जाने के लिए आगे बढ़ा ही था कि शीला दरवाज़े में खड़ी हो गई।

"कल शाम को छः बजे, चर्च गेट के सामने"—उसने मुस्कराने का प्रयत्न करते हुए कहा, "इस समय मुझे क्षमा कीजिये। मुझे आशा है आप—" और वह चुप हो गई और राज लौट गया। रास्ते-भर वह सोचता रहा—'अद्भुत लड़की है। इसके घर के हालात अजीब हैं। वह रेस वाली मुलाकात, फिर उसके घर आना और फिर दूसरी मुलाक़ात और अब यह रूखापन। इसका कारण ? आखिर इस तरह का सलूक क्यों।' राज के मन में कुछ घृणा के भाव उभर आए और उसने सोचा कि अपने प्रेम का गला घोंटने का यही अवसर है। वह ऐसे व्यवहार को सहन नहीं कर सकता। इससे पहले वह दो बार आया तो उसकी माँ ने घूर-घूर कर देखा और आज शीला ने किसी कारण उसे अन्दर न आने दिया। 'शायद कोई विशेष कारण होगा,' मन ने समझाया, 'घर में झगड़े होते हैं, लड़ाइयाँ होती हैं। आपकी दो दिन की मुलाक़ात है। आप उसके घर के स्वामी किस तरह बन सकते हैं।' यह सोचकर राज शान्त हो गया। आखिर कल तो फैसला हो ही जायगा। वह साफ़-साफ़ कह देगा कि यों प्रेम नहीं किया जा सकता। आखिर क्या बात है कि यों चोरी-चोरी मिला जाय।

वह दिन राज ने सड़कों और बाज़ारों में घूम-घामकर बिताया। रात्रि को घर में चुपके-से जा सोया। दूसरे दिन शाम को राज तैयार हो गया। आज सचमुच उसके प्रथम और अन्तिम प्रेम का फैसला होने वाला था। यह प्रेम कितनी तेज़ी से बढ़ा और उसका अन्त भी कितनी जल्दी होने वाला था। शायद भावी घटनाएं अपनी परछाइयाँ उसके

मस्तिष्क पर डाल रही थीं। आज राज ने एक अच्छा सूट पहना था। एक नई नैकटाई लगाई थी। बूट को पॉलिश लगाया था और बालों को अच्छी तरह सँवारा था। शीशे में बार-बार अपना चेहरा देखा था। वह बदसूरत न था कि लड़कियाँ उससे बातें न करतीं। वह वास्तव में सुन्दर था। इसमें सन्देह न था। तभी तो शीला ने उसे चुना था। यही सोचते-सोचते वह घर से निकला। सूरज अस्त हो रहा था और आकाश में लाली धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। पक्षी अपने घोंसलों की ओर उड़े जा रहे थे और हवा में शीतलता और नर्मी थी। आज की शाम कितनी सुन्दर, कितनी आकर्षक और कितनी सलोनी थी। शीला का ध्यान आते ही राज ने सोचा कि आज सब बात तै हो जायगी। वह उससे कह देगा कि 'यों प्रेम नहीं हो सकता, मेरी जान, यों प्रेम नहीं हो सकता।'

जब वह चर्च गेट पर पहुँचा तो दाईं ओर एक कार दिखाई पड़ी। उसमें दो आँखें प्रतीक्षा करती नज़र आईं। एक हाथ आगे बढ़ा और उसे बुलाया। अरे यह तो शीला थी जो कार में बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। कार का दरवाज़ा खुला। वह कार में बैठ गया।

"उस दिन आप नाराज़ हो गए थे। मैं आज उसके लिए माफी माँगने आई हूँ।" शीला ने हँसते हुए कहा। राज शर्मा-सा गया। शीला की उपस्थिति ने उसके श्वासों को तेज़ कर दिया था। उसने शीला की ओर देखा। आज वह ऐसी बन-ठनकर बैठी हुई थी जैसे उसने सुहाग-रात का जोड़ा पहनकर पूर्ण श्रृङ्गार किया हो। उसके बालों में फूल लगे हुए थे और वस्त्रों से इत्र की सुगन्ध आ रही थी और कानों में दो गोल-गोल बुन्दे विकम्पित थे।

"ड्राइवर, गाड़ी चलाओ।" शीला ने कहा।

"किधर ?"

"सीधे।"

"सीधे किधर ?"

"उधर, ऊपर की सड़क पर।"

 और कार चलने लगी। शाम हो चुकी थी। बिजली की बत्तियाँ

जल चुकी थीं लेकिन सड़क कारों से पटी पड़ी थी। कारें आ रही थीं, कारें जा रही थीं। राज ने फिर शीला की ओर देखा। वह अजब अन्दाज़ से मुस्करा रही थी। उसने चुप्पी तोड़ते हुए कहा—

"मैं इससे पहले दो बार आपसे मिलने आया था लेकिन आप घर पर नहीं थीं।"

"जी हाँ, मैं बाहर गई थी।"

"कहाँ?"

"काम पर।"

"आपकी माँ का व्यवहार मुझसे अच्छा न था।" राज ने जी कड़ा करके कह ही दिया।

"अगर बड़ों से बे-अदबी हो जाय तो उसे माफ़ कर देना चाहिए।"

"आप कहाँ जा रही हैं?"

"इस शहर से बहुत दूर।"

"क्या लौटने का इरादा नहीं?"

शीला कुछ चुप रही। राज चौंका।

अब कार आबादी से आगे निकल गई थी। ड्राइवर ने कार तेज़ कर दी। बाहर कहीं-कहीं रोशनी थी वरना हर ओर अन्धेरा, घुप अन्धेरा और पूर्ण शान्ति। उसने शीला का हाथ अपने हाथों में ले लिया और फिर ड्राइवर की ओर देखा—ड्राइवर स्टीयरिंग को सँभालने में लगा था। उसने शीला का हाथ दबाया। हाथ कितना नर्म और गर्म था। उसने दायें हाथ से शीला के बायें हाथ को अपनी ओर खींचा और फिर उसके होंठों पर झुका। उसने होंठों पर एक नर्म-सा चुम्बन अंकित किया और फिर ड्राइवर की ओर देखा—ड्राइवर कार चलाने में तल्लीन था। राज के मन में आया कि वह शीला के मद-भरे होंठों को चूम-चूम डाले, परन्तु ड्राइवर की उपस्थिति ने उसे रोके रखा। शीला ने उसकी ओर देखा और वह बात समझ गई और मुस्करा पड़ी। फिर जीभ दिखाकर उसे चिढ़ाने लगी। अगर वह चाहता या शीला चाहती तो कार के अन्दर के बटन को दबा सकती थी। लेकिन दोनों ने अन्धेरे को अधिक पसन्द किया।

वे एक-दूसरे से सटे हुए बैठे थे। उनके बीच में यदि कुछ था तो केवल अन्धेरा। ऐसे समय अन्धेरा कितना भला लगता है। कितना प्यारा, कितना सुन्दर, कितना मोहक और कितना नर्म और गर्म। कार एक जगह आकर रुक गई।

दोनों कार से उतरे।

सामने समुद्र था और बड़ी शान्तिपूर्ण स्वास ले रहा था। लहरें आ रही थीं, जा रही थीं। कभी-कभी एक लहर ज़ोर से आती और किनारे से टकराकर एक रहस्यपूर्ण गूँज पैदा करती और फिर लौट जाती।

"ड्राइवर, हम अभी आते हैं।" शीला आगे बढ़ गई।

वह उसके पीछे हो लिया।

"आप इधर पहले आ चुकी हैं?" राज पहली बार ही इधर आया था। यहाँ तो अजीब निस्तब्धता और रहस्यपूर्ण अन्धकार था। सामने समुद्र, फैला हुआ समुद्र; जो इस समय काला स्याह दिखाई पड़ रहा था। चाँद अभी तक निकला न था, केवल तारे जगमगा रहे थे। उस रास्ते से आगे वृक्षों के झुण्ड-के-झुण्ड थे।

"अगर यहाँ हमें कोई जान से मार दे तो?" राज ने शीला की ओर देखकर कहा।

"आप आइये तो सही।" वे दोनों आगे बढ़े और वृक्षों के एक झुण्ड में प्रवेश कर गए। अब घास उनके पाँव चूम रही थी। शीला वृक्ष के पास पहुँचकर रुक गई।

"यहाँ बैठ जाइये।"

"ठहरिये, मैं रूमाल बिछाता हूँ।"

"अप्राकृतिक चीज़ों पर बैठने से कोई लाभ नहीं। घास पर बैठी जाती हूँ।"

"आप यहाँ बिलकुल अकेली हैं।"

"लेकिन आप मेरे साथ हैं।"

"ओह, मैं तो यह बिलकुल भूल ही गया। लेकिन आप इधर क्यों आईं?"

"मैं यहाँ अक्सर आती हूँ। जब मेरा मन उकता जाता है तो जंगल की तरफ आती हूँ।"

"क्या आपको यहाँ डर नहीं लगता ?"

"नहीं तो।"

वह चुप हो गया। एक क्षण तक वह चुप रहा और उसके बाद उससे न रहा गया। और अगर वह विद्युत्-गति से शीला को अपनी बाहों में न भींच लेता तो शायद उसका दिल फट जाता। उसके मस्तिष्क की रगें तनकर टूट जातीं। ऐसे क्षण कब आते हैं, क्यों आते हैं और क्यों आयेंगे ? उसने अपनी समस्त शक्ति से शीला के होंठों को चूमा और उन पर अपने प्रेम की छाप लगा दी। शीला कुछ न बोली। अब दोनों घास पर लेट गए। शीला ने अपना हाथ राज की छाती पर रखा।

"यहाँ बाल हैं, खुरदरे, कड़े। बड़े अच्छे लगते हैं।"

(राज के हाथ शीला की थरथराती हुई छातियों की ओर बढ़े। उसने ब्लाउज़ के बटन खोले। अपने जलते हुए होंठ उन दो फड़फड़ाते हुए पक्षियों पर रख दिये। दोनों घास पर लेटे हुए थे। चुपचाप, एक-दूसरे के बिलकुल निकट। घास नर्म और मुलायम थी। दोनों को अनुभव हो रहा था जैसे उनकी साँस रुक गई हो। इन उल्लासपूर्ण क्षणों को देखकर सृष्टि का चक्र रुक गया हो, समुद्र की लहरें थम गई हों, उसका शोर अपनी जगह ठहर गया हो। नीचे घास थी, ऊपर नीला आकाश, तारे चारों ओर फैले हुए, नर्म अँधेरा। यह प्रेम, यह जलन, यह तृप्ति, यह नर्मी—हँसों के पंखों की नर्मी, गदराया शरीर नर्म, जैसे रुई के गाले, सुन्दर, मादक, आकर्षक होंठ, आँखें, कपोल, शरीर, जैसे दो शरीर न हों, केवल एक शरीर हो, केवल एक, और कोई न हो, न शीला न राज, केवल एक भावना, एक मन, एक निगाह, एक शोला, एक संगम और कुछ नहीं, खुशी और उल्लास कुछ नहीं—सचमुच कुछ नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं।)

जब दोनों इस स्वप्न से जागे तो राज ने कहा—

"शीला।"

"जी।"

वह कुछ कहना चाहता था। वह कहना चाहता था कि शीला कि तुम मेरी हो जाओ। यानी तुम मुझे पसन्द हो बेहद पसन्द। तुम जो-कुछ हो ठीक हो। मैं तुमसे शादी कर लूँगा। तुम मेरे साथ रहोगी। और मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं काम कर लाऊँगा, तुम घर सँवारोगी। कितने मज़े की जिन्दगी होगी। क्या वह यह सब-कुछ कह दे? मन ने कहा, 'कुछ देर और ठहर जाओ। इस समय शादी की बात करना उचित न होगा।'

"क्या सोच रहे हो?"

"यही कि इस अँधेरे में तुम कितनी सुन्दर दिखाई दे रही हो।"

"मैं अँधेरे में अकसर सुन्दर दिखाई देती हूँ," शीला ने हँसकर कहा, "लेकिन दिन के उजाले में..."

"दिन के उजाले में और अधिक सुन्दर हो जाती हो।"

"समय काफी हो गया!" शीला उठी।

राज उठा।

शीला ने राज की ओर देखा।

"शीला मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ।" राज ने काँपती हुई आवाज में कह दिया।

शीला हँस पड़ी।

क्या तुम इसे मज़ाक़ समझती हो?"

"नहीं तो। देखो, इधर आओ।"

राज और निकट आ गया।

शीला ने अपने होंठ उसकी ओर कर दिए और राज ने उन कँप-कँपाते हुए होंठों को चूम लिया। फिर शीला ने उसके होंठों को चूमा। अपने कोमल होंठों से उसके होंठों को छुआ। राज के सारे शरीर में बिजली की एक लहर दौड़ गई। ये होंठ नर्म और गर्म थे और इनके चूमने का एक सुन्दर ढंग था। अन्धकार और निस्तब्धता इतनी गहरी थी कि कोई आवाज़ सुनाई नहीं देती थी, केवल दो होंठों के चुम्बन की आवाज़ आ रही थी। और कुछ नहीं, सचमुच कुछ नहीं। इस भावना

 में कितनी गहराई थी, कितनी सचाई थी, कितनी तपन थी। इस समय

कोई न था, सचमुच कोई न था, केवल इनसान और प्रेम; और कुछ नहीं।

राज ने फिर से कहा—"शीला तुमने मेरी बात का उत्तर नहीं दिया।"

"यह हमारे प्रेम की प्रथम रात्रि है। राज, आज मैं तुम्हारी बातों का उत्तर नहीं दूँगी और यह समय विवाह का नहीं प्रेम का है," और वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। राज को ऐसा लगा जैसे सारा जंगल हँस पड़ा हो। पास ही एक पेड़ पर दो पत्ती फड़फड़ा रहे थे और एक पत्ती उस पेड़ से उड़कर दूसरे पेड़ पर चला गया। शीला ने राज की बाँह थाम ली और उसका सहारा लेकर चलने लगी।

"अब जल्दी चलो, देर हो गई है।"

वे दोनों कार के पास पहुँचे। ड्राइवर ऊँघ रहा था। शीला ने उसे जगाया। दोनों कार में बैठे और कार चल दी। 'यह सच मेरे प्रेम की प्रथम रात्रि थी, कितनी सुन्दर और कितनी सुहावनो'—राज ने सोचा और सोचते-सोचते समय बीतता गया। उजाड़ सुनसान इलाका पीछे रह गया। शीला उसके कन्धे का सहारा लिये बैठी थी। शायद वह सो रही थी। अब सड़क साफ़ और खुली थी। दोनों ओर बिजली की बत्तियाँ थीं और आसपास ऊँचे-ऊँचे मकान खड़े उनकी ओर देख रहे थे। अँधेरे के बाद जब उजाला आता है तो कितना नया-नया दिखाई देता है। अब चर्च गेट आ गया। वह कार से उतरा।

शीला ने बटन दबाया, कार में प्रकाश फैल गया।

"इससे पहले तो अँधेरा था।"

"मुझे अँधेरा अच्छा लगता है।"

"अब कब मिलोगी?"

"एक हफ़्ते बाद।"

"इससे पहले नहीं?"

उसने सिर हिलाया।

"मुझे तुमसे बहुत-सी बातें करनी हैं।"

"मैं सुनने के लिए तैयार हूं।"

"फिर अब कब?"

"अगले इतवार।"

"कहाँ ?"

"इसी जगह।"

शीला ने मद-भरी निगाहों से उसकी ओर देखा। पलकें नींद और खुमार से बोझल हो रही थीं। पवित्र और निर्लोभ प्रेम की ज्योति से शीला का चेहरा जगमगा रहा था, लेकिन होंठों पर अभी तक वही कम्पन था। निचला होंठ बाहर को निकला हुआ था और दूसरा होंठ उसे चूमने के लिए तैयार था।

: २५ :

जब राज घर पहुँचा तो काफ़ी रात हो चुकी थी। चारों ओर एक सन्नाटा था। केवल समुद्र की लहरें किनारे से टकराती थीं और एक क्षण के लिए शोर-सा मच जाता था और दूसरे क्षण फिर निस्तब्धता छा जाती थी। राज आज बहुत प्रसन्न था। जीवन में इतनी प्रसन्नता उसे आज तक न मिली थी। जीवन में पहली बार उसने एक स्त्री के शरीर को प्रेम-पाश में बाँधा था। शीला उसके जीवन में अकस्मात् आ गई थी। एक तूफ़ान ने उसे चारों ओर से घेर लिया था। 'यह किस तरह की लड़की थी जिसने बिना सोचे-समझे अपने-आपको उसे सौंप दिया। क्या शरीर का कोई मूल्य नहीं होता ? शायद शीला को उससे प्रेम हो गया था—अगाध, असीम। और प्रेम में इनसान एक-दूसरे का मूल्य नहीं पूछा करते। कितना कोमल, मांसल और मादक था उसका शरीर। कितना रेशमी और उल्लासप्रद था उसका स्पर्श। शायद जीवन स्त्री के बिना अपूर्ण, अधूरा होता है। उसे भी शीला से प्रेम हो गया था। शीला के साथ रहकर राज के मन में एक क्षण के लिए पाप की भावना उत्पन्न न हुई। उसने सचमुच शीला के साथ सम्भोग किया था लेकिन उसमें पाप-भावना न थी। शीला ने अपने को राज की बाँहों में सौंपा था परन्तु इसमें शर्म, झिझक या डर की भावना सम्मिलित नहीं थी। अगर उन दोनों के मन में कोई भाव था तो केवल प्रेम का, मित्रता का इनसानियत का।' यह सोचते-सोचते

 उसने अपने कपड़े उतारे और सोने के कपड़े पहनकर बिस्तर पर लेट

गया और खिड़की को खोल दिया। बाहर रात अँधेरी थी और नारियल के पेड़ काले दानवों की भाँति खड़े थे। लेकिन आकाश में तारे चमक रहे थे। हाँ, अभी तक चाँद न निकला था या वह निकलकर पेड़ों की ओट में चला गया था। रात सचमुच अनोखी और अद्भुत थी, रहस्यमयी और लुभावनी। शायद ऐसी रात अब कभी न आयगी? शायद ऐसी रात आयगी, अवश्य आयगी। यह सचमुच अनोखा प्रेम था। न सवाल, न जवाब, न शिकायत न उलाहने, न लेन न देन, यह प्रेम क्यों होता है? उसका क्या परिणाम होगा। क्या परिणाम का ध्यान रखा जाय? क्या इस समय उचित इच्छाओं का दमन किया जाय, जिससे प्रेम का गला घुट जाय? या प्रेम-सागर में निर्भय होकर डुबकियाँ लगाई जायं और लहरें जहाँ ले जाना चाहें, ले जायं? प्रेम की लहरें भी कितनी नर्म और गर्म होती हैं। जब दो प्राणियों का संयोग होता है तो उनमें प्रसन्नता, आनन्द और उल्लास के कितने शोले उठते हैं। क्या राज ने ग़लती की थी?—शायद नहीं। उसे शीला से प्रेम क्यों है? शीला को उससे प्रेम क्यों है? उसने किसी और व्यक्ति से प्रेम क्यों नहीं किया? शीला ने बिना घनिष्ठता बढ़ाये ही अपने को उसे क्यों सौंप दिया? कोई जानने की कोशिश नहीं करता। प्रेम अच्छा होता है या बुरा? बेकार अर्थहीन सवाल—प्रेम कभी बुरा नहीं होता। इनसान-इनसान का प्रेम कभी दूषित नहीं होता। प्रेम सदैव पवित्र होता है। राज शीला से बिछुड़कर उदास-सा हो गया था, मानो वह शीला से अलग होना न चाहता था। शीला के साथ रहना चाहता था, सदा के लिए। एक क्षण का बिछोह भी असह्य था। वह कोशिश करेगा, पूरी कोशिश करेगा कि शीला सदा के लिए उसकी हो जाय और उसकी प्रेम-साधना सफल रहे। लेकिन शादी से पहले, नौकरी'—वह सोच में पड़ गया।

'दुष्ट तीरथ अभी तक लौटा न था। वह आ भी गया तो क्या हो जायगा। उसकी फर्म कभी की फ़ेल हो चुकी और बची-खुची सम्पत्ति को वह फूँके डाल रहा था। अब तो उसे नई नौकरी ढूँढ़नी होगी। आखिर वह कब तक घर में बैठकर खाता रहेगा। अगर कल

शीला उससे कुछ माँग बैठे तो—अभी तक उसने शीला को एक भी चीज़ भेंट न की थी। उसे कुछ काम न था। वह अवश्य नौकरी ढूँढ़ेगा और फिर शीला से कहेगा कि मेरे इसी कमरे में आ जाओ। हम दोनों एक-साथ रहेंगे—एक कमरा, मैं और तुम, और कोई नहीं और फिर एक सुन्दर-सा बालक—कोमल शरीर और मुलायम बालों वाला। वह तुतला-तुतलाकर बातें करेगा और ठुमक-ठुमककर उसकी ओर आयेगा। शायद अंधेरे के बाद रोशनी इसी को कहते हैं। राज यही कुछ सोच रहा था कि किसी ने दरवाज़ा खटखटाया।

राज ने दरवाज़ा खोला। जुम्मन—तीरथ का नौकर—खड़ा था।

"अरे तुम यहाँ, और इस समय!"

"बाबूजी जल्दी चलिए।"

"क्या हुआ? कहाँ चलूँ?"

"तीरथ साहब की जान ख़तरे में है।"

"तीरथ कहाँ है?"

"आप मेरे साथ चलिये तो सही।"

राज ने कपड़े पहने, जल्दी से बूट के तसमे बाँधे और जुम्मन के साथ हो लिया।

बाहर टैक्सी खड़ी थी।

उसमें बैठे।

टैक्सी चलने लगी।

"क्या तुम अभी उनके साथ थे?"

"मैंने उनका पीछा कब छोड़ा था!"

"वह तो पूना में थे।"

"नहीं साहब, वह इसी शहर में थे।"

"कहाँ?"

"रोशन होटल में।"

"क्या? लेकिन उनका ख़त तो पूना से आया था।"

"नहीं साहब, वह होटल में थे। मैं उनके साथ था। हमीदा उनके साथ थी।"

"हमीदा को क्या हुआ ? वह कहाँ है ?"

"हमीदा की वजह से ही तो यह सब-कुछ हुआ ।"

"क्या हुआ ?"

"वह कल होटल से भाग गई ।"

"किसके साथ ?"

"मुझे क्या मालूम ।"

"भागने से क्या मतलब ? जब इस शहर में थे तो भागना कैसा ?"

"थी तो इसी शहर में, लेकिन जब से तीरथ साहब यहाँ से गये, दोनों इकट्ठे रहते थे और मैं हमीदा की रखवाली किया करता था । उसे किसी से मिलने न देता था । वहीं पर खाता, पीता और सोता था । तीरथ साहब बड़े खुश थे । उन्होंने अपनी कार बेच डाली । लेकिन कल हमीदा घर से निकल भागी—मैं शायद सो रहा था और बाबू बाहर गये थे । वह कल ही बाहर गये थे । बस वह ग़ायब हो गई ।"

"शाम को तीरथ साहब खूब पीकर घर लौटे, पाँव लड़खड़ा रहे थे और आँखें लाल हो रही थीं । कहने लगे टैक्सी लाओ । मैं टैक्सी लाया । हम दोनों हमीदा के घर पहुँचे । घर का दरवाज़ा अन्दर से बन्द था । दरवाज़ा खटखटाया गया । दरवाज़ा खुला और महबूब अली बाहर निकला । वह गुर्राया—'क्या है ?' '

" 'हमीदा कहाँ है ? ' तीरथ साहब ने पूछा ।

" 'हमीदा यहाँ नहीं ।' महबूब ने रौब डालते हुए कहा । तीरथ साहब ने महबूब को धक्का दिया और अन्दर घुस गए । अन्दर हमीदा पलंग पर लेटी हुई थी । उसने सोने के कपड़े पहने हुए थे । उसके ब्लाउज़ के बटन खुले हुए थे । उसने झटपट एक ओढ़नी अपने ऊपर ले ली । हमीदा की आँखें लाल हो रही थीं—उसने भी शराब पी रखी थी ।

" 'तुम भाग कर क्यों आईं ?'

" 'मैं तुम्हारे साथ रहना नहीं चाहती ।'

" 'तुमने इससे पहले क्यों न कह दिया ?'

" 'तुम्हें ख़ुद इस बात का अन्दाज़ा लगा लेना चाहिए था।'

" 'बड़ी बेशर्म हो तुम।'

" इतने शर्मदार और हयादार थे तो यहाँ क्यों आए हो ?'

" 'मुझे यह मालूम होता कि तुम एक कमीनी, कमज़ात औरत हो तो यहाँ कभी न आता। देखती नहीं कि मेरे रुपयों से तुम्हारा कमरा जगमगा रहा है। मेरे ख़ून से तुम्हारे चेहरे पर रौनक़ है, तुम्हारे ही नहीं उस हरामज़ादे महबूब के चेहरे पर भी।'

" 'तो अपनी सब चीज़ें उठाकर ले जाओ।'

" 'तुम मेरे साथ चलो।'

" 'मैं नहीं जाऊँगी, कभी नहीं जाऊँगी, कभी नहीं जाऊँगी।'

" 'क्रोध में आकर तीरथ ने रेडियो तोड़ डाला, मशीन उठाकर बाहर फेंक दी और बाक़ी चीजों को फेंकने लगा। महबूब सब-कुछ देखता रहा। वह कुछ न बोला। तीरथ साहब हारकर बाहर निकल आए। मैंने सहारा दिया। वह टैक्सी में बैठ गए और टैक्सी एक पुल के पास आकर रुकी। तीरथ साहब उतर पड़े और बोले—

" 'तुम जाओ और राज बाबू को यहाँ बुलाकर लाओ।'

" 'मैंने बहुत हाथ-पैर जोड़े कि आप भी साथ चलिये, लेकिन उन्होंने साफ इन्कार कर दिया।' "

जुम्मन यह घटना पूरी सुना भी न पाया था कि टैक्सी पुल के पास पहुँचकर रुक गई। राज और जुम्मन टैक्सी में से उतरे।

तीरथ वहाँ न था।

जुम्मन ने इधर-उधर देखा। तीरथ कहीं नहीं था। उसका दिल काँप उठा।

"कहाँ है वह ?" राज ने चिल्लाकर कहा।

"इस पुल पर बैठे थे।"

"यहाँ तो कोई नहीं।"

पुल के नीचे अँधेरा था।

"क्या तुम्हारे पास टार्च है ?"—राज ने जुम्मन से पूछा।

 "मेरे पास तो टार्च नहीं।"

"ड्राइवर से पूछो।"

जुम्मन ड्राइवर के पास गया। ड्राइवर ने टार्च दी। जुम्मन ने टार्च राज को लाकर दी।

राज ने पुल के नीचे टार्च की रोशनी फेंकी। कुछ दिखाई न दिया। फिर उसने एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक देखना शुरू किया।

"बाबू जी वह क्या ?" जुम्मन ने टार्च राज के हाथ से ले ली और उसकी रोशनी उस जगह डाली जहाँ एक आदमी-सा औंधे मुँह पड़ा था। उसके पास एक कुत्ता खड़ा था।

कुत्ता रोशनी को देखकर गुर्राया।

"आइये, नीचे चलकर देखें।"

दोनों पुल के नीचे गए। बहुत धीरे-धीरे वे आगे बढ़े। कुत्ते ने भोंकना शुरु किया। उन्होंने दूर से टार्च की रोशनी फेंकी, औंधे मुँह पड़ा हुआ एक आदमी दिखाई दिया। जुम्मन दौड़कर उसके पास गया। कुत्ता गुर्राता हुआ आगे बढ गया।

"बाबू जी यह तो तीरथ साहब हैं।"

राज उसके पास पहुँचा। उसे उलट-पुलट कर देखा। उसकी नाड़ी देखी। नाड़ी बन्द थी। सिर में घाव था और घाव से खून बह-बहकर धरती में जज़्ब हो गया था। दिल पर हाथ रखा। दिल की धड़कन भी बन्द थी।"

"यह क्या हो गया। अभी-अभी तो मैं भला-चंगा छोड़कर गया था।"

"आत्म-हत्या कर ली है तीरथ ने !"

"लेकिन क्यों ?"

राज ने तीरथ की जेबें टटोलीं। कागज़ का एक टुकड़ा निकला। उस पर लिखा हुआ था—

"डियर राज,

मैं स्वेच्छा से आत्म-हत्या कर रहा हूँ, मैंने आत्म हत्या क्यों की, इसका कारण तुम जानते हो। उसे दुहराने से कोई लाभ नहीं। मैंने हमीदा के लिए क्या कुछ नहीं किया, लेकिन वह मेरी न हुई। आज मैं अपना जीवन समाप्त कर रहा हूँ। जीवित रहना बहुत कठिन

हो गया है। इस जीवन में तुम्हारे उपकारों का बदला न चुका सका। अच्छा विदा दोस्त, और हमीदा को मेरा अन्तिम सलाम।

तुम्हारा

तीरथ"

जुम्मन और राज ने अन्तिम बार तीरथ की ओर देखा। तीरथ के सामने की ओर रेल की पटरियाँ बिछी हुई थीं। 'प्रेम में कितनी निर्दयता और क्रूरता होती है—' राज ने सोचा—'यह कहाँ की बुद्धिमानी है कि प्रेम में इनसान आत्म-हत्या कर बैठे। कोई और काम किया होता। कुछ और सोचा होता। अगर हमीदा जीवन-संगिनी न बन सकी तो किसी सिद्धान्त को, किसी अन्य उद्देश्य को अपनाया होता जब सोचने का क्षेत्र सीमित हो जाय या जीवन में प्रेम ही एक-मात्र ध्येय या मंजिल बनकर रह जाय और शेष सब रास्ते रुक जायं तो इनसान शायद यही करता है।' उसने जुम्मन की ओर देखा—जुम्मन रो रहा था। उसकी धँसी हुई आँखों से प्रेम के आँसू पिघल-पिघलकर बह रहे थे। शायद यह थे सच्चे प्रेम के आँसू। जुम्मन और तीरथ का नौकर और मालिक का सम्बन्ध था, मूर्खता का सम्बन्ध, जगीरदारी का सम्बन्ध। उसे उन आँसुओं से प्रेम न था। इन आँसुओं में प्रेम था, स्नेह था। लेकिन मालिक और नौकर के असली सम्बन्ध को समझने का असफल प्रयत्न था। शायद यह रोने का अवसर न था। वह तीरथ का मित्र होकर क्यों न रोया और जुम्मन उसकी मौत पर क्यों रोया? क्यों? तीरथ ने सब-कुछ स्वेच्छा से किया था। उसने अपने जीवन को मनमाने ढंग से बिताया। उसने लोगों का ध्यान नहीं किया। नौकरों को तनख़्वाह न दी और अपना जीवन ऐश करने में बिताया। फिर उसने उसकी मृत्यु पर क्यों आँसू बहाये, शायद यह मौत न थी। तीरथ इस मृत्यु से पहले ही मर चुका था।

अब हवा तेज़ चलने लगी। दूर से ट्राम की खड़खड़ाहट सुनाई दी—शायद सुबह होने वाली थी। उसने टैक्सी का किराया चुकाया और वहाँ से चल पड़ा।

तीरथ की मौत के बाद राज कई दिनों तक कुछ न कर सका। वह करता भी क्या?—वह रमेश की दी हुई किताबें पढ़ने लगा। इन किताबों को पढ़ते-पढ़ते उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे वह पहले कुछ जानता ही न था। इन किताबों में एक नई जिन्दगी थी। नये मूल्यों का उल्लेख था। एक नई धरती, एक नया आकाश बनाने का संकल्प था। वह पूँजीवादी युग के सम्बन्ध में थोड़ा-बहुत जानता था, लेकिन उन किताबों को पढ़कर उसके मस्तिष्क में बिजली-सी कौंध गई। बहुत-सी अन्धकारमय राहें आलोकित हो गईं और रोशनी की किरणों ने अज्ञानता के गहरे खड्डों को प्रज्वलित कर दिया। आज तक इनसान किस प्रकार प्रगति करता रहा है—क़बाइली कम्युनिज्म से निकलकर वह जागीरदारी युग में आया और जागीरदारी युग के बाद पूँजीवाद के युग में और पूँजीवाद के युग के बाद समाजवाद के युग में और समाजवाद के युग के बाद अब कम्युनिज़्म—आज तक इनसान आगे बढ़ता ही रहा है। इनसान क्या है? वर्ग-संघर्ष किस प्रकार शुरू हुआ? पूँजीवाद किस प्रकार इजारेदार पूँजीवाद में बदला? भगवान् का क्या अस्तित्व है?

क्या गोरी जातियाँ वास्तव में काली जातियों से उतम हैं? या यह केवल अपनी सत्ता बनाये रखने और शोषण करने का एक ढंग है? क्या अमरीका में सचमुच लोकतन्त्र है या केवल एक ढकोसला, ढोंग और जनता को धोखा देने की एक और चाल? क्या पूँजीवाद का श्राप इस धरती से दूर हो जायगा और संसार समाजवाद से प्रगति करते हुए कम्युनिज्म की ओर बढ़ेगा? इन सब बातो पर उन किताबों में विस्तारपूर्वक बहसें की गईं थीं। एक नया मार्ग दिखाया गया था। एक वैज्ञानिक विचार-धारा पेश की गई थी, जिसके पीछे कोई भावुकता, कोई आध्यात्मिक या धार्मिक भावना काम नहीं करती थी, बल्कि विवेक और ज्ञान को सर्वोच्च माना गया था। इनसान को इस संसार का स्रष्टा माना गया था। वह स्वयं अपना भाग्य-विधाता था। भगवान् कुछ न था, केवल एक वहम, सदियों का बनाया हुआ वहम, एक

काल्पनिक नाम से श्रद्धा-मात्र। केवल जब मनुष्य अपने दुःखों को दूर करने में असफल हो जाता है तो उसकी आँखें और हाथ ऊपर की ओर उठ जाते हैं, वरना वहाँ कोई नहीं है। क्या ये बातें सच थीं? क्या आज के युग में हुकूमत, रुपया, कारें, कपड़े, और बड़े-बड़े कारखाने और दुकानें केवल एक वर्ग के पास हैं और बाकी लोग भूखे और निर्धन हैं? यह एक ठोस सत्य था—सन्देह-रहित। आज संसार के अधिक भाग में ग़रीबी, ग़ुलामी और बेकारी का दौर-दौरा था और सब-कुछ इस पूँजीवाद का दुष्परिणाम था। जहाँ-जहाँ साम्यवाद की नींव पड़ी है, वहाँ-वहाँ बेकारी, भ्रष्टाचार और ग़रीबी की जड़ें खोदकर फेंक दी गई हैं।

जहाँ-जहाँ इन्क़लाब आया है वहाँ-वहाँ डटकर लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी हैं। जब एक वर्ग ने दूसरे वर्ग से शक्ति छीनी, तब वह वर्ग एक पग आगे बढ़ा। आज पूँजीवाद का युग दम तोड़ रहा है। वह आगे नहीं बढ़ सकता। अगर आज कोई शक्ति इसे आगे बढ़ा सकती है तो वह जनता की शक्ति है और इसी शक्ति के हाथों में अब राज्य की बागडोर आने वाली है और इसी के हाथों यह गन्दा युग सदा के लिए समाप्त हो जायगा।

राज ने जब इन बातों पर विचार किया तो उसे इनमें सचाई की झलक दिखाई दी। वह अपनी और करोड़ों आदमियों की दशा देखकर अनुमान लगा सकता था कि इस युग में बड़े-बड़े दोष हैं। इन दोषों को दूर करना आवश्यक है और यह दोष छोटे-छोटे सुधार करने से दूर न होंगे। इन्हें दूर करने के लिए इस युग को बदलना होगा। अगर सब लोग मिलकर आगे बढ़ें, मिलकर काम करें—राज ने अनुभव किया कि अभी उसका और अध्ययन करना चाहिए। उसे रमेश से मिलना चाहिए। यह विचार आते ही वह रमेश से मिलने चला गया। कई दिनों से वह रमेश से मिला न था, उसकी किताबें न लौटाई थीं। तीरथ की मौत ने वास्तव में उसके मन में एक शून्य-सा पैदा कर दिया था, मानो उसके मस्तिष्क का एक कोना खाली हो गया था और उस कोने को
 भरना होगा। तीरथ से उसे प्यार न था। उसकी मौत पर उसने आँसू

न बहाये थे, लेकिन मन जैसे एक रास्ते पर चल रहा था और वह रास्ता सहसा खत्म हो गया। वह आज रमेश से मिलेगा, उसे सारी कहानी सुनायगा और उसके अन्धे प्रेम पर वैज्ञानिक ढंग से बहस करेगा—देखें, रमेश क्या कहता है। क्या वह उसकी आत्म-हत्या पर दुःख प्रकट करेगा?

राज कई दिनों से सोच रहा था कि अब वह इस जगह को छोड़ दे और एक ऐसा छोटा-सा कमरा ले जिसका किराया कम हो, क्योंकि अब उसके पास बहुत कम रुपये रह गए थे। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था कि अगर कहीं काम न मिला तो कुछ दिनों बाद वह भूखा मर जायगा। उसे दूसरा काम ढूँढ़ना था और फिर शीला से मिलना था। पहले वह रमेश से मिल ले। शीला से इतवार को मिलेगा। वह उससे मिलकर सब बातें करेगा। उसने उस रात शादी की बात की थी; वह हँस पड़ी थी। भला शादी के नाम पर वह हँसी क्यों? क्या वह उसका जीवन-साथी न बन सकता था? इस हँसकर टालने का मतलब? शायद वह वैसे ही हँसी थी, एक अल्हड़, भोली और प्यारी हँसी। अब जब वह दुबारा शीला से मिलेगा तो सब बातें खुलकर करेगा। अगर शीला उसकी जीवन-संगिनी बनना स्वीकार कर ले तो वे दोनों मिलकर अच्छा जीवन बिता सकेंगे, प्रगति कर सकेंगे, जीवन के इस नये पथ पर बढ़ सकेंगे।

यह सोचते-सोचते वह ट्रेन में जा बैठा। ट्रेन से उतरकर बस में चढ़ा और फिर रमेश के घर जा पहुँचा। घर का दरवाज़ा खुला हुआ था। वह अन्दर चला गया। रमेश अन्दर न था। वहाँ कुछ और लड़के-लड़कियाँ बैठे थे।

"आप किससे मिलना चाहते हैं?"

"रमेश साहब से।"

"वह तो पकड़ लिये गए।"

"कब?"

"कल रात को।"

"क्यों?"

"आप रमेश को नहीं जानते ?"

"सिर्फ़ दो बार मुलाक़ात हुई है।"

"आप बैठ जाइये।"

और राज बैठ गया।

"आपका नाम ?"

"राज—और आपका ?"

"मैरी, और इनका जगत, यह हैं रूप और यह हैं सविता देवी।"

"लेकिन रमेश साहब क्यों पकड़े गए ?" राज ने रमेश शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा।

"उन्होंने एक लैक्चर दिया था।" मैरी ने मुँह में पैंसिल डालते हुए कहा।

"लैक्चर देना जुर्म तो नहीं है।" राज ने वकालत की।

"आप शायद अख़बार नहीं पढ़ते।"

"पढ़ता तो हूँ।"

"तो बस समझ लीजिये कि जो इस युग के ख़िलाफ़ आवाज़ उठायगा, सरकार उसे पकड़कर जेल में डाल सकती है और हम पर तो सरकार की विशेष रूप से कृपा-दृष्टि है। आप क्या काम करते हैं ?"

"पहले एक फ़र्म में काम करता था, आजकल रमेश साहब की दी हुई किताबें पढ़ता हूँ।"

"हिन्दुस्तान में बहुत कम लोग किताबें पढ़ते हैं।"

"पढ़े-लिखे लोग हैं ही बहुत कम।"

"लेकिन जो पढ़े-लिखे हैं वे भी किताबें नहीं पढ़ते।"

"उनके पास फ़ालतू रुपये नहीं होते कि किताबें ख़रीद सकें।"

"सिनेमा देखने के लिए रुपये कहाँ से आते हैं ?"

"यह तो शौक़ की बात है।"

"पढ़ने-लिखने और ज्ञान प्राप्त करने का भी शौक़ होना चाहिए।"

"लोगों के पास धन का अभाव है और चीज़ें इतनी महंगी हो गई हैं कि किताबें खरीदने के लिए पैसे नहीं बचते।"

"अगर वे चाहें तो हर महीने एक किताब अवश्य खरीद सकते हैं।"

"हाँ, शौक होना चाहिए।"

"अगर शौक नहीं है तो पैदा करना चाहिए। आप सिगरेट पियेंगे ?"

"धन्यवाद मैं सिगरेट नहीं पीता।"

"तो पान खाइए !" एक ने पान पेश करते हुए कहा।

"चाय मंगाई जाय ? ईरानी का कप ?"

"मैं चाय पीकर आया हूँ।"

"आप लखनऊ से तो नहीं आये ? आपकी बोली में तकल्लुफ़ ज्यादा है।"

"जी नहीं, मैं लाहौर का रहने वाला हूँ।"

"तो आप शरणार्थी हैं।"

"जी नहीं, मैं बटवारे से पहले ही वहाँ से चला आया था। हाँ वैसे मेरी दशा शरणार्थियों-जैसी ही है।"

"लाहौर की बहुत याद आती होगी।"

"जी हाँ, कभी-कभी माल रोड और अनारकली याद आती है। वहाँ के दोस्त और उनका स्नेह याद आता है। वहाँ की लस्सी और मक्खन याद आता है। वह पांच नदियों का प्रदेश है, बड़ा हरा-भरा।"

"हीर और रांझे की भूमि है। कमबख्त पंजाबी सूट पहनने और प्रेम करने में किसी से पीछे नहीं रहते।"

"मैं तो इन दोनो चीजों से दूर रहा हूँ !" राज ने हिचकिचाते हुए कहा।

"फिर आप पंजाबी नहीं।"

यह सुनकर राज हँस पड़ा।

"मैं यह किताबें लौटाने आया था। लीजियेगा। अब रमेश साहब से रिहाई के बाद ही मुलाकात होगी।"

"जी हाँ, 'कौन जीता है तेरी जुल्फ़ के सर होने तक' सीक्योरिटी एक्ट के मातहत सरकार जब चाहे, गिरफ़्तार कर ले और जब चाहे

छोड़ दे। आप कभी-कभी यहाँ आया कीजिये।"

"ज़रूर, मैं आप लोगों की संगत से अवश्य लाभ उठाऊँगा।"

: २७ :

इस संक्षिप्त-सी मुलाकात के बाद राज रमेश के घर से निकला। रमेश अब सीखचों के पीछे था। अपने सिद्धान्त, अपने विश्वास और अपने ध्येय के लिए वह जेल चला गया। यह कितना कठिन जीवन था। रमेश अकेला न था। उसके बहुत-से साथी थे, सब-के-सब जवान उमंगों और इच्छाओं से भरपूर। एक नये जीवन की कामना उन सब के अन्तर में जागृत थी। एक ऐसे जीवन की कामना, जिसमें प्रेम पनप सके, बेकारी न हो, काम मिल सके, मेहनत का पूरा फल मिल सके, रुपये के लिए अपने को न बेचना पड़े और जनता सुख तथा शान्ति से जीवन बिता सके। ये सब लोग इसी उद्देश्य को लेकर दिन-रात काम करते हैं। रात-दिन के अतिरिक्त परिश्रम और कठिनाइयाँ झेलने से कइयों के स्वास्थ्य बिगड़ चुके हैं। धन का अभाव, भोजन का टोटा लेकिन दिलों में एक मशाल रोशन थी। न अपने जीवन की परवाह, न कष्टों का डर, न मौत का भय। क्या इनकी छातियाँ इस्पात की बनी हैं—राज सोचने लगा और उसके मस्तिष्क के क्षितिज पर बिजलियाँ कौंधने लगीं। प्रेम और जीवन का उद्देश्य। एक सिद्धान्त के लिए, जीवन को सुन्दर बनाने के लिए सारी व्यवस्था को बदलना—इनसान सचमुच एक चमत्कार है। उसके सड़क पर चलते हुए लोगों की तरफ देखा; फिर क्षितिज की ओर दृष्टि डाली। वहाँ से उसकी दृष्टि फैलते-फैलते सारे आकाश पर फैल गई। यह सृष्टि कितनी विस्तृत थी और इसके केन्द्र पर इनसान खड़ा था। शरीर में कितना छोटा, हीन परन्तु अपने इरादों में कितना महान्, कितना तेजस्वी। कितने ऊँचे थे उसके विचार। यह सोचते-सोचते राज पास के रेस्तराँ में चला गया और एक ख़ाली सीट पर बैठ गया। बैरा आया। उसने चाय का आर्डर दिया। उसकी निगाहें रेस्तराँ में बैठे हुए आदमियों पर पड़ने लगीं। कुछ लोग

 चाय पी रहे थे, कुछ आइस-क्रीम खा रहे थे, कुछ सिगरेट पी रहे थे और

कुछ केवल लड़कियों को कनखियों से ताक रहे थे। उसके पास बैठे हुए लड़के ने अपने साथी से पूछा—"यह नई लड़की कौन है ?"

"क्या मैं होटल का बैरा हूँ जो हर लड़की का नाम और पता बताता रहूँ।"

"क्या बैरों को इन लड़कियों का नाम और पता मालूम होता है ? तुम भी कैसी बेकार बातें करते हो।"

"लड़की सुन्दर है—उसके होंठों पर हलकी-सी मुस्कान की आभा है।"

"लड़की असुन्दर है—केवल मुस्कान सुन्दर है।"

"मुस्कान भद्दी है, केवल लड़की सुन्दर है।" तीसरा बोला।

"इससे पहले यह लड़की इधर कभी नहीं आई थी।"

"अगर आती भी होती तो आप क्या कर लेते ?"

"मैं इसकी मोटर का नम्बर नोट कर लेता।"

"इससे पहले कितनी कारों के नम्बर नोट कर चुके हो, उनका क्या फल निकला।"

"लड़कियाँ फँसती ही नहीं, अजब घसियारों का देश है, यहाँ की लड़कियाँ बहुत अशिष्ट हैं।"

"आपके पास है क्या, एक साल से बेकार हैं, काम आपको मिलता नहीं, बाप से रुपये मँगवाकर निर्वाह करते हैं।"

"इन लड़कियों को क्या मालूम कि बाप से रुपये मँगवाकर निर्वाह कर रहा हूँ।"

"आपके चेहरे पर नहूसत बरसती है।"

"मेरे चेहरे पर ? मियाँ ठाठ से रहता हूँ। दो साल हुए बम्बई आया था। आते ही नौकरी मिल गई। फिर एक पारसी लड़की से प्रेम लड़ाया और मजे से दिन बिता रहा हूँ।"

"गप्पें हाँकने में तुम किसी से हेठे नहीं—बेटा वह लड़की तो दिखाओ किसी दिन।"

"परमात्मा की सौगन्ध, अगर तुम देख लोगे तो मूर्छित हो जाओगे।"

"क्यों ? वह लड़की है या भूत-प्रेतनी। यार रहने दो, गप्पें न हाँको।

बाप से कहो कि तुम्हारी शादी कर दे। पारसी लड़की तुम्हारे पास नहीं फटक सकती। वे जाति का बड़ा ध्यान रखती हैं। गोरी चमड़ी पर मरती हैं, और तुम ठहरे काले-कलूटे।"

"तुमसे तो ज्यादा सुन्दर हूँ।"

"तुम्हारी सुन्दरता के क्या कहने—जब से यहाँ आकर बैठे हो कोई दूसरा आदमी यहाँ आकर नहीं फटका।"

राज ने बड़ी मुश्किल से चाय पी और इन नौजवानों की बातों पर कान न धरते हुए उठकर जाना चाहा। तभी हमीदा और महबूब अली ने प्रवेश किया। राज के चेहरे पर पसीना छलक आया। वह बैठा रहा ताकि हमीदा उसे न देख ले। हमीदा और महबूब अली कुर्सियों पर बैठे ही थे कि एक मोटा-सा सेठ उनके पास आकर बैठ गया। दोनों ने सेठ का अभिवादन किया—'तो तीरथ की जगह भर गई।' जिन्दगी का कारवाँ चलता चला जा रहा था, कभी तीरथ कभी यूसुफ़ और कभी तिवारी—इन सबकी सूरतें एक-जैसी थीं, कोई अन्तर न था। एक सेठ गया तो दूसरा आ गया। जब तक आँखों में चमक है, होंठों में रस है, छातियों में उभार है, कूल्हों के फैलाव में एक गठन है और बीच में पतली-सी कमर है और सेठ की जेब में रुपये हैं और यह पूँजीवाद का युग है, यह बातें बनी ही रहेंगी। हमीदा पेशा कमाती ही रहेगी और उसके चारों ओर कई तीरथ और कई महबूब मँडराते रहेंगे। राज आँख बचाकर उठने ही वाला था कि उसके साथ वाली कुर्सी पर एक नौजवान आ बैठा। उसने राज की ओर देखा—"हैलो।"

"हैलो, कालीचरण!" राज ने उसे पहचानते हुए कहा, "तुम कहाँ? बहुत दिन बाद देखा।"

"मैं तो यहीं था।"

"लेकिन रहे कहाँ? लगभग तीन साल बाद दर्शन हुए हैं। क्या कर रहे हो आजकल?"

"बेकार हूँ।"

"खाते कहाँ से हो?"

 "भाई एक पत्रिका निकालता था। घर की पूँजी उसकी भेंट चढ़

गई। अब नौकरी की तलाश में हूं और पूर्ण आशा है कि वह मुझे नहीं मिलेगी। हालत बहुत खराब है।"

"किस तरह की थी पत्रिका?"

"पत्रिका तो अभी तक निकालता हूं लेकिन घाटे में जा रही है—क्या पियोगे?"

"अभी चाय पी है।"

"एक कप और पी लो।"

"अब तुम ने कहा है तो पिये लेता हूं, शराब और बीयर का मिलना तो कठिन हो गया है।"

"वह केवल हमारे लिए। अगर जेब में ब्लैक मार्केट से खरीदने के लिए पैसे हों तो अभी मँगवा सकता हूं।"

"इतने रुपये कहां से लाऊं।"

"यही तो रोना है?"

"तुम क्या करते हो?" कार्ला ने अपने पीले चेहरे को आगे बढ़ाकर पूछा।

"कुछ नहीं बेकार हूं, दौड़-धूप कर रहा हूं। शायद कोई नौकरी मिल जाय।"

"नौकरी कैसे मिलेगी! किसी मन्त्री से दोस्ती या रिश्तेदारी हो तो शायद नौकरी मिल जाय वरना फ़ाक़ा, मस्ती और कुछ नहीं। मैं तो जीवन से इतना तंग आ चुका हूं कि कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करूं। इस समय मेरी उम्र ३५ के लगभग है। उम्र का सबसे अच्छा हिस्सा पत्रकारी में बिता दिया। मुझे तो इससे गन्दा धन्धा और कोई दिखाई नहीं पड़ता। हर व्यक्ति की चापलूसी करनी पड़ती है। विज्ञापन लेने जाओ तो हर कमीने व्यापारी की खुशामद करनी पड़ती है और फिर भी विज्ञापन नहीं मिलता। पत्रिका पढ़ने का तो यहाँ किसी को शौक नहीं है, केवल Sex बिकता है नग्न Sex और कुछ नहीं। या फिर घटिया (Sensational journalism) कोई काम की बात कहो तो लोग मुँह फेर लेते हैं। कुछ दिन हुए मैं एक प्रमुख पत्रकार से मिलने गया। वह बेचारा भी अपने भाग्य को रो रहा था, कह रहा

था—'समझ में नहीं आता, क्या किया जाय। इस देश की हालत नहीं सुधरती। इस देश की कमज़ोरियों और इस सरकार की अयोग्यता पर से परदा उठाने का मैंने भरसक प्रयत्न किया और कोई यत्न नहीं उठा रखा लेकिन यहाँ कुछ नहीं होता। किसी और देश में ऐसे ओजस्वी लेख लिखता तो कभी की क्रान्ति आ गई होती, लेकिन यहाँ लोगों के कान पर जूँ तक नहीं रेंगती।"

"चाय पियो, ठण्डी हुई जा रही है।"

"पी लूँगा, कौन-सी ह्विस्की है कि पीने से आँखों में चमक आ जायगी। चाय ही तो है, इससे जिगर भी ख़राब होता है और दिमाग़ भी। मेरे एक-दो दोस्त वेश्याओं से मिलकर उनकी आमदनी के आँकड़े एकत्रित कर रहे हैं। और उस दिन उन्होंने बताया कि उनकी आमदनी पहले से एक तिहाई रह गई है और वह दिन दूर नहीं जब वेश्याएं हो झंडा लेकर विरोध प्रकट करने निकल खड़ी होंगी। आखिर एक सीधी-सादी बात है कि अगर इनसान को शराब न मिले तो वह वेश्या के पास क्यों जाय। शराब पीने से उसकी वासना उत्तेजित होती है। सरकार ने शराब बन्द की है तो इन वेश्याओं के लिए भी तो कुछ करे। यह एकतरफ़ा डिगरी कैसे कर दी। शराब-बन्दी से वेश्याओं का क्या भला होगा। कुछ दिन हुए मैं एक फैक्टरी के मालिक से मिलने गया। बेचारे की बुरी दशा थी। सरकार ने तीन साल का इन्कमटैक्स इकट्ठा माँग लिया, यानी पिछले तीन साल का अगर वह इन्कमटैक्स नहीं अदा करता तो जेल जाना पड़ता। इसका परिणाम यह हुआ कि उसकी दशा उसी दिन ख़राब हो गई और अगले दिन सुबह को वह अपने बिस्तर पर मरा पाया गया।—सो दोस्त अब तो मैं यही सोचता हूँ कि फ़िल्म का काम शुरू कर दूँ।"

"पास से एक व्यक्ति उठकर उनके पास आया।

"आप फिल्म का धन्धा करना चाहते हैं?"

"विचार तो यही है।"

"रुपये कहाँ से लायंगे?"

"फिनान्सर से।"

वह हँसा—"श्रीमान् जी, मेरा नाम काशीराम है। फिल्म में मैंने २५ साल गँवाये हैं, लेकिन इस धन्धे से बुरा धन्धा कोई नहीं। यह सट्टा है, जुआ है।"

"क्या मतलब आपका ?"

"मेरा मतलब यह है कि आपका नाम ?"

"मेरा नाम कालीचरण है और आपका राज।"

"एक चाय मंगवाइये। बे-तकल्लुफ़ी माफ़ कीजिएगा। साहब मेरे एक दोस्त थे और उनका एक लड़का था। बाप ने बेटे को पढ़ा दिया। लड़का योग्य था, बुद्धिमान था। उसने नौकरी के लिए अर्जी दी। उसे इण्टरव्यू के लिए बुलाया गया—यह बटवारे के बाद की कहानी है—इण्टरव्यू में जाने से पहले वह चाय पीने के लिए कैण्टीन में चला गया। वहाँ और लड़के भी बैठे हुए थे जो कि इण्टरव्यू ही के लिए आये हुए थे। उनमें इस प्रकार बातें होने लगीं।

पहला लड़का—"आप क्यों आए हैं ?"

दूसरा लड़का—"इण्टरव्यू के लिए।"

पहला लड़का—"और आप ?"

तीसरा लड़का—"मैं भी इण्टरव्यू के लिए आया हूँ।"

दूसरा लड़का—"और आप क्यों आए हैं ?"

पहला लड़का—"केवल इण्टरव्यू के लिए—मुझे नौकरी मिल गई है !"

दूसरा लड़का—"क्या मतलब ? इण्टरव्यू से पहले ही नौकरी मिल गई !"

पहला लड़का—"साहब मैं पन्द्रह दिन से दफ़्तर में काम कर रहा हूँ। इण्टरव्यू के बाद तो मुझे यह नौकरी पूर्ण रूप से मिल जायगी।"

चौथा लड़का—"लेकिन फिर उन्होंने हमें क्यों बुलाया है ?"

पहला लड़का—"मुझे क्या मालूम।"

"कहने का आशय यह कि कुछ इस प्रकार बातें हुईं। इण्टरव्यू हुआ, तीनों सफल हुए मगर नौकरी पहले को ही मिली, क्योंकि वह किसी मन्त्री का सम्बन्धी था। तीनों लड़के प्रधान मन्त्री के पास गए, अर्ज़ी

दी और आज इस बात को छः महीने हो गए हैं, कोई उत्तर नहीं आया है।"

"यह तो रोज़ाना का किस्सा है," कलीचरण ने ऊबकर कहा, "आप फ़िल्म के बारे में कुछ बताइए।"

"फ़िल्म के बारे में क्या बताऊँ ? आप क्या चाहते हैं।"

"फ़ाइनैन्सर।"

"आपको फ़ाइनैन्सर नहीं मिल सकता।"

"क्यों ?"

"एक शर्त पर आपको फाइनैन्सर मिल सकता है।"

"वह कौन-सी !" कालीचरण की आँखों में चमक आ गई।

"अगर आप बम्बई में शराब पर से पाबन्दी हटवा दें। फ़िल्म के लिए फ़ाइनैन्सर प्राप्त करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है। यह मेरी तीस साला जिन्दगी का निचोड़ है जो आपको बता रहा हूँ। ध्यान से सुनियेगा। किसी सेठ को फँसाने के लिए दो चीजें चाहिए, पहली शराब, दूसरी एक खूबसूरत लड़की और हाँ, तीसरी एक स्कीम। स्कीम तो आप बना लेंगे लेकिन शेष दो चीजें कहाँ से लायंगे ? सेठ जब तक शराब नहीं पीता, औरत की ओर नहीं देखता और जब तक वह औरत की ओर नहीं देखता, चैक पर दस्तखत नहीं करता; और जब तक चैक पर दस्तख़त नहीं होते, रुपये नहीं मिलते। एक और बात है—अगर सेठ नहीं मिलता तो रुपये नहीं मिलते और सेठ, बिना रुपये के सेठ नहीं। क्यों साहब, सूरत देखिएगा मेरी। काफ़ी बद-सूरत हूं। सिर के बाल झड़ गए हैं। गाल अन्दर को पिचक गए हैं। इस फ़िल्मी दुनिया में क्या-क्या नहीं बना ! कभी एक्टर, कभी मसखरा, कभी गाने लिखे, कभी परदे पेंएट किए, डायरेक्टर बना और कहानियाँ भी भी लिखीं—हर काम किया। मैंने अंग्रेज़ का राज भी देखा लेकिन उसके ज़माने में इतनी बेईमानी न थी। मैं यह नहीं कहता कि अंग्रेज़ का राज फिर हो जाय। नहीं, बिलकुल नहीं। (चाय की चुस्की लेते हुए) यह तुम्हारा विचित्र सिस्टम है कि जो अधिक बातें करे तुम उसकी प्रशंसा

 करते हो। जो दूसरों को धोखा दे तुम उसे चालाक कहते हो जो। दूसरों

की ज़ायदाद पर क़ब्ज़ा कर ले तुम उसे ख़ानदानी कहते हो। जो दूसरों की जड़ काटे और दूसरों की चापलूसी करे तुम उसे दुनियादार कहते हो। जो जन-साधारण को घृणा की दृष्टि से देखे तुम उसे genious कहते हो। जो पराई स्त्रियों को बहकाये, शराब पिये और पिलाये और उनके साथ संभोग करे तुम उसे Don Juan कहते हो। इस सिस्टम में पुरुषार्थी, नेक, सच्चे और साधारण आदमी फल-फूल नहीं सकते। यह सिस्टम उन आदमियों के लिए है जो ब्लैक मार्केटिंग कर सकें, अपनी आत्मा बेच सकें, दूसरों का लहू पी सकें, जिनको जन-साधारण के साथ सहानुभूति न हो, जो भूख और बेकारी का इलाज नहीं करना चाहते। यह युग, यह पूँजीवाद का युग दलालों की एक विस्तृत मण्डी है। चारों ओर, हर सड़क पर, हर नुक्कड़ पर ये दलाल काले लबादे ओढ़े, इनसानों की दलाली करते फिरते हैं। जन-साधारण के खून पर, उनकी कमाई पर, ऊँची-ऊँची दुकाने बनाते हैं। तुम इसे राजनीति कहते हो, प्रजातन्त्र कहते हो, स्वतन्त्रता कहते हो! यह स्वतन्त्रता नहीं, सच्चा प्रजातन्त्र नहीं, केवल प्रजातन्त्र की दलाली है—अच्छा साहब, आज्ञा दीजिएगा—कभी-कभी यहीं मुलाक़ात हो जाया करेगी।"

यह कहकर वह दुबला-पतला काशीराम होटल से बाहर निकल गया।

इसके बाद राज ने बिल चुकाया और दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा। काशीराम के शब्द अभी तक उनके कानों में गूँज रहे थे—यह सच्चा प्रजातन्त्र नहीं, केवल नाम का प्रजातन्त्र और झूठी स्वतन्त्रता की दलाली है, इन्हीं शब्दों की गूँज लेते और सुनते हुए दोनों एक-दूसरे से विदा हुए।

: २८ :

फिर इतवार की शाम आई—वह शाम जिसकी बड़ी विह्वलता से प्रतीक्षा की जा रही थी। आज राज शीला से हर एक बात का फैसला करेगा। नाव या तो पार हो जायगी या डूब जायगी। जब वह चर्च गेट पर पहुँचा, जहाँ शीला ने मिलने का वचन दिया था, तो दूर पश्चिम में अस्त होते हुए सूरज की लालिमा फैली हुई थी। जहाँ तक दृष्टि

जाती थी, सिवाय समुद्र के कुछ दिखाई न देता था। फैला हुआ शान्त समुद्र और उसकी नर्म-गर्म लहरें; जो दीवार से टकराती थीं और पीछे हट जाती थीं। आकाश पर कहीं-कहीं बादल थे; जो रूई के बड़े-बड़े ढेरों के समान दिखाई पड़ते थे। हवा में हल्की-हल्की ठण्डक थी। वसन्त-ऋतु जा चुकी थी और पतझड़ धीरे-धीरे अपने पंख फैलाये आ रहा था। उसे यहाँ आये पाँच मिनट बीते होंगे, परन्तु शीला नहीं आई थी। शायद वह अपना वायदा भूल गई हो और उसे आज का Appointment याद न रहा हो। यह विचार आते ही वह उदास हो गया। कहीं बात यहीं-की-यहीं ठप्प न हो जाय और नाव मँझदार ही में फँसकर रह जाय। मन ने आश्वासन दिया—'कुछ देर और प्रतीक्षा करो, वह आयगी—वह अवश्य आयगी।' उसके पास से कुछ कारें फर्राटे भरती हुई गुजर गईं। कुछ लड़के लड़कियों को ताक रहे थे। इतने में एक कार उसके पास आकर रुकी। शीला ने सिर निकाला और हाथ हिलाया। कार का दरवाज़ा खुला और वह कार में बैठ गया।

"ड्राइवर, होटल मैरीन।"

और कार सड़क पर भागने लगी।

"मुझे आशा न थी कि आप आयंगी।"

"जब मैं वायदा करती हूँ तो अवश्य आती हूँ।"

राज ने शीला की ओर देखा। आज उसके बनाव-शृङ्गार में एक अजब सजधज थी। ब्लाउज़, साड़ी और चप्पलों का रंग मिलता था—हल्का नीला। बालों को अनोखे अन्दाज़ से सँवारा गया था और माथे पर बालों की एक लट मचल रही थी। आँखों में काजल की हल्की लकीर थी जिसने उसकी पुतलियों को और भी अधिक प्रखर कर दिया था। दो सुनहरी बुन्दे उसकी बेसनी रंग की त्वचा को चूम रहे थे। शीला के पास होने के कारण उसका मन उत्तेजित हो उठा। वह शीला को इस प्रकार देख रहा था जैसे वह किसी बड़े अजायबघर में खड़ा हुआ कौतूहल से हर वस्तु को देख रहा हो। वह शाम, जो उन्होंने एक साथ बिताई थी, उसकी महक और चुम्बनों की मिठास अब तक उसके

 मस्तिष्क में थी, होंठों में थी। और आज जब शीला उसके पास बैठी

थी तो उसे लग रहा था मानो उसने इस लड़की को कभी देखा ही नहीं, छुआ ही नहीं। राज के मन में शीला को अपनाने की इतनी प्रबल इच्छा उठ रही थी कि वह चाहता था कि शीला उसके पास से कभी न उठे, सदा के लिए उसकी हो जाय।

इतने में होटल आ गया। पहले शीला उतरी।

अब अँधेरा गहरा हो गया था और क्षितिज पर प्रकाश की अन्तिम किरण भी अन्धकार में डूब चुकी थी।

राज भी उतरा।

जब शीला होटल के मैनेजर के पास पहुँची तो मैनेजर ने उसे सलाम किया और कहा—"नं० १७"

शीला आगे बढ़ी। राज उसके पीछे हो लिया। शीला तेज़ी से पग उठाती हुई पहले फ्लोर पर चढ़ गई और नं० १७ के सामने रुक गई।

"आइए अन्दर।"

दरवाज़ा खुला। दोनों अन्दर चले गए।

कमरा सुसज्जित था। एक पलंग, एक ड्रेसिंग टेबिल, एक कपड़े रखने की अलमारी, कुछ कुर्सियाँ, एक मेज़ और मेज़ पर ऐश-ट्रे।

राज खिड़की के पास गया और परदे को एक तरफ किया। उसने मुड़कर देखा—शीला ड्रेसिंग-टेबिल के सामने खड़ी बाल सँवार रही थी। 'वह उससे क्या बात करे? वह उसे यहाँ क्यों लाई?'

शीला ने हल्के हाथ से बालों में कंघी की और फिर पलंग पर आकर बैठ गई और चप्पल उतारे। ओह कितने, सुन्दर पाँव! साड़ी का पल्ला पिंडली से ऊपर सरक गया था और गोल, सुडौल पिंडलियाँ राज की तरफ़ देख रही थीं। उस समय उसका जी किया कि वह उन पाँवों को ग़ौर से देखता रहे, अपने हाथ में लेकर स्पर्श करे और फिर उन गोरी-गोरी पिंडलियों पर हौले-हौले हाथ फेरे। उसकी छोटी-छोटी उँगलियों के स्पर्श से आनन्दित हो। अब शीला पलंग पर लेटी हुई थी और साड़ी छातियों पर से ढलक गई थी और गर्दन एक ओर को हो गई थी। राज बहुत देर तक देखता रहा—उसकी श्वेत गर्दन, उसके आगे चुस्त ब्लाउज़, जिस पर सुन्दर फूल निकले हुए थे, उसकी कोमल-

कोमल छातियां हल्के नीले रंग के ब्लाउज़ से झांक रही थीं। गले के नीचे ऊँची-ऊँची धारियों के बीच की गहराई कितनी सुन्दर, कितनी मोहक, कितनी उल्लासप्रद दिखाई पड़ रही थी। शीला वास्तव में सुन्दर थी। शीला का शरीर वास्तव में साँचे में ढला हुआ था। न वह मोटी थी, न पतली। चेहरे के कटाव तीखे-तीखे थे। यद्यपि आँखें छोटी थीं परन्तु कितनी चमकीली और विवेकपूर्ण। होंठ, छोटे-छोटे, कच्चे-कच्चे, नाक पैनी और गाल नर्म-नर्म--गुलाब की पंखुड़ियों की भाँति गुलाबी और कोमल। एक स्त्री इससे क्या अधिक सुन्दर हो सकती है! यौवन में लावण्य न हो तो वह यौवन कैसा! स्त्री में आकर्षण न हो तो वह स्त्री कैसी! शीला के शरीर और उसके सौन्दर्य में चुम्बक-जैसा आकर्षण था जिससे राज उन्मत्त हो उठा। वह सौन्दर्य के घेरे में गिरफ़्तार हो गया। वह एक दोषी की भाँति उसके सामने खड़ा था, जो जज के सामने अपना दोष स्वीकार कर रहा हो और कह रहा हो—'मुझे तुमसे प्रेम है, मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता।' शीला का प्रेम एक मधुर गीत बनकर उसकी आत्मा में गूँज रहा था। उसका जी चाह रहा था कि वह शीला के होंठ चूम ले, उसके अंग-अंग को मसोस-कर अपनी आत्मा की गहराइयों में रख ले। वह इतने ज़ोर, इतनी शिद्दत से शीला से प्रेम करे कि आकाश गीतों से गुञ्जायमान हो जाय, सितारे खिलखिलाकर हँस पड़ें, समुद्र शान्त हो जाय और उसकी आत्मा शीला की आत्मा में समा जाय।

शीला ने अपनी आँखें बन्द कर लीं।

वह फिर खिड़की के पास चला गया। हवा का एक झोंका आया और उसके गर्म-गर्म गालों को छूता हुआ निकल गया।

'वह आज उससे पूछ ले, आखिरी फैसला कर ले।' वह फिर मुड़ा—

"शीला!"

शीला ने अपनी बोझिल पलकें फिर उठाईं और उसकी ओर स्वप्नों से भरी निगाहों से देखा। शीला उस समय रूप और यौवन के बोझ से एक फलदार डाली की तरह झुक गई थी।

"शीला !"—उसने फिर शीला को आवाज़ दी और ऐसे कि शीला जैसे सात समुद्र पार किसी द्वीप में बैठी हो।

"जी !" शीला उठ बैठी।

"मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ।"

"कहो"—उसने अपनी छातियाँ ढक लीं।

"तुम यहाँ क्यों आईं ?"

"मैंने वायदा किया था।"

"घर क्यों नहीं बुलाया ?"

"मेरी माँ और मेरा भाई तुम्हारा वहाँ आना पसन्द नहीं करते। उन्हें उस दिन सब-कुछ मालूम हो गया था।"

"किसने बताया ?"

"ड्राइवर ने।"

"और आज की बात ?"

"उन्हें मालूम हो जायगी।"

"तो फिर !"

"तो फिर क्या।"

"मैं चाहता हूँ कि तुम मुझसे शादी कर लो।"

"मेरी माँ का क्या होगा ? मेरे भाई का क्या होगा ?"

"तुम्हारी माँ और तुम्हारे भाई का क्या होगा," राज बड़बड़ाया, "क्या वे चाहते हैं कि तुम्हारी शादी न हो ?"

"पूछने की आवश्यकता है ? क्या तुम मेरे साथ रहना पसन्द करोगे ?"

"क्यों नहीं।"

"मैं क्वाँरी नहीं हूँ।"

राज को एक क्षण के लिए बड़ा झटका-सा लगा लेकिन वह सँभल गया—

"कोई बात नहीं। जिस दिन से तुमने मुझसे प्रेम किया है उस दिन से तुम क्वाँरी हो, उस दिन से तुम्हारा शरीर क्वाँरा है।

"अजीब-सी बात है राज बाबू कि मैं अपनी माँ को छोड़ नहीं

सकता। मैं यह जानता हूँ कि मेरा भाई काफ़ी अरसे से बेकार है, वह कुछ नहीं कमाता, वह मेरी कमाई पर ज़िन्दा है और मेरी माँ को मेरी कार से मुहब्बत है। लेकिन मैं अपनी माँ से प्रेम करती हूँ, तुम मुझसे प्रेम करते हो और मैं तुमसे भी प्रेम करती हूँ। यह गोरख-धन्धा है। लेकिन न जाने ऐसा क्यों है कि मैं उन लोगों को नहीं छोड़ सकती, किसी हालत में भी नहीं छोड़ सकती।"

"आखिर कब तक ऐसे करती रहोगी?"

"कब तक करती रहूँगी, कुछ नहीं मालूम। शायद मेरा सारा जीवन इसी झमेले में बीत जाय।"

"मैंने तुम्हें अच्छा समझा था।"

"मैं बुरी कब थी? मैंने तुम्हारा क्या बुरा चाहा? मैं तुम्हें चाहती हूँ, तुम्हें पसन्द करती हूँ, लेकिन क्या करूँ?"

वह खिड़की की ओर देखने लगी और बिस्तर से उठकर खिड़की के सामने जा खड़ी हुई। सामने अँधेरा फैला हुआ था और समुद्र अपना विशाल वक्ष फैलाए कराह रहा था। दूर एक रोशनी का मीनार था जो काफ़ी मद्धम दिखाई देता था।

"रोशनी बहुत दूर है।"

"पास आ सकती है अगर तुम चाहो। क्या तुम्हें मुझसे प्रेम नहीं हैं? शीला तुम मेरी बातों का साफ-साफ जवाब दो। मैं गोरख-धन्धा पसन्द नहीं करता।"

"मुझे तुमसे प्रेम है, लेकिन तुम देर से आए। अब तो मेरे पास एक कार है, ड्राइवर है, अच्छे खाने खाती हूँ, अच्छे कपड़े पहनती हूँ, माँ पर मेरा रौब है, भाई को गालियाँ दे सकती हूँ, प्रेमियों को बुद्धू बना सकती हूँ, शादी का वायदा करके हज़ारों रुपये खा सकती हूँ, उनसे तनिक-सी बात पर क्रोधित हो उठती हूँ, फिर वे मनाते हैं, मैं हँस देती हूँ और फिर चैक मिल जाता है। लोग मेरे रूप की प्रशंसा करते हैं, और मैं खुश होती हूँ। वे मेरे पीछे भागते हैं और मैं उन्हें दुत्कारती हूँ। वे मेरे पाँव चूमते हैं, मैं उनको आँखें दिखाती हूँ। यह केवल किस
 लिए?—रुपये के लिए। अब जब तुम मेरे जीवन में आए हो तो ये चीज़ें

मेरे लिए इतनी आवश्यक और महत्त्वपूर्ण हो गई हैं कि मैं इन्हें छोड़ नहीं सकती। क्या तुम कार रख सकते हो?"

"नहीं।"

"एक बंगला?"

"बिलकुल नहीं।"

"अच्छे-अच्छे खाने?"

"कभी-कभी।"

"सिनेमा?"

"महीने में एक बार।"

"मेरी माँ और मेरे भाई का खर्च उठा सकते हो?"

"एक रुपया नहीं दे सकता। सिर्फ़ तुम्हें सँभाल सकता हूँ।"

"मेरी माँ मेरे लिए एक कार की तरह हो गई है। वह मुझे खुश रखती है, मेरे बनाव-शृङ्गार का ध्यान रखती है, बीमार पड़ जाऊँ तो डॉक्टर को बुलाती है, मेरे प्रेमियों को बुला भेजती है, दिन-रात जागती है, घण्टों मेरी ज़िन्दगी के लिए आँसू बहाती है लेकिन मुझे रोकती नहीं, झिड़कती नहीं। जब मैं स्वस्थ हो जाती हूँ तो खुश हो जाती है। तरह-तरह के फल लाती है, रस निकालकर पिलाती है, मुझे सैर कराने ले जाती है लेकिन मुझ पर कड़ी निगाह रखती है। किसी ग़ैर आदमी के साथ बिना उसकी मर्ज़ी के मैं कहीं नहीं जा सकती। जब से तुमने आना शुरू किया है, उसका 'मूड' खराब हो गया है। वह जानती है कि तुम बिना कौड़ी-पैसे वाले हो, रुपये खर्च नहीं कर सकते। रुपये के सम्बन्ध में उसकी निगाह बहुत पैनी है। वह सूँघकर ही बता सकती है कि अमुक आदमी के पास पैसा है या नहीं।"

"क्या तुमने कभी प्रेम नहीं किया?" राज ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"किया था, केवल एक बार। उस समय मेरी आयु बहुत कम थी—केवल चौदह वर्ष। अब तो काफ़ी आयु हो गई है। मुहल्ले के एक लड़के से प्रेम हो गया था—अगाध प्रेम। उसे देखकर रात को नींद न आती थी। वह मुझे देखकर बेचैन हो जाता था—क्या तुम कुछ खाओगे?"

"मुझे बिलकुल भूख नहीं हैं। पहले तुम अपनी कहानी पूरी कर लो।"

"हाँ—उसका नाम कमल था। वह बहुत ही सुन्दर था, भोला था, लेकिन अच्छे घराने से सम्बन्ध रखता था। मुझसे उसका प्रेम हो गया और जानते हो हमने क्या किया ?—हम घर से भाग निकले, कलकत्ता चले गए। वहाँ कुछ दिन रहे। वे बहुत अच्छे दिन थे। हम दोनों घर से रुपये लेकर भागे थे। एक होटल में रहे। कुछ दिनों बाद रुपये निबट गए। लेकिन जो दिन भी कटे, बहुत ही अच्छे कटे। वैसा—निष्कपट प्रेम, वह गर्मी और वह तड़प, आज तक मैं पुनः अनुभव न कर सकी। हाँ—जब रुपये निबट गए तो वह काम ढूँढने निकला। लेकिन काम न मिला। बहुत दौड़-धूप और प्रयत्न किये, परन्तु काम न मिलना था, न मिला। उसके घर ख़त लिखे, लेकिन घर से रुपये न आए। हम एक खोली में रहने लगे। वह दिन बहुत बुरे थे। कमल बीमार हो गया। मैंने उसकी सेवा की लेकिन वह बीमारी उसके खून और उसकी हड्डियों में रम गई। उसने माँ-बाप को याद किया लेकिन वे न आए। मैंने अपनी माँ को ख़त लिखा, वह आ गई। परन्तु कमल मर गया। उसका प्रेम मर गया। मेरा प्रेम मर गया। शीला का प्रथम और अन्तिम प्रेम मर गया। कमल जीवित रहता तो शीला यहाँ न होती। मैं अपनी माँ को छोड़ देती, भाई को छोड़ देती, कभी-कभी सोचती हूँ कि हमारे प्रेम का क्या परिणाम निकला। वह जीवित रहता तो मैं उसके साथ फ़ाके करती, उसके साथ मरती, लेकिन वह मुझसे पहले चल बसा। मैं कुछ समय तक रोई, और फिर मेरी माँ मुझे यहाँ ले आई, इस बड़े शहर में"—यह कहते-कहते शीला की आँखो से आँसू छलक पड़े और वह हल्की-सी चीख मारकर गिर पड़ी। देर तक वह बिस्तर पर पड़ी रोती रही। और राज उसे देखता रहा, देखता रहा और सोचता रहा।

"तुम अब इस जीवन को नहीं छोड़ सकतीं।"

"एक बार ग़लती कर चुकी हूँ, दुबारा ग़लती न करूँगी।" वह भर्राई हुई आवाज़ में बोली।

 "मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

"जब कमल मेरे साथ था, लेकिन रुपयों के बिना प्रेम पनपता नहीं।"

"रुपये के अलावा दुनिया में कुछ और चीज़ें भी होती हैं।"

"उदाहरणतः?"

"जीवन का कोई ध्येय, उद्देश्य।"

वह हँस पड़ी—"प्रेम से बढ़कर और क्या ध्येय हो सकता है जीवन का—हाँ क्या तुम्हें भूख नहीं लगी? क्या आज तुम कुछ नहीं खाओगे? कैसे आदमी हो कि स्वयं भूखे रहते हो और दूसरों को भूखा रखते हो।"

"मुझे आज सचमुच भूख नहीं है। तुम कुछ मँगवा लो" शीला ने घण्टी बजाई, बैरा आया, शीला ने आर्डर दिया।

राज कमरे में टहलता रहा।

खाना आया।

शीला ने खाना खाया और राज ने कुछ नहीं खाया। वह खिड़की पर खड़ा होकर बाहर का दृश्य देखता रहा। वह सोच रहा था, अब क्या करे? कहाँ जाय? शीला से कैसा व्यवहार करे? उसकी धारणा पूरी न हो सकेगी। शीला एक और पथ पर अग्रसर है और स्वयं उसकी जीवन-धारा की दिशा अब बिलकुल बदल गई थी। जब इन-सान भटक जाता है तो ठीक रास्ते पर आना कठिन होता है। राज की आर्थिक स्थिति इतनी ख़राब थी कि वह शीला की माँ और उसके भाई का बोझ न उठा सकता था और शीला माँ और भाई को छोड़ नहीं सकती थी। स्पष्ट है कि इस स्थिति में अपनी इस जिन्दगी को भी नहीं छोड़ सकती।

जब शीला खाना खा चुकी तो बैरा आकर प्लेटें ले गया।

राज ने शीला को बाहर चलने के लिए कहा। शीला मान गई। रास्ते में दोनों ने कोई बात न की। वह समुद्र के तट पर चले गए। इस समय तट पर बहुत कम लोग थे। केवल बिजली की बत्तियाँ जल रही थीं और समुद्र की लहरों का शोर सुनाई दे रहा था। वे काफी समय तक घूमते रहे। दोनों एक साथ थे। दोनों एक-दूसरे से बहुत दूर थे।

जब समय बहुत हो गया तो शीला ने राज से लौट चलने को कहा दोनों कमरे के पास पहुँचे।

उस समय प्रातःकाल के चार बज रहे थे।

शीला ने एक पाँव अन्दर रखा तो राज ने कहा—"मैं जाता हूँ शीला।"

शीला ने बड़ी याचना-भरी निगाहों से ताका लेकिन राज की आँखों में कोई भाव उत्पन्न न हुआ। उनमें पराजय, पूर्ण पराजय का भाव भरा पड़ा था जिसने उसे निढाल कर दिया।

"कहाँ जाओगे ?"

"घर।"

शील ने फिर उसकी ओर इच्छायुक्त दृष्टि से देखा लेकिन राज मुड़ गया। शीला उसकी ओर देखती रही, यहाँ तक कि राज सीढ़ियाँ उतर गया। उसने मुड़कर भी न देखा। उसके दिल में एक भयंकर तूफ़ान उठ रहा था। दिमाग़ में बिजलियाँ कौंध रही थीं। वह अब क्या करे ? कहाँ जाय ? शीला ने भी जवाब दे दिया। उसके प्रेम का अन्तिम फैसला सुना दिया गया। यह प्रेम न था, केवल वासना का चटखारा था। शीला संसार से तंग आकर इधर आई थी, उसके जीवन ने यह रूप धारण किया था और अब वह इस रास्ते से हटने वाली न थी। तेज़-तेज़ पग धरता, वह सड़क पार कर गया। वह अब काफ़ी तेज़ी से आगे बढ़ रहा था। अँधेरा एक तूफ़ान की तरह से उसके चारों ओर लपक रहा था—गहरा, घना, भयानक और अँधेरे के इस समुद्र में दो होंठ काँप रहे थे, दो आँखें उसको ताक रही थीं और गुलाबी कपोलों पर दो आँसू ओस की बूँदों की तरह काँप रहे थे।

: २६ :

वह काफी तेज़ी से इधर आया था। वह एक टीले पर बैठ गया। रात ख़ामोश और उदास थी और सामने फैला हुआ शहर समुद्र की गोद में बच्चे की तरह सो रहा था और लहरें उसे थपकियाँ दे-देकर सुला रही थीं। क्या सचमुच उसने बुरा किया कि वह असफल लौट

आया ? क्या वह शीला के प्रेम से लाभ न उठा सकता था ? क्या वह तीरथ की तरह अपनी हर एक चीज़ को प्रेम के अन्धे खड्ड में न धकेल सकता था ?

जहाँ वह बैठा हुआ था वहाँ से सारे शहर को देख सकता था—ऊँचे-ऊँचे मकान, बड़ी-बड़ी बिल्डिगें, दाईं ओर फैला हुआ समुद्र। अभी इस समय इस तट पर कोई नहीं। सड़कें निर्जन पड़ी हुई हैं। थोड़ी देर बाद प्रकाश फैलेगा और सारे शहर में बिजली की लहर-सी दौड़ जायगी। ये सड़कें इनसानों से भर जायंगी, कारें, बसें चलने लगेंगी, ट्रामों और गाड़ियों के जमघट में पैदल चलना कठिन हो जायगा। परन्तु राज के मन में एक घातक शून्य था। उसका जी चाह रहा था कि उसी टीले से नीचे छलाँग लगाए, नीचे और नीचे चला जाय। वह यहाँ से कूदकर अपने-आपको ख़त्म कर सकता था। उसकी आँखों के सामने तीरथ आया और अपनी दुकान बढ़ाकर चला गया। हमीदा आई और अपने अन्तःकरण को कुचलकर एक ओर हट गई। शीला आई और घटना-चक्र का शिकार होकर रह गई लेकिन जुम्मन ?—वह अपने मालिक पर विश्वास करके जीवित रहा लेकिन बाद में उसकी दशा भी बिगड़ गई। महबूब ?

जब इज्जत न रहे तो इनसान हैवान बन जाता है, जब काम न मिले तो इनसान का पतन हो जाता है, उसे आचार का ज्ञान नहीं रहता। इस निराशाजनक परिस्थिति में केवल रमेश रोशनी की मीनार की तरह जगमगा रहा था। उसके जीवन का कुछ लक्ष्य था। उसके जीवन के कुछ नये मूल्य थे। उसकी बातों में आकर्षण था, गहराई थी, शक्ति थी, आगे बढ़ने और लड़ने का संकल्प था। और राज इस समय अँधेरे में डूबा हुआ था। प्रेम की पहली चोट ने उसको पराजित और हताश कर दिया था और वह चाहता था कि इस जगह से गिरकर जीवन का अन्त कर दे। विपदाओं का यह अनन्त सिल-सिला सदा के लिए खत्म हो जाय। लेकिन रमेश के शब्द, उसका अटल निश्चय उसको याद आ रहा था। उसे उसकी बातें याद आ रही थीं कि दुनिया में बहुत-कुछ किया जा सकता है, केवल प्रेम करना

ही बड़ी चीज़ नहीं। बस रुपये कमाने से जीवन नहीं बनता या जीवन में रुपया ही सब-कुछ नहीं है। जीवित रहने के लिए चालू मूल्य (values) ही नहीं, बल्कि कुछ नये मूल्य भी हैं। नये युग को लाने और नई व्यवस्था की स्थापना के लिए आगे बढ़ना पड़ेगा, संघर्ष करना होगा। राज के सामने एक रास्ता था—शीला का प्रेम। लेकिन इस प्रेम का क्या होगा? कब तक चलेगा? कब तक निभेगी? कब तक वह इस निर्लज्जता को सहता रहेगा और शीला के प्रेम का अहसान अपने कन्धों पर उठाये फिरेगा? राज को यह रास्ता पसन्द न था। मगर पसन्द होता तो वह रात-भर वहीं रहता, शीला के शरीर की गर्मी में डूबता। उसके बाहु-पाश में बँधा आनन्द-विभोर होता रहता और उसके सुनहले बालों के जाल में फँस जाता। लेकिन राज तीरथ बनना न चाहता था। तीरथ का अन्त उसके सामने था। शीला उसके जीवन की मशाल न बन सकती थी।

न जाने कितनी देर तक राज वहीं बैठा रहा। जब उसने इधर-उधर देखा तो अँधेरा कम होता जा रहा था। पेड़ों पर चिड़ियाँ चहचहा रही थीं और पूर्व दिशा में प्रकाश प्रस्फुटित हो रहा था। 'हाँ अब उसे नीचे जाना चाहिए, और नीचे, धरती की ओर।' सामने तट पर लोग आ रहे थे, सैर के लिए, काम करने के लिए। बसें चल पड़ी थीं। निश्चेष्टता के स्थान पर हरकत पैदा हो रही थी—शनैः-शनैः। 'उसे भी चाहिए कि वह इस चोटी से नीचे उतरे, मस्तिष्क में स्वस्थ और ऊँचे विचारों को जगह दे। वह उन लोगों में मिल जाय जो काम करते हैं, हाथों से काम करते हैं।'

उसने शहर की ओर देखा—मिलों की ऊँची गरदनें अन्य सब बिल्डिगों से ऊपर दिखाई दे रही थीं। धुँआ धीरे-धीरे उनके मुँह से निकल रहा था। 'हाँ उसे नीचे उतरना चाहिए और काम करना चाहिए और आगे बढ़ना चाहिए।' उसे रमेश के साथ मिलकर नव-जीवन का निर्माण करने में सहायक होना चाहिए। हाथ से काम करने वाले ये जन-साधारण यद्यपि गन्दे हैं, इनके कपड़े मैले हैं, ये गन्दी चालों में रहते हैं लेकिन ये उत्तम कोटि के इनसान हैं, क्योंकि ये मेहनत करते

हैं। इन्हीं से नव-जीवन की उत्पत्ति होगी, 'नई ज़मीन, नया आसमान बनेगा।'

और वह नीचे उतरने लगा—धीरे-धीरे। अब वह पराजित, निःशक्त और हताश न था।

दूर, पूर्व में सूरज की किरणें अँधेरे को भेदती हुई सारे भू-मण्डल पर फैल रही थीं और उनसे समुद्र का पानी अरुणिम हो गया था।